ISSN : 2436-5017

जापान से निकलने वाली हिंदी साहित्य की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका

हिंदी की गूँज

वर्ष-3, अंक -11

जनवरी-अप्रैल, 2023 (संयुक्त अंक)

जापान की पहली साहित्यिक पत्रिका

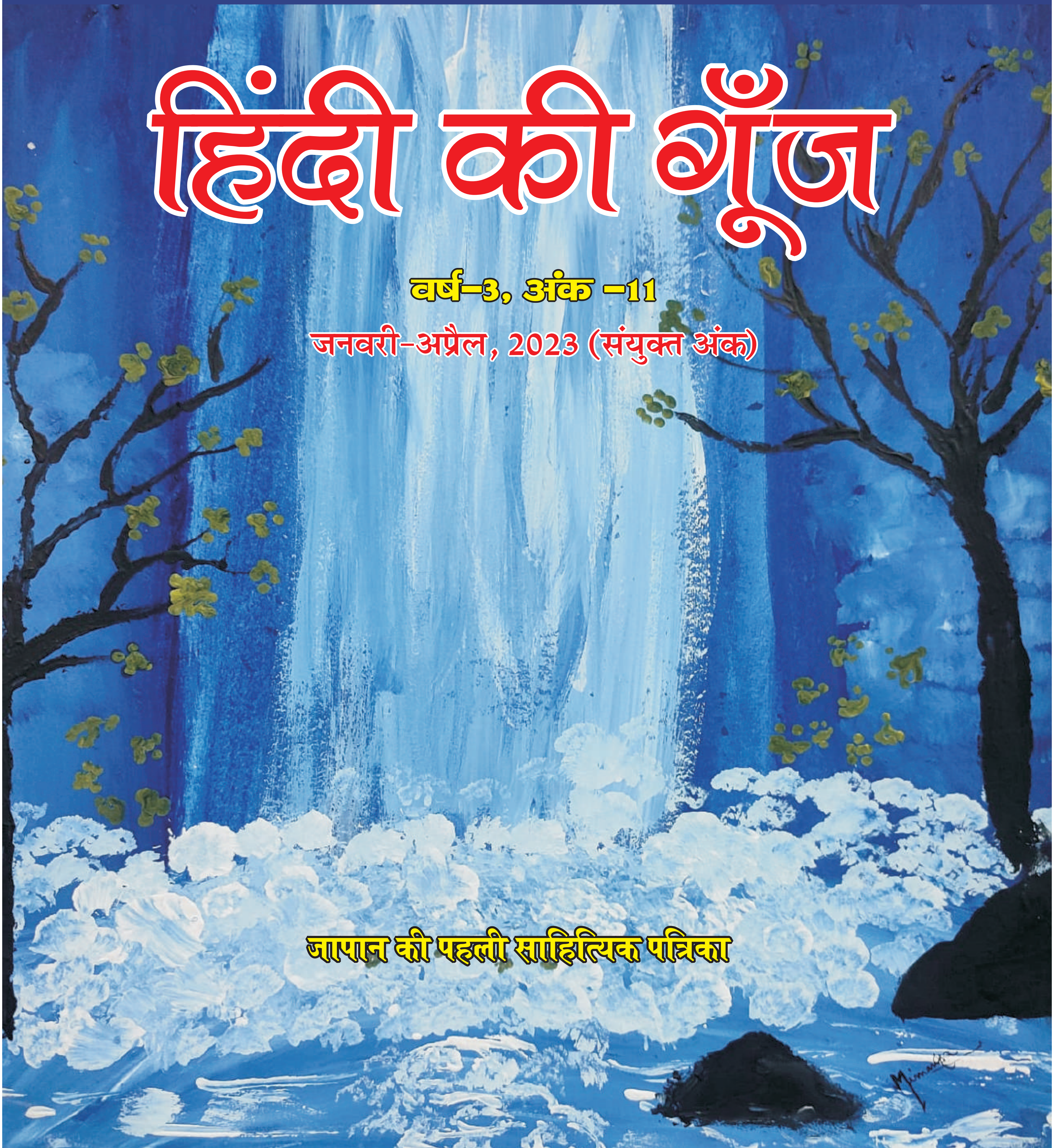

हिंदी की गूंज पत्रिका

日本 टोक्यो जापान

インド

संरक्षक एवं मुख्य संपादक
रमा शर्मा, जापान

संपादक मंडल

संरक्षक
रमा शर्मा, जापान
इंद्रजीत शर्मा (न्यूयार्क)

प्रधान संपादक
रमा शर्मा, जापान

संपादक
विनोद पाण्डेय

सह संपादक
रामनिवास मानव
विनय भारद्वाज (बोध गया विश्वविद्यालय)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ. हरीश नवल (सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार)

विदेशी प्रतिनिधि
शामलाल पुरी (लंदन)
श्वेता सिंह उमा (मॉस्को)
मोनी बिजय (नेपाल)
शशि महाजन (नाइजीरिया)
सुरेश पांडेय (स्वीडन)
कादंबरी आदेश (फ़्लोरिडा)
इंदू नंदल (जर्मनी)
श्वेता सिन्हा (आयोवा)

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ. विदुषी शर्मा (डबल वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर) दिल्ली
पूनम माटिया (दिल्ली)
डॉ. कीर्ति वर्धन (मुज़फ़्फ़रनगर)
विजया पंत तुली (उत्तराखंड)
कीर्ति श्रीवास्तव (भोपाल)
मनीषा जोशी (नोएडा)
डॉ. रामनिवास मानव
प्रशांत अवस्थी प्रखर (कानपुर)

स्वास्थ्य प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला (अमेरिका)

विशेष सहयोगी
राकेश छोकर
डॉ. सुनीता कुमारी चौहान

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा (माहू)

ज्योतिषाचार्य
डॉ. विनय भारद्वाज (बोध गया विश्वविद्यालय)

तकनीकी सहयोग
विवेक चौहान, उत्तराखंड

संपादकीय कार्यालय
टोक्यो जापान
व्हटसअप नंबर-
जापान
00818061658299
भारत
9289641577
ईमेल- hindikeegoonj@gmail.com

ट्विटर (Twitter)
@hindikigoonj

Instagram @hindikeegonj
YouTube Channel यूट्यूब चैनल
Hindi ki Goon, Japan

Facebook Page
हिंदी की गूंज, टोक्यो जापान

पत्रिका की सदस्यता लेने एवं खरीदने या प्रकाशन हेतु रचना भेजने के लिए संपर्क करें - 9289641577

मुद्रक - विधा प्रकाशन,
3502/2 नारंग कॉलोनी, त्री नगर, दिल्ली-110035
Email : Vidhaprakashan@gmail.com
मो. 7500042420, 9760411975

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक!

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका ISBN (जापान) नंबर के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।

अनुक्रम

- संपादकीय - रमा शर्मा / 6
-
- बाजारू औरते - तृप्ति मिश्रा / 6
- प्रेम में है वह शक्ति अपार - अरुण भगत / 6
- नन्हें कदम, लघुकथा - मंजु राय शमा / 7
- उठ खड़ी हो, मन की अलमारी - डॉ शोभा रावत / 7
- अनुत्तरित प्रश्न - मीना पाठक / 8
- ग़ज़ल - मनीषा जोशी मनी / 10
- यह जीवन इंद्रधनुष सा - ज्ञानवती सक्सैना ज्ञान / 11
- कविता - ज्योति जुल्का / 11
- प्यारी सी बिटिया - संजय वर्मा 'दृष्टि' / 12
- योग्यता पर भरोसा - हेमलता शर्मा भोली बेन / 12
- सीता को आगे आना होगा - मनीष शुक्ल / 13
- कविता - गीतांजली कश्यप / 13
- अतुल्य भारत - डॉ. श्वेता सिन्हा / 14
- कविता - प्रियंवदा / 15
- कविता - मृदुला प्रधान / 15
- बंद क्यूं कपाट है - गौरी कुलश्रेष्ठ / 15
- हाइकु - डॉ. क्षमा सिसोदिया / 16
- मृगतृष्णा - मोहन इंतजार / 17
- एक तरफा की आदत है - मोहन इंतजार / 17
- कविता - कामना मिश्रा / 17
- रिश्ता , संवाद - राकेश छोकर / 18
- संकल्पों से है यह सृष्टि - मीनाक्षी भसीन / 18
- सांझ का सवेरा - संगीता सिंह / 19
- धुंधला है नेपथ्य - डॉ. रामनिवास मानव / 20
- दूरियां - डॉ. परमजीत ओबराय / 21
- कविता - देवेन्द्र कुमार सोनी / 21
- कविता - विनीता रानी विन्नी / 21
- कृतज्ञ और भावुक मन - विजय कुमार तिवारी / 11
- जागी जागी राते, आगोश में आकर तुम्हारे - नमित सिंह / 23
- मन की चोट - मृदुल त्यागी / 23
- क्या महात्मा गांधी का सपना सच होगा - श्रीमती संतोष बंसल/24
- गांधारी का पुनर्जन्म - डॉ. अर्चना प्रकाश / 25
- मेरा प्यारा गांव - अरुण यादव / 28
- ऋषिका उर्वशी - डॉ. सरोज गुप्ता / 29
- जापान में कविता पाठ - रमा शर्मा / 30
- निराला की कविता में प्रगतिशील चेतना - डॉ. उर्मिला कुमारी/32
- ग़ज़ल - श्वेता सिंह उमा / 32
- विज्ञान कथा साहित्य में पर्यावरण चेतना-मोरे औदुंबर बबनराव/33
- बदनियत - अर्चना चौबे / 34
- समय बोध का कथन है राजकुमार कुम्भज -डॉ. अर्पणा जैन / 35
- रोहन का पाश्चाताप - निधि 'मानसिंह' / 36
- प्रगति का अक्षय मंत्र - राजेन्द्र शर्मा / 37
- टुकुर टुकुर - वंदना गुप्ता / 37
- हिन्दी का गुणगान - जयप्रकाश सूर्यवंशी, किरण / 37
- खरगोश - रश्मि सिन्हा / 38
- हमारी भाषाए हमारी पहचान है - राजकुमार जैन राजन / 39
- सभ्यता का आक्रमण - डॉ. धनेश द्विवेदी / 41
- सबसे बड़ा सत्य है और राजरानी - हरीश नवल / 43
- वाल्मीकि रामायण में ... - डॉ. पूनम पाण्डेय / 44
- साक्षात्कार - डॉ. अम्बे कुमार / 48
- रित्या गुप्ता / 49
- राम कथा विश्व धरोहर- डॉ. जयप्रकाश मिश्रा / 50
- शोध और परिकल्पना - संजू कुमारी / 52
- सन्नाटे और खौफ का मंजर - कुमार सुबोध / 57
- मां पिता की अभिलाषा - डॉ. सुनंदा जैन / 58
- हिंदी गीत एवं काव्य संग्रह - मंजू किशोर 'रश्मि' / 59
- नारी की दृष्टि में नारी - माधुरी भट्ट / 61
- आप कितने स्वस्थ है - सुनीता चांदला / 62
- धारावाहिक तलाश अस्तित्व की - अजय शर्मा / 63
- मां गंगा - उषा गुप्ता / 65
- हुआ प्रभु मौन है - मंजु श्रीवास्तव मन / 65
- नन्दनी - शान्ति प्रकाश, शान / 66
- मील का पत्थर - डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन / 67
- कविता - डॉ. शिप्रा मिश्रा / 68
- भटकी सी नदिया - पूनम गौतम / 68
- मैं किताब होना चाहती हूं - अनुराधा अछवान / 69
- हिंदी मेरा गौरव - डॉ अल्का यादव / 69
- वन गमन - शशि महाजन / 70
- इस धरती के सारे उत्सव - सुरेश पांडेय / 71
- हरी चूनर - इंदु नांदल जर्मनी / 71
- कविता - विनोद पांडेय / 72
- कविता - शिखा वार्ष्णेय / 72
- थाईलैंड में हिंदी - श्रीमती शिखा रस्तोगी / 73
- मुंह न मोड़े - रामा तक्षक / 75
- पहनी - रचना श्रीवास्तव / 77
- बदनियत - उषा तिवारी / 77
- अफवाह - रश्मि सिन्हा / 78
- बच्चों की पेंटिंग - 79

रमा शर्मा

मुख्य संपादक एवं संरक्षक

टोक्यो, जापान

Email :
hindikeegoonj@gmail.com
Ph. No. : 00818061658299

हिंदी की गूंज का आफिस अब ऑस्ट्रिया में भी। पता निम्नलिखित है

Laaerberg Straße 32/2/71
1100 vienna, Austria
फ़ोन नंबर + $43 650 6741006

हिंदी की गूंज का आफिस अब लंदन में भी। पता निम्नलिखित है

16 Upper Woburn Place,
London WC1H 0AF
Phone : +44 7432 220184

हिंदी की गूंज का आफिस अब मॉस्को, रशिया में भी। पता निम्नलिखित है

Address office:-
Proezd zavoda , Serp 1 Molot
10 BC. Integral, Moscow
Russia

हिंदी की गूंज का स्वीडन आफिस। पता निम्नलिखित है

Suresh Pandey
Bäckgenvägen 1 1tr
14341 Vårby Sweden
Mob 073 1013196

संपादकीय

कहते हैं कोई भी अच्छा काम करना हो तो उसमें रुकावटें बहुत आती है बस हमें हिम्मत नहीं हारनी होती है । अपनी लगन और धैर्य को अपनी ढाल बना कर आगे बढ़ना होता है ।हम सब को हिन्दी की गूंज का झंडा फहराना है और पूरे विश्व को इसके रंग में रंगना है तो थोड़ी सी रुकावटें तो आयेंगी ही और आ ही रही हैं लेकिन फिर भी उन सब का मुक़ाबला जी तोड़ मेहनत से हम सब कर रहे हैं ।मैं आप सभी से क्षमा चाहती हूँ की नव वर्ष था जो अंक आना था उसमें कुछ देरी हुई तो अप्रैल के अंत के साथ इसको संयुक्ता बनाकर आपके लिए ले कर आए हैं। आशा है आपको अंक पसंद आएगा और इसकी रचनाएँ भी पसंद आएँगी ।

इस बार हिंदी की गूंज ने बच्चों को आमंत्रित किया उनकी पेंटिंग के ज़रिए उनकी ड्राइंग के ज़रिए ताकि बच्चों में उत्साह वर्धन हो और वह हिन्दी के प्रति आकर्षण महसूस करें। इस बार हिन्दी की गूंज पत्रिका के कवर पेज एक सोलह वर्षीय बालिका का बना हुआ है। आशा है आप को उसकी पेंटिंग पसंद आयेगी, कवर पेज सबको पसंद आएगा और बैक पेज पर भी टोकियो यूनिवर्सिटी के हिरोयुकी सातो सान की पुस्तक तो नहीं कह सकते गीता जिसका उन्होंने जापानी में अनुवाद किया है वो बैक पृष्ठ पर है ।हम सब जापानी प्रोफ़ेसर साहब के बहुत आभारी हैं जिन्होंने हिन्दी गीता का जापानी में अनुवाद किया ताकि जापानी लोग गीता का मूल्य पहचाने, उन्हें पता चले कि गीता उपदेश क्या हैं, भारत के क्या संस्कार है। यही तो हिंदी की गूंज का उद्देश्य हैं ! आप सब से भी आशा है कि आप हिन्दी की गूंज को आगे बढ़ाने में इसका परचम फहराने में मददगार होंगे। अंक आने में देरी हुई लेकिन इस बार कितनी नई चीज़ें लेके आया है ये अंक। बच्चों को आमंत्रि किया है और बहुत सी ड्राइंग प्राप्त हुई पत्रिका के लिये। अब चुनाव तो एक का होना था लेकिन कुछ चुनिंदा ड्राइंग पत्रिका के आख़िरी पृष्ठ पर बच्चों के नाम के साथ हैं। कवर पृष्ठ मीमांसा सिंह ने बनाया है । मीमांसा सिंह अजमेर की रहने वाली है, उन्हें और उनके परिवार को हिंदी की गूंज पत्रिका की ओर से बहुत बहुत बधाई और भविष्य के लिये हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रोफ़ेसर हिरोयुकी सातो सान के हम सब भारतीय आभारी हैं जिन्होंने गीता को जापान तक पहुँचाने में एक सेतु का काम किया है। आपको पत्रिका में बहुत सी चीज़ें मिलेगी जो आपका मन मोह लेंगी। हिंदी की गूंज अब विश्व भर में सुनाई दे रही है। इसका विस्तार आप देख ही सकते हैं। जापान के अतिरिक्त अब हिंदी की गूंज के विश्व भर में आफिस हैं जहां हिंदी की गूंज के चाहने वाले संपर्क कर सकते हैं। सभी हिंदी प्रेमी आगे आयें और हिंदी की गूंज के सदस्य बनकर उसकी गूंजन को दिन दूनी तेज़ करें हमारा लक्ष्य हिंदी का सूर्य कभी अस्त नहीं होगा कामयाब हो रहा है। ये सब आपके प्रेम और सहयोग से ही संभव हो पा रहा है। आप को अपनी हिन्दी की गूंज पत्रिका पर गर्व होगा जो जापान से निकल रही है और भारत का नाम सुनहरे अक्षरों में लिख रही है।

आप सबका साथ और सहयोग चाहिए पत्रिका को आगे बढ़ाने के लिए ।

जय हिन्द

ड्राइंग प्रतियोगिता विजेता

सभी प्रतियोगी बच्चों को वार्षिक समारोह में हिंदी की गूंज पत्रिका की ओर से सम्मान पत्र दिया जायेगा

विजेता को 500 रूपये नाम की राशि और सम्मान पत्र हिंदी की गूंज पत्रिका के वार्षिक समारोह में दिया जायेगा

संरक्षक एवं मुख्य संपादक

रमा शर्मा, जापान

मो. 00818061658299, 9289641577

hindikeegoonj@gmail.com

बाज़ारू औरतें

बाज़ारू औरतें
पैदाइशी नहीं होती
हवस के नुमाइंदों की
ज़रूरतों को पूरा
करने के लिए
बनाई जाती हैं
बचपन से ही
जिस्मफरोशी की
भट्टी में पकाई जाती हैं
पता नही कब
कहीं भी
एक नन्ही कली
मसल दी जाती है
जिस्म के भूखे
भेड़ियों के
शैतानी इरादों में वो
कुचल दी जाती है
किसी जश्न में
रखी मिठाई की तरह
परोस दी जाती है
जिस्म के साथ-साथ
उसकी रूह तक
छील दी जाती है
उसके बाद.....
कोई ईमान कोई दीन
नहीं होता है
अब वो
बाज़ारु औरत है
और उसके साथ रोज़
एक नया मर्द होता है

सिर्फ दो जिस्म
बिना दिल के
बिना एहसासों के
भूख दोनों को लगी है
एक हवस में भूखा
एक पैसे की भूखी
आखिरकार
आदम और हव्वा का
वही सदियों पुराना
रिश्ता बनता है
बिना किसी रिश्ते का
तब जाकर
जिस्म की आग
ठंडी होती है
हव्वा की बेटी को
कुछ पैसे मिलते हैं
जिन्हे पाकर
बाजारू औरत के
ख़ालिस घरेलू
सपने खिलते हैं
अब वो भी
खाना बनाती है
किसी मर्द की दी हुई
नाजायज़ औलाद को
अपने हाथों से
खाना खिलाती है
बाज़ारू औरत के
अंदर छुपी माँ
बुला लेती है उसे
बड़े प्यार से

तृप्ति मिश्रा

थपकियाँ देकर
सुला देती है उसे
दुआ करती हुई कि
जल्दी से ये सोए
तो वो फिर से
बाज़ार में जाए
छोड़ सोती औलाद
हौले से उठकर
दबे कदमों से
घर से बाहर आकर
कल की रोज़ी कमाने
औलाद को भरपेट सुलाने
फिर से
भद्दे इशारों से
मुस्कुराती हुई
मर्दों को पास
बुलाती हुई
बन जाती है फिर वही
.........कमबख्त ....
बाज़ारु औरत।

प्रेम में है वह शक्ति अपार

कितनी सुंदर प्रेम की भाषा,
संचरित करती उमंग और आशा,
प्रेम से वन- उपवन महकें,
नाचे मोर, पशु-पक्षी चहकें,
जो रंगे प्रेम के रंग,
हर्ष उल्लास सदा उनके संग,
जिन्होंने निभाई प्रेम की रीत,
उन्हें ही मिला है मन का मीत,
प्रेम का रस है जो पीता,
सही अर्थों में वही है जीता,
प्रेम की तान को जो छेड़ा,
सीधा हो गया जीवन टेढ़ा,
प्रेम सुधा ही वैमनस्य का तोड़,
यही है हर खंडन का जोड़,
प्रेम डोर से प्रभु खिंचे चले आते,
प्रेम से साधक ईश्वर-तत्व को पाते,
प्रेम की बंसी जिन्होंने बजाई,
प्रेम की अलख जिन्होंने जगाई,
उन्होंने ही रोका हर संहार,
उन्होंने ही पाया जीवन सार,
प्रेम में ही है वह शक्ति अपार,
जिससे उद्धृत होगा संसार!

अरुण भगत

लघुकथा

बड़े ही नामी सेठ थे गिरधारी लाल जी, बड़े ही शान से घरवालों ने उनकी अंतिम यात्रा निकाली। बच्चों ने भी अपने पिता जी का हर कहना माना था और उनकी इच्छा थी जब उनकी अंतिम यात्रा निकले तब बड़ी ही शान से निकले ताकी लोंगों को मालूम हो की किसकी अंतिम यात्रा निकल रही है।

हुआ भी वैसा ही जो देखता अंतिम यात्रा में शामिल हो जाता है। गिरधारी लाल बड़े ही दयालू और अच्छे हृदय के व्यक्ति थे। सब का अधिकतर उन्होने भला किया था। सभी लोग श्मशान पहुँच गये। डोम ने आवाज लगाई - अगली बॉडी को चिता पर लिटाओ। यह सुनते ही बड़े बेटे ने डोम से सुबकते हुए कहा, यह हमारे पिता बहुत बड़े आदमी थे इनका नाम गिरधारी लाल है आप इन्हें बॉडी मत बुलायें।

नन्हें कदम (लघु कथा)

'आजा, मेरा राजा बेटा, आजा मेरा राजा बेटा, आजा, आजा, 'जल्दी से ममा के पास आ जाओ, आजा बेटू पापा के पास आजा,' आज इतवार का दिन है और महेश और मीना अपने बेटे के साथ खेलने में कितने व्यस्त हैं। अभि भी अपने माता - पिता की तरफ बारी - बारी से देखते हुए किलकारी मार - मार कर अपनी नन्हीं हथेलियों से ताली मार - मार कर गीरते - सम्हलते नन्हें नन्हें कदम बढ़ाते हुए तोतली जबान में माँ .. माँ तो कभी पा .. पा ..पा पुकारता हुआ उनकी तरफ जाने की कोशिश कर रहा था। अभि केवल 9 महीने का था। मीरा देवी भी अपने बहू - बेटे को अभि के साथ खेलता देख अपने अश्रू रोक नहीं पातीं।

अचानक महेश की नज़र अपनी माँ पर पड़ती है और बिना समय गँवाये वह अपनी माँ के पास जाकर उनके अश्रू पोछते हुए उनसे पूछता है। क्या हुआ माँ?आप को फिर से दर्द हो रहा है?इतने में मीना भी बैचेन हो उठती है, मीरा देवी ने अपने मुख पर मुस्कराहट बिखरते हुए अपने पुत्र महेश से कहा, अरे ये तो खुशी के आसूँ है, तुम दोनों को अभि के साथ खेलते देख मुझे तेरे बचपन में पहली बार उठाये नन्हें कदम और तोतली बोली की याद आ गई।

मंजू राय शर्मा
हिन्दी शिक्षिका, लेखिका
अम्बरनाथ, मुंबई, महाराष्ट्र

उठ खड़ी हो

उठ खड़ी हो, उठ खड़ी हो
खुद को खुद उठाना है,
कोई ना आगे आएगा
खुद को खुद बढ़ाना है।
बेबसी को छोड़कर
आंधियों से लड़ना है,
अंधेरी राह में स्वयं
उजाला करना है।
लाचारियत को फेंक
विश्वास को जगाना है,
कोई ना आगे आएगा
खुद को खुद बढ़ाना है।
तू भाग्य को ना रोया कर
अब तु रोना छोड़ दे,
कोई ना आंसू पूछेगा
खुद की राह मोड़ दे।
भ्रम की बातें अब गई
जुल्म की बातें अब गई ,
स्वयं बनके साहसी
आशाओं से नाता जोड़ दे ।
खुद के आसमा को
खुद विस्तार देना है,
मझधार की नाव को
खुद पतवार देना है।
उठ खड़ी हो उठ खड़ी हो
खुद को खुद उठाना है,
कोई ना आगे आएगा
खुद को खुद बढ़ाना है ।

डॉ. शोभा रावत
कोटद्वार, गढ़वाल
उत्तराखंड

मन की अलमारी

आज अपने मन की
अलमारी को
संजोने को जी चाहता है।

भावनाओं की सभी
फाइलें निकाल,
एक- एक को पलट
उँगलियों के पोरों से,
छूने को
जी चाहता है।

उछलना कूदना
अल्हड़ता की किलकारियां,
मन बासंती रंग लिए
रोमांच से सराबोर,फिर
जीने को जी चाहता है ।

कुछ भावनाओं को चमकाती
पड़ चुके दाग धब्बे जिन पर,
अलमारी को साफ़ कर
उन्हें परे करने को
जी चाहता है।

मन की अलमारी में हो
सिर्फ और सिर्फ
सुन्दर कोमल भावनाएं,
ऊर्जा से लबरेज
भावनाओं को
सहेजने को जी चाहता है।

आज अपने मन की
अलमारी को
संजोने को जी चाहता है।

मीना पाठक

अनुत्तरित प्रश्न

दिसम्बर महीने की कड़ाके की ठण्ड थी। उसी में भोर से ही मेरी छोटी ननद कांता के घर उसके बेटे की बरात विदा करने की सारी रश्में जोर-शोर से निभाई जा रही थीं। बारातियों के खाने-पीने का सारा सामन बस में रखा जा रहा था। चढ़ावे का सामन दुल्हे की गाड़ी में पहले ही रख दिया गया था। सभी अपनी-अपनी तैयारी में थे। आँगन की रश्मों के बाद कुआँ और मंदिर पूज कर बरात विदा हो गयी। घर के सभी पुरुष सदस्य अपने-अपने वाहनों से रवाना हो गए थे। निलेश भी गाड़ी ले कर निकल गए। दूसरे शहर लड़की वालों के द्वार पर समय से बारात पहुँच सके इस लिए यहाँ से सुबह ही प्रस्थान करना पड़ा। बारात विदा कर सभी महिलाएँ घर में आ कर बैठी ही थीं कि चाय बन कर आ गयी। नमकीन, मठरी और बूँदी डिस्पोजल प्लेटों में लगा कर सबको दिया जाने लगा। मेरे सामने भी चाय नाश्ता आ गया। उसके बाद गुट में बैठ कर सारी स्त्रियाँ हँसी-ठिठोली करने लगीं। इसी घर में पुरुषों के होते जिनके कण्ठ से आवाज नहीं फूटती थी। जो आँचल से मुँह दबा कर हँसती थीं। आज वे मस्ती में झूम रही थीं। ठहाके लगा रही थीं। मानो पुरुष विहीन घर में सभी की सभी आज आजादी का उत्सव मना रही हों। गारी गीत गा-गा कर एक दूसरे की देह में इधर-उधर हाथ लगाते हुए छेड़ रही थीं और अपनी ही कारस्तानियों पर हँस-हँस लोट-पोट हो रही थीं। उनकी बदमाशियाँ देख मैं सोच रही थी कि आज के समय में भी पुरुषों की उपस्थिति में ये स्त्रियाँ अपनी कितनी सारी संवेदनाएँ दबा छिपा ले जाती हैं!

खैर...! वे उसी में खुश थीं। हँसी-मज़ाक और नाच-गाने में समय का पता ही नहीं चला। पर जैसे ही मेरी दृष्टी दीवार घड़ी पर गयी, मैं सोफे से उठ कर कांता को तलाशते हुए उसके कमरे की ओर चल दी। वह अपनी आलमारी के पास खड़ी कुछ कर रही रही थी।

"क्या हुआ भाभी?" मुझे देख कर बोल पड़ी।

"अब मैं चलूँगी। बहुत देर हो गयी है।"

"आज नहीं भाभी...! कल बारात लौटने पर भैया के साथ चली जाना। घर में कोई है भी तो नहीं जो आपको छोड़ आये! और इस ठण्ड में आप अकेले कैसे जाएँगीं?" कहते हुए कांता मेरा हाथ पकड़ कर वहीं ले आयी, जहाँ से उठ कर मैं गयी थी।

"नहीं कांता...! मैं ऑटो से चली जाऊँगी। रात में घर खाली छोड़ना ठीक नहीं। कल सुबह फिर आ जाऊँगी।" मैंने उसे समझाया पर वह समझने को तैयार नहीं थी।

रात में घर सूना देख आए दिन चोरी की घटनाएँ घट रही थीं। इस लिए किसी तरह उसे समझा-बुझा कर मैं निकल पड़ी। रास्ते में ही निलेश का फोन आ गया। मैंने उन्हें बताया कि मैं घर के लिए निकल पड़ी हूँ।

"ओला कैब बुक कर लो।" मेरी बात सुनते ही निलेश बोल पड़े।

"मैं ऑटो से चली जाऊँगी। कैब में अकेले सफ़र करने से मुझे डर लगता है।'

"तो शेयरिंग ऑटो बुक कर लो। वह भी तुम्हें घर तक छोड़ देगा।"

शेयरिंग में न जाने किसका साथ मिले! मैं चली जाऊँगी निलेश! तुम परेशान मत हो।"

"तुम्हें अपने मन का ही करना है तो करो।" खिसिया कर निलेश ने फोन काट दिया था। बात करते-करते मैं बृजेन्द्र स्वरूप पार्क के सामने मेन रोड पर आ कर खड़ी हो गयी।

ठण्ड से हड्डियाँ तक काँप रही थी। कई दिनों से आकाश में सूर्यदेव गैरहाजिर थे। कोहरे का कहर ऐसा कि जब तक सुबह का कोहरा थोड़ा-सा छँटता दोपहर हो चुकी होती। थोड़ी देर बाद ही फिर से वह अपना पैर पसारने लगता और देखते ही देखते पूरा शहर कोहरे की चादर से ढँक जाता।

दोपहर के दो बज रहे थे। मुझे खड़े हुए दस-पन्द्रह मिनट बीत चुके थे पर अभी तक कोई ऑटो नहीं गुज़रा था। सामने पार्क में बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे उन पर ठण्ड का कोई असर ही न हो। जब कि ओस-कणों से नहाए वृक्षों के पत्ते थरथरा रहे थे। पक्षी भी अपने रोम-रेशों की चादर ताने शाखों पर दुबके बैठे थे।

गर्म कपड़ों के बाद भी ठण्डी हवाएँ मुझे भीतर तक जमाए दे रही थीं। वातावरण धुआँ-धुआँ-सा था। मैं मन ही मन सोच रही थी कि कांता को भी अपने बेटे को ब्याहने के लिए दिसम्बर का महीना ही मिला था! तभी मेरे सामने एक ई-रिक्शा आ कर रुक गया। मैं कुछ

बोलती तब तक रिक्शा चालक ने ही पूछ लिया, ''कहाँ जाना है बहन जी?''

''गोल चौराहा।'' मैंने कहा।

सुनते ही उसने सिर हिला कर बैठने का संकेत दे दिया। मेरे हिसाब से रिक्शा भरा था पर उसके हिसाब से अभी एक सवारी के लिए स्थान खाली था। मुझे देख कर बाकी की सवारियों ने थोड़ी-सी जगह बना दी और मैं उसमें किसी तरह अँड़स गयी। मरता क्या न करता! वहाँ खड़े-खड़े गलने से अच्छा था कि मैं उसमें जगह ले लूँ और जल्दी से जल्दी घर पहुँच जाऊँ। खड़े-खड़े पैर भी भर गए थे सो बैठ कर कुछ राहत मिली थी। रिक्शा सवारी बैठाता-उतारता चलता रहा। मोतीझील का पहला गेट आते-आते सभी सवारियाँ उतर गयीं और पिछली सीट पर सिकुड़ी-सिमटी मैं कुछ पसर कर बैठ गयी।

हमारे कानपुर में ऑटो, टैम्पो या ई-रिक्शा वाले जब तक क्षमता से अधिक सवारी न बैठा लें तब तक अपने स्थान से हिलते तक नहीं हैं और सवारियाँ भी जल्दी घर पहुँचने की जुगत में एक के ऊपर एक लदी-सटी, अपने कपड़ों और खुद की कचूमर निकालतीं उसमें बैठना स्वीकार कर लेती हैं। जैसे मैंने कर लिया था। शायद कुछ देर और प्रतीक्षा कर लेती तो कोई खाली ऑटो मिल सकता था पर नहीं; मुझे भी घर पहुँचने की जल्दी थी।

मैंने अभी चैन की साँस ली ही थी कि मोतीझील का दूसरा गेट आ गया। ऑटो वाला सवारी के लिए अभी रुका ही था कि मटमैले कपड़ों में एक दुबली-पतली, सामान्य सी दिखने वाली स्त्री झट से चढ़ कर मेरे सामने वाली सीट पर बैठ गयी और लम्बी-लम्बी साँसें भरने लगी। यों अचानक उसके आ बैठने से मैंने जल्दी से स्वयं को थोड़ा-सा सिकोड़ लिया और उत्सुकता वश उसे देखने लगी। उसके चेहरे पर उम्र से ज्यादा सलवटें दिख रही थीं। त्वचा रूखी-सूखी। गाल पिचके हुए और आँखें अंदर की ओर धँसी हुयी थीं। शायद आर्थिक तंगी और परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने की जद्दोजहद में उसने वर्षों से स्वयं की अवहेलना की थी या परिस्थितियों ने उसे इतना समय ही नहीं दिया था कि वह खुद का ख़याल भी रख सके। इतनी कड़ाके की सदर्ह्र में उसके पास इस ठण्ड से बचने के लिए जो कपड़े थे वह पर्याप्त नहीं थे। अभी रिक्शा गति पकड़ने के लिए रेंग ही रहा था कि तभी एक मोटा, थुलथुल अधेड़-सा व्यक्ति पजामा, कुरता, सदरी और गंदी-सी लोई गले में लपेटे, मुँह में मसाला भरे चलते रिक्शे में चढ़ कर कर धम्म से उसकी बगल में बैठ गया। मैं अपनी दाहिनी तरफ थोड़ा और खिसक गयी। रिक्शे में उसके मुँह के मसाले की दुर्गन्ध भर गयी थी। मैंने शॉल से अपनी नाक ढक ली।

बैठते ही उस मोटे थुलथुल व्यक्ति ने एक बार स्त्री की ओर देखा और उसकी जाँघ पर बड़े ही अश्लील ढंग से हाथ रख दिया। मैं चौंक पड़ी। स्त्री ने उसका हाथ झटक दिया था। उसने मेरी परवाह किये बिना स्त्री को भद्दी-सी गाली दी। सुन कर मेरे कान झनझना उठे। प्रतिक्रिया में स्त्री ने भी धीरे से कुछ बोला और बदले में उस व्यक्ति ने स्त्री की जाँघ पर उँगलियाँ गड़ा दीं। क्रोध से उसका चेहरा वीभत्स हो गया था। आँखों में वहशीपन उतर आया था। उसके शब्द मेरे कानों में पिघले सीसे की तरह पड़ रहे थे। अबतक मेरी धड़कनें बढ़ चुकी थीं। जिस तरह वह मुझे अनदेखा कर रहा था, उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं था। मेरी आँखों के सामने अखबार में छपी लड़कियों और महिलाओं के साथ फला कार, फला बस में घटी तमाम अपराधिक खबरें बारी-बारी से घूमने लगीं। मैं भीतर ही भीतर बुरी तरह सहम गयी थी। दिल की धड़कनें कनपटियों पर चोट कर रही थीं। धमनियों में बहता रक्त जैसे जमता जा रहा था। दिमाग काम करना बंद कर चुका था। मैंने कनखियों से फिर देखा, बहुत ही वहशियाना ढंग से वह उसकी जाँघ अपनी उँगलियों में कसे अश्लील शब्दों से उसका मानसिक बलात्कार कर रहा था। स्त्री की आँखों में उस व्यक्ति के लिए क्रोध की ज्वाला धधक रही थी पर न जाने कौन सी मजबूरी थी जो वह विरोध नहीं कर पा रही थी। न ही अब उसका हाथ अपनी देह से हटा रही थी। उसके चेहरे की लकीरों में एक पीड़ा की लकीर भी खिंच आयी थी और आँखों में क्रोध के साथ-साथ मेरे सामने अपमानित होने की लज्जा भी। स्त्री होठों को भींचे मौन उसे घूरे जा रही थी और वह व्यक्ति अपनी ही धुन में पूरी तरह उसकी तरफ़ घूम चुका था। उसके दूसरे हाथ ने स्त्री को अपने घेरे में ले लिया था और अब स्त्री भेड़िये के चुंगुल में फँसी बकरी-सी दिख रही थी। उस व्यक्ति को मेरी उपस्थिति का तनिक भी ख्याल नहीं था। जैसे रिक्शे में उन दोनों के सिवा कोई तीसरा था ही नहीं। एक-एक पल मेरे लिए भारी हो रहा था। अब तो वह स्त्री की गर्दन के पास मुँह सटा कर अजगर-सा सूँघने लगा था। देख कर मेरी तो जैसे साँस ही अटक गयी। जीवन में पहली बार किसी अपराधी को अपने इतने करीब से देख रही थी और अपराध होते भी। मुझे लग रहा था कि मैं चलते रिक्शे से कूद पड़ूँ पर तेज़ रफ़्तार से गुज़रते हुए वाहनों के कारण मैं ऐसा नहीं कर पा रही थी। तभी रिक्शे की गति कुछ धीमी हुई और हैलड हॉस्पिटल के गेट पर रिक्शा रुक गया। मैं बिना एक भी पल गँवाए झट से उतर गयी। चींईंईंईं.... की आवाज़ के साथ एक गाड़ी मेरे पास आ कर रुक गयी।

''मैडम! जरा दाएँ-बाएँ देख कर उतरा कीजिये। अभी कुछ हो जाता तो!" ड्राइवर के बगल में बैठा व्यक्ति बड़ी रुखाई से बोला। मैं

जितनी जल्दी हो सके उस रिक्शे से दूर हो जाना चाहती थी। इस लिए मैंने उस व्यक्ति की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। रिक्शे वाले को पैसे देते समय मैंने देखा, कि वह स्त्री पुरुष की बगल से उठ कर मेरी जगह पर बैठ गयी थी।

रिक्शा मेरी आँखों से ओझल हो गया था। दिल की धड़कनें अब भी बदस्तूर जारी थी। अब दूसरे ऑटो में बैठने की हिम्मत नहीं थी। मैंने पर्स से फोन निकाला। काँपती उँगलियों से कैब बुक किया और कुछ मिनटों में ही कैब मेरे सामने आ खड़ी हुयी। मैं जल्दी से उसमें बैठ गयी। ड्राइवर को ओटीपी दी और कैब चल पड़ी।

मेरी आँखों के सामने उस स्त्री का बेबस चेहरा घूम रहा था। मन में प्रश्नों के ज्वार उमड़ पड़े। 'कौन था वह दरिंदा?वह स्त्री इतना अपमान क्यूँ बर्दाश्त कर रही थी?यूँ सरेआम शारीरिक और मानसिक रूप से क्यूँ प्रताड़ित हो रही थी?वह परकटे पक्षी की तरह उसकी चंगुल में फड़फड़ा रही थी और वह गिद्ध-सा उसे नोचे जा रहा था?आखिर क्यूँ...?क्या मात्र स्थान बदल लेने से वह उस भेंड़िये से बच पाएगी?उससे छुटकारा पाने का प्रयास क्यूँ नहीं किया उसने?शोर क्यों नहीं मचाया?आखिर ऐसी कौन सी विवशता थी उसकी?'

इन सवालों के उत्तर तलाशते हुए उस स्त्री के लिए मेरा मन अत्यंत व्यथित था। तभी जैसे मेरी अंतरात्मा ने मुझसे ही प्रश्न कर दिया, 'तो तू क्या कर रही थी?वैसे तो बड़ा स्त्री विमर्श का झंडा उठाते फिरती है! तू भी तो शोर मचा सकती थी! तेरी आँखों के सामने ही तो सबकुछ घट रहा था। माना कि वह स्त्री विवश थी; पर तेरी क्या विवशता थी?क्यों नहीं बोल पाई कुछ?इतना क्यों भयभीत हो गयी?और यदि डर ही गयी थी तो पुलिस का नम्बर डायल कर देती। पर नहीं, परिस्थितिओं से डर कर भाग खड़ी हुई।'

''मैडम...!''

ड्राइवर की आवाज से मैं चौंक पड़ी। मैंने देखा, कैब अपने नियत स्थान पर खड़ी थी। दस कदम की दूरी पर मेरा घर दिख रहा था। मैंने उसे पेमेंट किया और घर की ओर बढ़ गयी।

'हाँ, ये सच है कि मैं बहुत डर गयी थी। पर पहली आवाज तो उस स्त्री की ओर से उठनी चाहिए थी न जो स्वयं अपमानित होते हुए भी उस पुरुष को वह सब कुछ करने की मौन सहमति दिए जा रही थी जो स्वयं उसकी भी आत्मा ग़वारा नहीं कर रही थी।' सोचते हुए मैंने अपने मन-मष्तिस्क पर कब्जा जमाए उन विषादी विचारों को जोर से झटक दिया। वे सब के सब वहीं सड़क पर मुँह के बल छितरा गए और मैं शांत मन से गेट खोल कर अन्दर आ गयी। तभी मुझे लगा कि वे सारे उठ कर मेरे पीछे घर के भीतर तक आ चुके हैं। और तभी मेरी आँखों के सामने उस स्त्री का चेहरा घूम गया। अब वे सारे अनुत्तरित प्रश्न फिर से मेरे भीतर कुलबुला उठे थे तथा मेरी अंतरात्मा मुझसे सवाल पर सवाल किए जा रही थी परंतु मेरे पास कोई ज़वाब नहीं था।

ग़ज़ल

कशिश ऐसी है उस सूरत में की सब भूल जाती हूं।
मैं रखकर मेज पर अपना ये सर, अब भूल जाती हूं।

मुझे हसरत तेरी तन्हा कभी होने नहीं देती,
सहर बनके वो आती है मैं ये शब भूल जाती हूं।

मिरे दिल की अदालत ने, किए तय दायरे मेरे,
सही इंसान के आगे मैं मज़हब भूल जाती हूं।

चुभे जो लफ्ज़ लोगों के नहीं दिल से लगाती मैं,
हां ऐसी बात का पर, नफ्ज़े मतलब भूल जाती हूं।

मिला अनमोल एक साथी तो ज़ेवर की ज़रूरत क्या,
हुए मायूस ये ज़ेवर की, जब- तब भूल जाती हूं।

सुनो ऐ बाज़ीगर मेरे; मेरे रहबर मेरे गौहर..
तुम्हारी नेक नीयत देख के, रब भूल जाती हूं।

अधूरी रह गई बातें वो नश्तर सी तेरी यादें,
क्यों रक्खू राबता उनसे उन्हें अब भूल जाती हूं।

सिमटती जा रही हूं मैं रिवाजों में सवालों में,
न जाने क्यों मैं जीने का सही ढब भूल जाती हूं।

निभाने आ गए जबसे कई किरदार ये मुझको,
मनी तब से अहम जो था, वो मनसब भूल जाती हूं।

मनीषा जोशी मनी
नोएडा

यह जीवन इंद्रधनुष सा है

यह जीवन इंद्रधनुष सा है
हर व्यक्ति दिव्य पुरुष सा है

यह जीवन रंगों का मेला है
उस पर हर रंग अनूठा है

यह जीवन इन्द्रधनुष सा है
हर व्यक्ति दिव्य पुरूष सा है

कहीं रिश्तो की धुंध है,
कहीं खट्टे मीठे पलों का संग है
कहीं छाई उमंग है,
कहीं पग-पग मीठी जंग है

कहीं उड़ी ऊँचीं पतंग है, कहीं दोस्ती दबंग है
कहीं रंगोली सतरंग है, कहीं छंद सा अनुबन्ध है

यह जीवन इंद्रधनुष सा है
हर व्यक्ति दिव्य पुरुष सा है

बिखरे कुदरत के रंग हैं, बहे फूलों की गन्ध है
कहीं पपीहे सी कूक है, हिए में उठे हूक है

सब हुए सर्दी से तंग हैं, बदला मौसम का रंग है
कहीं भोरकी तरुणाई है, कहीं संध्या की अरुणाई है

यह जीवन इंद्रधनुष सा है
हर व्यक्ति दिव्य पुरुष सा है

कहीं साहित्य के रंग हैं, बहें भावों के संग हैं
कहीं सोलह श्रृंगार हैं, कहीं राह बिछे अंगार हैं

कहीं कांटो पर नर्तन है, कहीं चंचल चितवन है
कहीं यादों के रंग हैं, कहीं बातों में व्यंग हैं

यह जीवन इंद्रधनुष सा है
हर व्यक्ति दिव्य पुरुष सा है

हम डूबे राग रंग हैं, बजे मृदुल मृदंग है
महकी चहुँ ओर बयार है, सदा उड़े रे गुलाल है

बना रहे धमाल यह,कोई रहे ना मलाल रे
अपनों का संग भरे, सपनों में रंग है

यह जीवन इंद्रधनुष सा है
हर व्यक्ति दिव्य पुरुष सा है
कहीं गुजिया, कहीं पपड़ी है,
यह दुनिया क्यों अकड़ी है

कहीं भुजिया कहीं रबड़ी है,
स्वाद की चुम्बक बड़ी तगड़ी है
खुशियों की हुड़दंग है,
देख रह गए सब दंग हैं

झूमे हरा चना देखो, गेहूं की बाली के संग है
यह जीवन इंद्रधनुष सा है

हर व्यक्ति दिव्य पुरुष सा है
यह जीवन रंगों का मेला है
उस पर हर रंग अवूठा है

ज्ञानवती सक्सैना 'ज्ञान'
जयपुर, राजस्थान
9414966976

कविता

शादी में मिले सामान में था,
दादी के हाथ का बुना
क्रोशिए का टीवी कवर,
साथ ही बुना था उन्होंने
आईने पर डालने का कपड़ा,
मां ने भी दिए थे अनगिनत उपहार,
एक चारपाई पर बिछाने को
दरी का जोड़ा भी,
स्टील की बड़ी सी गागर,
कितने ही कपड़े...
सब कुछ था दहेज में,
पर कहां खोल पाई थी
सब कुछ,
वो सपने, वो प्यार, वो दुलार।

अब जब घर की सफाई में,
निकल आती हैं ये सौगातें,
हौले से इनपर हाथ फेर कर,
ताज़ा कर लेती हूं यादें..
वो प्यार का स्पर्श..
वो सर पर रखा मां का हाथ,
जो अब नही है मेरे पास।

इन्ही कपड़ों में मुंह छुपा,
सहेज लेती हूं फिर से
अपना दहेज।

ज्योति जुल्का
दिल्ली

प्यारी सी बिटियाँ

मै गीत गुन-गुनाऊ
सुन प्यारी सी बिटियाँ
चिड़ियों सी चहकती रहे
हर आँगन की बिटियाँ
हर वक्त तू खुश रहे
मेरी प्यारी सी बिटियाँ।

मै तुझे आवाज लगाऊ
तुम दोड़ी आओं बिटियाँ
बाबुल का कहा मानती
हर आँगन की बिटियाँ
हर वक्त तू खुश रहे
मेरी प्यारी सी बिटियाँ।

मै सपने देखता जाऊ
मेहंदी, महावार सी बिटियाँ
रचे - दिखे इतनी सुंदर
हर आँगन की बिटियाँ
हर वक्त तू खुश रहे
मेरी प्यारी सी बिटियाँ।

मै एक बात समझाऊ
सुन प्यारी सी बिटियाँ
बनके रहना सदा निडर
हर आँगन की बिटियाँ
हर वक्त तू खुश रहे
मेरी प्यारी सी बिटियाँ।

मै धडकनों से कहता
इसमे बसती है बिटियाँ
थमना न वर्ना रो देगी
हर आँगन की बिटियाँ
हर वक्त तू खुश रहे
मेरी प्यारी सी बिटियाँ।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
मनावर जिला धार, म.प्र.
9893070756

योग्यता पर भरोसा

हेमलता शर्मा भोली बेन
इंदौर मध्यप्रदेश

रोज की तरह दूर से आती मधुर संगीत की कर्णप्रिय ध्वनि आज माधवी को बिल्कुल नहीं भा रही थी .. . पता नहीं लोग 24 घंटे क्यों संगीत सुनते रहते हैं?... उसके बेटे का चयन जो नहीं हुआ था- संगीत प्रतियोगिता में... योग्यता की कोई कद्र ही नहीं है... उसे चुन लिया जिसे संगीत की कोई समझ नहीं... बड़े बाप का बेटा जो ठहरा... एक कड़वाहट-सी उसके भीतर घुलकर उसके शरीर को कसैला बना रही थी... तभी महरी की आवाज ने उसे चौंका दिया-''बीबी जी हमार बचवा का एडमिसन बड़े सकूल में हो गया है ! वो मोहल्ला के सकूल वालों ने तो भरती च नी किया था...पर मेरे को उसकी योग्यता पे भरोसा था...।''

कहकर अपने काम में लग गई, लेकिन अनजाने ही माधवी को योग्यता पर भरोसा रखने का संदेश दे गई । अब माधवी का मन हल्का हो गया था । उसे अब वह संगीत की ध्वनि पुनः मधुर लगने लगी थी।

मददगार

अस्वस्थता में
पहचान होती
ईश्वर और इंसान की
कौन था मददगार
श्मशान के क्षणिक
वैराग्य ज्ञान की तरह
भूल जाता इंसान
मदद के अहसान को
फर्ज के धुएँ में
सांसे थमी
आँखे पथराई
रतजगा से आँखों में सूजन
अपनों की राह निहारती आँखे
झपक पड़ती हुई निढाल सी
आवश्यकता का भान
मन बेभान
भरोसे का वजन करने की चाह में
ईश्वर और इंसान
बन जाते तराजू के पलवे
गुहार का कांटा
झुकता है किस और
किसी को पता नहीं
किंतु एक विश्वास
थमी सांसों के लिए
जो मांग रहा दुआएँ
पीड़ित की सांसे चलने
अपनों की आबो हवा में
फिर से साथ जीने का
नए जीवन का अहसास
एक आस के साथ
खोजता मददगारों को
वो ईश्वर हो या इंसान।

सीता को आगे आना होगा...

त्रेता में रावण आया था,
धरकर धर्म वेश में,
सीता हर कर ले गया,
आस्थाओं के देश में.
उसके साधु रूप को,
हृदय से करके प्रणाम,
फंस गई सीता जाल में,
तुम तो थे प्रभु राम...
युग बीता द्वापर आया,
रावण, दुर्योधन कहलाया,
भरे दरबार चीरहरण कर,
अपनी जीत पर वह इतराया,
गौरव द्रोपदी का गया,
धूल-धुर्सित हुई तेरी काया...
भीष्म भी तुम,
द्रोण भी तुम ;
धृतराष्ट्र तुमने क्यों समाया,
नारी का अपमान हुआ,
यह कैसी तेरी माया...
अब कलयुग का दौर है,
दानव चारों ओर हैं
हर चेहरा है मुखोटे से ढका,
मानवता का अकाल पड़ा,
चौराहे पर खड़ी है आस्था,
विश्वास बेबस और कमजोर है....
राम की मूलत खंडित है,
रावण महिमामंडित है,
मर्यादा पुरुषोत्तम पर आरोप यहां,
गोविंद है शक के घेरे में,
कब सब्र का सागर छूटेगा,
मौन से पीछा छूटेगा,
चौसर में दाँव लगी द्रोपदी,
अस्तित्व का बंधन टूटेगा
त्रेता द्वापर के दानव से,
कलयुग में पीछा छूटेगा...
सीता को आगे आकर,
चेहरे से मुखौटा हटाना होगा
राम के भेष में रावण का,
चेहरा सबको दिखलाना होगा,
लक्ष्मण को सीमा बतानी होगी,
रेखाओं के बंधन से,
खुद को मुक्ति दिलानी होगी...

मनीष शुक्ल
लखनऊ, उत्तर प्रदेश
मो. 8853057686

मेरी अंतिम सांस तक अंतिम सहारे तुम ही हो
डूबती नैया के मेरे अंतिम किनारे तुम ही हो

मेरी ज़िंदगी मेरी कायनात मेरी दुआओं का आगाज़ हो
तुम मेरे आज में, तुम ही कल में, मेरी हर आस में तुम ही हो

तुम चाँद हो मेरी घनी अंधियारी रातो के
तुम नींद हो मेरी दिन भर थकी आंखों के

तुम चैन तुम आराम तुम अविराम मुझमे चलते हो
मेरे कण कण में हर धड़कन में मेरे शिव तुम ही हो

तुम आस तुम प्यास में तुम धरती और आकाश में
तुम झील में झरनों में हो पर्वत कैलाश में तुम ही हो

तुम चाहत मेरी कुर्बत मेरी, मेरे रोम रोम में तुम ही हो
तुम मंज़िल मेरी मेरी हर राह हो हर विश्वास में तुम ही हो

चाहूं तुम्हे पाऊँ तुम्हे यही एकमात्र लक्ष्य है
तेरे बिन ओ मेरे शिव ये गीत तो बस भस्म है।

गीतांजली कश्यप
इंदौर

अतुल्य भारत

डॉ. श्वेता सिन्हा
आयोवा, अमेरिका

आज और हर दिन हरपल बस यही कथा दुहराती हूं,
अपना भारत अतुल्य जहां में इसकी गाथा गाती हूं।
है गर्व मुझे अपनी माटी पर भाल तिलक लगाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

१) वैदिक काल में जब धरा पर संकट के बादल छाए थे,
तभी अधर्म के विनाश को प्रभु श्रीराम यहां पर आए थे।
प्रीत की रीत सिखाने को कान्हा ने था अवतार लिया,
कर्म ही प्रधान है दुनिया में गीता का यह सार दिया।

२) महावीर ने इस धरती पर सम्यक ज्ञान फैलाया था,
गौतम बुद्ध ने जीवन दर्शन दे अहिंसा का पाठ पढ़ाया था।
महलषयों के त्याग-तपस्या की कथा फिर दुहराती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

३) आर्यभट्ट ने शून्य खोज जीवन में गणित समझाया था,
वराहमिहिर में धरती से परे खगोलशास्त्र बतलाया था।
चाणक्य के उस अर्थशास्त्र का मंत्र पुनः दुहराती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

४) सोने की चिड़िया देश मेरा विश्व पताका फहराया था,
इस मधुमय देश की खातिर गौरी-गजनी ललचाया था।
विविधता में एकता की मिसाल है ये फिर से याद दिलाती हूं,
है गर्व मुझे अपनी माटी पर इसकी महिमा गाती हूं।

5) पद्मावती का जौहर लक्ष्मीबाई की अमर कहानी वो,
दुश्मनों को धूल चटाई खूब लड़ी मर्दानी जो।
वीरांगनाएं भारत कि मैं आज पुनः गिनवाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

६) अंग्रेजों ने जब धर्म-जात पर आपस में लड़वाया था,
तब सत्य अहिंसा का पुजारी बापू उनसे टकराया था।
इंकलाब कह फांसी चढ़ने वालों को शीश झुकाती हूं,
है गर्व मुझे अपनी माटी पर इसकी महिमा गाती हूं।

७) गंगा-यमुना और ब्रह्मपुत्र की धारा संपूर्णता का ज्ञान है,
हिंदी-उर्दू - तेलुगु-पंजाबी अनेकता में एकता प्रमाण है।
होली-दिवाली और ईद-बैसाखी क्रिसमस संग मनाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

८) खेतों में हरियाली इसके खलिहान अन्न से भरे हुए,
मेहनतकश किसानों की खेती से भारत के हैं भाग्य जगे,
निर्भर से आत्मनिर्भर बनने की कहानी आज़ सुनाती हूं,
है गर्व मुझे अपनी माटी पर इसकी महिमा गाती हूं।

९) लोकल वोकल बना है अब तो गुणवत्ता भी उच्च हुई,
स्वदेशी सामानों की अब विदेशों तक है पहुंच हुई।
सबकी भागीदारी इसमें जन-जन को समझाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

१०) सरहद पर डटे वीर जवान हमारा शौर्य और गुरूर हैं,
ठंड की ठिठुरन तपती धूप की जलन ये इनको मंजूर है।
करते जल-थल-नभ में हिफाजत दुश्मन को चेताती हूं।
है गर्व मुझे अपनी माटी पर इसकी महिमा गाती हूं।

११) अतुल्य अनुपम भारत अपना सैलानियों का रहता तांता है,
ताजमहल-बोधगया, अजंता-काशी सबको विश्व में पता है।
'स्टैचू ऑफ यूनिटी' से सबको भारत नया दिखाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

१२) शिक्षा-साहित्य और अर्थशास्त्र-विज्ञान में ना इसका सानी है,
आयुर्वेद और योग की महत्ता तो पूरे विश्व ने मानी है।
शत्रुओं के होश उड़ाए पोखरण प्रकरण दुहराती हूं,
है गर्व मुझे अपनी माटी पर इसकी महिमा गाती हूं।

१३) आईएनएस-तेजस, ब्रह्मोस-अग्नि, मिग-मिराज का खजाना है,
पृथ्वी, धनुष, त्रिशूल और आकाश से शत्रु का दिल दहलाना है।
भारत की सामरिक सैन्य शक्ति का शंखनाद गुंजाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।
13) खानपान और पहनावे में भी भारत अपना सिरमौर है,
लिट्टी-चोखा, इडली-डोसा, छोले-ढोकला बेजोड़ है।
समोसे और टिक्का मसाले की सुगंध आप तक पहुंचाती हूं,
है गर्व मुझे अपनी माटी पर इसकी महिमा गाती हूं।

१५) आईटी-चिकित्सा और खेल में भारत हो रहा अग्रणी है,
बदलते वैश्विक परिदृश्य में इसके तीव्र विकास की सनसनी है।
वैश्विक शक्ति बन उभर रहा भारत अपना गलवत होती जाती हूं,
भारत मेरे रोम-रोम में इसकी महिमा गाती हूं।

प्रियंवदा
हिमाचल प्रदेश

बोलने में बात सच अब तो नहीं नुकसान कोई
आशना महफिल लगे दिखता नहीं अनजान कोई
कह नहीं पाया मुझे अपना, बना है अजनबी वो
खो रहा अपनी खुदाया अब यहां पहचान कोई
सुन! अमीरों के महल हैं खूबसूरत सब जहां में
पर गरीबों का उजाड़े जा रहा श्मशान कोई
बोलने को और भी कुछ था मगर खामोश लब थे
समझ लो अब हाल रखता है यही अरमान कोई
देख उनको आज आंसू खिलखिलाने क्या लगे हैं
लोग बोले यार! तुझसा है नहीं धनवान कोई
शब्द गुम थे आरजू पर ले मिलन की था चला जो
दिन ढला अब रात है गिनता रहा दिनमान कोई

मिटे फासले बात तब हो रही है
अमन चैन की रात कब हो रही है
निगाहें जुबां क्या बनी हैं हमारी
मुलाकात दिल से अजब हो रही है
बना के रखा था हरा जख्म जिसने
वही देख! बरसात अब हो रही है
अकेले गुजारा सफर जिन्दगी का
कहानी यहां भी गजब हो रही है
चलो छोड़ दो आजमाना हमें सब
वफा देख! बदनाम अब हो रही है

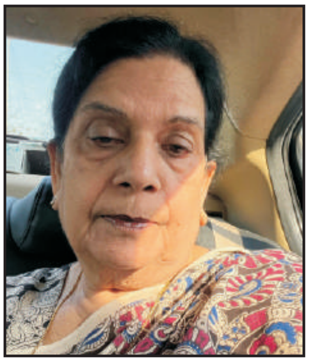

मृदुला प्रधान
साकेत, नई दिल्ली
मो. 9810908099

उस अमर-बेल की लता कहाँ
जिनकी कोमल कलियों को चुन
पावन-परिणय की बेला में
मैं हार तुम्हें पहनाता था ..

वह श्वेत धवल हिम-खण्ड कहाँ
जिसकी जगमग आभा में मैं
अपलक, अनिमेष, निःशंकित सा
सौ बार तुम्हें नहलाता था ..

वह मेघ-माल है गया कहाँ
जिसकी श्यामल तरुणिम छवि में
विहगों का सुन कल्लोल कभी
प्रतिपल मैं तुम्हें हँसाता था ..

है गया कहाँ मलयज बयार
जिसकी मीठी सकुचाहट पर
द्रुत हरिण गति पाँवों में भर
मैं पास तुम्हारे आता था ..

गौरी कुलश्रेष्ठ
अहमदाबाद, गुजरात

बंद क्यूं कपाट है

बंद क्यूं कपाट है
तू बैठी क्यूं उदास है
अनंत ये आकाश
उठ खड़ी हो,
उड़ फैला पंख, दिखा
चिरईया ही नहीं
तू निर्भयता का
बाज है।

सिसकियों को रोक ले
अश्रु अपने पोंछ लें
अग्नि बन, तू भस्म कर
तेरे अस्तित्व पर
जिसकी आंख है
बंद क्यूं कपाट है
तू बैठी क्यूं उदास है

लड़खड़ाना छोड़ दे
कदमों में
अपने वेग दे
मंजिल है तेरी
देख ले
तू सृष्टि की सृजनहार है
फिर पे खुद क्यूं सवाल है?
बंद क्यूं कपाट है
तू बैठी क्यूं उदास।।

हाइकू

अवन्तिका नगरी की पहचान

1.
वीणा वादिनी
अज्ञानता से तार
करें वंदन। ।

2.
महत्वपूर्ण
चिंतामन मंदिर
तीर्थ स्थल।

3.
कालों के काल
महाकाल हैं भस्मी
धरा उज्जैनी ।

4.
हरसिद्धि माँ
सिद्ध करती कार्य
विक्रमादित्य।

5.
शक्तिपीठ है
गढ़कालिका देवी
चमत्कारिणी।

6.
मंगलनाथ
हैं कर्क रेखांकित
स्वयं उत्पत्ति।

7.
महिमा खूब
पाताल भैरव की
मदिरा पान।

8.
तीर्थों का तीर्थ
कल-कल बहती
क्षिप्रा है नाम।

9.
पावन क्षिप्रा
का है रामघाट
मोक्षदायिनी।

10.
सिद्धवट हैं
श्राद्ध-कर्म स्थलीय
पिंडदान का।

11.
भक्ति में शक्ति
करती हूँ अर्चना
दिन-ओ-रात ।

12.
अवन्तिका का
महिमामंडित है
सिंहस्थ पर्व।

13.
सूर्य मंदिर
कालियादे पैलेस
क्षिप्रा तट।

14.
बावन कुंड
ऐतिहासिक स्थल
भव्य इतिहास।

15.
गोमती कुंड
सुंदर सरोवर
स्थापित कृष्ण।

16.
खगोलीय है
उज्जैन वेधशाला
ग्रह तालिका।

17.
वेधशाला में
खुली नेत्र से देखें
सूर्य की चाल।

18.
कृष्ण सीखे थे
सांदीपनि आश्रम
चौसठ विद्या।

19.
माँ प्रतिमाएं
द्विखम्भ समाहित
चौबीस खम्भा।

20.
नगरकोट
रानी, देवी हमार

21.
शनि मंदिर
नींव विक्रमादित्य
संवत शुरू।

22.
प्राचीन गुफा
राजा भर्तृहरि ने
किया तपस्या।

23.
ईश्वरी कृपा
उज्जैन नगरीय
है महालोक ।

23.
अटारी पर
उगती रही धूप
स्वर्णिम पल।

24.
नववर्ष का
आज आगमन है
आया बसंत।

25.
पीली सरसों
खग खेत कल्लोल
गुंजित दिशा।

26.
वक्त के साथ
चलना आवश्यक
प्राकृतिक है।

27.
वक्त के साथ
चलती रहती है
ईमानदारी।

28.
वक्त के साथ
रिश्तों की परख है
पतझड़ में।

29.
बरसात में
हर पत्ता हरा है
सिंदूरी कृपा।

30.
शब्दांजलि से
देते हैं अभिव्यक्ति
साहित्यकार।

31.
भाव झड़ते
काव्यांजलि करते
शब्दानुरागी।

32.
मिलता नहीं
है सच्चा एक मीत
प्रेम अधूरा।

33.
विलुप्त हुआ
अपनों में विश्वास
संदेहास्पद।

34.
तिरस्कृत है
मृत्यु भोज रिवाज
कुरिती-प्रथा।

35.
कर्मो का फल
पड़ता है झेलना
महाभारत।

36.
जीर्णोद्धार का
हुआ है अंत आज
हर्षोल्लास है।

37.
पीली सरसों
खग-खेत-कल्लोल
गुंजित दिशा।

डॉ. क्षमा सिसोदिया
उज्जैन-456010,
मो. 9425091767

38.
वक्त के साथ
चलना आवश्यक
है प्राकृतिक।

39.
ई वक्त के साथ
ठहरी रहती है
ईमानदारी।

40.
वक्त के साथ
रिश्तों की परख है
पतझड़ में।

41.
बरसात में
धरती हरी-भरी
सिंदूरी कृपा।

42.
तीर्थस्थल थी
पूर्व में अवन्तिका
पर्यटन है।

43.
सुबह शाम
बजते शंख घंटा
पहचान है।

44.
नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय है
कावड़ यात्रा।

45.
सुबहो-शाम
मंदिरों में होती है
मंगल-पूजा।

46.
मनोहारी है
सृजन सरोवर
नदी की धारा।

47.
कालिदास की
नगरी है प्रसिद्ध
समारोह से।

48.
हस्तशिल्पियों
का मेला लगता है
कार्तिक मास।

49.
कार्तिक मेला
बनता आकर्षक
उज्जैनी का

50.
मध्य-प्रदेश
का वैभव नगरी
अवन्तिका है।

51.
कालों के काल
महाकाल देते हैं
जीवनदान।

मृगतृष्णा......

एक मृगतृष्णा
एक मिराज है
प्यार

रेगिस्तान की जलती रेत पर
और आसमान से अंगारे बरसाते
सूरज कि छाँव में
मीलों चलना
इस उम्मीद पर
कि कहीं दूर पानी है
और आख़िर
एक निराशा सिर्फ निराशा

एक मृगतृष्णा
एक मिराज है
प्यार

वो राही फिर से देखता है
दूर कहीं एक पानी की झलक
एक आशा... शायद इस बार
फिर शुरू होती है वही दोड़...
प्यास... प्यार की प्यास

शायद एक दिन मौसम बदलेगा
एक नदी बादल बन कर आयेगी
और कुछ कतरे बरसायेगी

और फिर मुझे तो
शबनम का एक कतरा भी
दरिया लगता है....

एक तरफ़ा की आदत है....

जुबां पे ताले लग जाते हैं
बोलूँ तो इल्ज़ाम लग जाते हैं
इतने बंधन इतनी बंदिशें हैं जिनकी
उनसे ही दिल लगाने में क्या राहत है
मुझे शायद यूँ एक तरफ़ा की आदत है

भटक गया था
अपने ही ख़यालों में
भूल ही गया था के
रहता हूं मैं रेत के महलों में
जो भी करता रहा सोचा तेरी इबादत है
मुझे शायद यूँ एक तरफ़ा की आदत है

चाँद से प्यार हो जाये
तो वो मिल नहीं जाता
चाँदनी मिली तो क्या ये कम है
सच बता ये इश्क़ है या मेरी शहादत है
मुझे शायद यूँ एक तरफ़ा की आदत है

मेरी बात ना सुन
मेरा दिल थोड़ा बहका हुआ है
ये मेरा घर आज भी
तेरी खुशबु से महका हुआ है
तेरी आंखों का कहा सच है या शरारत है
मुझे शायद यूँ एक तरफ़ा की आदत है

मोहन 'इंतजार'

धूर्त -झूठों का ही अक्सर होता बेड़ा पार है
और सबका तो यहाँ बस होता बँटाधार है

छल-कपट की जीत होती है सदा, निस-दिन यहाँ
सच छुपा कर मुँह को रोता ही रहा हर बार है

आग लग जाए अभी अन्याय में,हे राम जी
कलयुगी पापी-प्रणाली को तो बस धिक्कार है

सर उठा कर, शान से गणिका यहाँ पर जी रही
हो रहा मासूम का शोषण व अत्याचार है

अब नहीं,बस, अब नहीं, जुल्मो- सितम बस,अब नहीं
हर तरफ देखो जहाँ भी, बस ये हा-हा-कार है

है बहुत आक्रोश जन-जन के यहाँ भीतर भरा
तस्करी-धंधे की देखो हर तरफ़ भरमार है

प्यार करना तो किसी को भी यहाँ आता नहीं
आज फलता फूलता ये प्यार का व्यापार है

मर गया है आज सबकी आँख का पानी यहाँ
जाने कैसा आज करता आदमी व्यवहार है

कर रहे दावे, कसम ख़ा-ख़ा के झूठे प्यार के
झूठे मायाजाल में अब फँस गया संसार है

उस से कर, तर्के-तअल्लुक़ है बहुत राहत मुझे
हो गया शामिल रकीबों में बड़ा आभार है

भूख दोनों को धकेले ले चली बाज़ार तक
इक खरीदेगा तो दूजा, बिकने वो तैयार है

क्या लिखे उफ़ ! और कैसे ही लिखे, अब "कामना"
रो रहे अश'आर सब, मेरी ग़ज़ल बीमार है

कट रही है ज़िन्दगी मेरी सुकूं से बिन तेरे
क्यों लगा तुझको कि दिल मेरा, तेरा बीमार है

कामना मिश्रा

मम् कर्मण्याधिकारस्य

चिथड़ों में लिपटी
मेरी ज़िंदगी
दर्द, निराशा, दास्तां के जंजाल में
समय की धुंध में विलीन
वेदनाओं की कशमकश में
चिंताओं की समाधियों में
स्वाहा होती।
मां की कोख का प्रलाप
चीरता बादलों को
जाता उस लोक के पार
दम तोड़ती
प्रेमदीप्ति की संवेदनाएं।
फिर भी
मेरी सदनीयति का सूत्र
और सात्विक भाव
समलपत हैं
संस्कारों की भूमि की रक्षार्थ
यहीं हैं
मम् कर्मण्याधिकारस्य।

संवाद

बात गई...प्रीत गई
रीत रही न शेष
काहे का ढोंग रचाये
अंतर तोहे कपट भेष
आशा टूटी..टूटे हृदय के तार
विषपान कर गई मानवता
अब व्यथा शेष
चीत्कार भरी पुकार
जीवन की भयावह विकटता
रक्त विहीन माँ का तन
धन विहीन हुआ पिता
इच्छा विहीन मेरा मन
राजा रंक की नहीं निकटता
धीर वीर हुए निर्बल
यक्ष प्रश्न स्वयं से
क्या धैर्य....संयम खोना चाहिए
सृष्टि सार का अस्तित्व रहे
इस ब्रह्म सूत्र हेतु
संवाद होना चाहिये।

रिश्ता

रिश्तों का अपना अस्तित्व होता हैं,
विशिष्ट और विविध।
परिभाषा गढ़ते हैं जो,
जज्बातों और सरोकारों की,
अद्भुत और अनसुनी,
आसमाँ में उड़ते,
मझधार में झूलते,
सागर पर तैरते,
किस्सों की।
परिभाषा गढ़ते हैं जो,
बंदिशो में टूटते सपनोँ की,
व्यथाओं और
हमराज से बिछड़ते,
फरिश्तों की,
सरहदे लांघते पंछियों,
हवाओं और बादलों की।
परिभाषा गढ़ते हैं जो,
धूप और छांव,
दर्पण के सच,
अटूट समर्पण की,
दरख्तों और पंछियों के,
रिश्तों की।
परिभाषा गढ़ते हैं जो,
पिता और परमात्मा,
माँ और आत्मा की,
मेरे और तुम्हारे
हम सबके संबंधों की।

राकेश छोकर

संकल्पों से है यह सृष्टि

संकल्पों से है यह सृष्टि
आओ शुभ संकल्प करें
आ जाएगी प्रेम की वृष्टि
आओ कुछ विकल्प करें

मलय बयार जब चलती है
मन पुलकित हो जाता है
मैं को जब भी हम में बदला है
संबंध सुरभित हो जाता है
मतभेद कभी भी भेदें न मन को
आओ हम कुछ यत्न करें

सुख दुख है दोनों संगी साथी
इक आता इक जाता है
चलते रहना ही मंजिल है
अनमोल बस दिल से दिल का नाता है
अपना है जो वो मिल ही जाएगा
आओ हम बस प्रयत्न करें

आद्र नयन भी हंस पड़ते हैं
सोच में अद्भुत शक्ति है
अमा घोर है, मन दीप जलाए
कर्म ही असली भक्ति है
विषाद रिपु विजय के पथ का
आओ इसका पतन करें

मीनाक्षी भसीन
द्वारका, दिल्ली
मो. 9891570067

साँझ का सवेरा

नाम- संगीता सिंह
कानपुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल नंबर- 9259514153

बार बार दर्पण में स्वयं को निहारना, बालो को बार बार सँवारना, अकेले अकेले ही बिन बात मुस्काना किशोर उम्र में उगते प्रेम कि निशानी है। साँझ अभी केवल सत्रह वर्ष की थी वह किशोरावस्था में थी उम्र का वह मोड़ जहाँ किशोर एक दूसरे के प्रेम में पड़ जाते है।

सर्दी में एक हफ्ते की छुट्टी थी इसलिए साँझ अपनी माँ के साथ अपनी नानी के पास अलीगढ़ जाने के लिए रेलगाड़ी में सवार होती है। रेलगाड़ी ने रफ्तार पकडी साँझ ने समय बिताने के लिए एक किताब निकाली और पढने लगी। साँझ किताब मे डूब गयी और इधर एक के बाद एक स्टेशन आते जा रहे थे। किताब से साँझ की एक पल के लिए नजर हटी और सामने बैठे एक नवयुवक पर पढ़ी। वह एकटक साँझ को देखे ही जा रहा था वह नौजवान भी साँझ को अच्छा लग रहा था किताब पढते पढते साँझ भी उस नौजवान को बीच बीच मे किताब हटाकर देख लेती इसी लुका छुपी मे अलीगढ़ आ गया साँझ और उसकी माँ वही उतर गये। दो दिन साँझ ने नानी के घर खूब मस्ती की, आज सभी ने सिनेमा देखने का कार्यक्रम बनाया। सिनेमा हाल में जाकर सभी अपनी अपनी सीटो पर बैठ गये साँझ ने अनुभव किया कि कोई उसे देख रहा है उसने बगल मे देखा तो यह वही नवयुवक था जो रेलगाड़ी में उसे देख रहा था।

इस तरह साँझ के जीवन मे एक नये अध्याय का आरंभ हुआ और वह उस नौजवान से प्रेम कर बैठी। साँझ की माँ सामान समेटने हुये बोली साँझ जल्दी से तैयार हो जाओ समय पर स्टेशन पहुंचना है। मुझे नहीं जाना, अभी कुछ दिन और रूकना है यहाँ साँझ हठ करते हुये बोली। नहीं नहीं, कल से स्कूल खुल जायेगे हमे आज ही निकलना होगा माँ ने आदेशात्मक स्वर में कहा। साँझ अपने घर वापस आ गयी लेकिन उसका मन कही भी नहीं लग रहा था। रविवार की सुबह साँझ छज्जे पर खड़ी होकर बालो को सुखा रही थी तभी उसकी नजर नीचे खड़े लड़के पर पडी साँझ की आखों में खुशी की लहर दौड़ गई।

साँझ और वह नौजवान चुपके चुपके मिलने लगे। साँझ को सारी दुनिया की बाते बेकार लगने लगी आखिर एक दिन साँझ ने कहा माँ मुझे एक लड़के से प्रेम हो गया है और मुझे उससे शादी करनी है। कल वह आयेगा आपसे मेरी शादी की बात करने के लिए नवल नाम है उसका।

पागल हो गयी हो साँझ अभी पढ़ाई की उम्र है आज के बाद यह फालतू की बाते मेरे सामने मत करना, खबरदार जो अब नवल से फिर मिलने की कोशिश की साँझ की माँ गुस्से में कमरे से बड़बड़ाती हुई निकल गयी। सूरज सर पर चढ गया है लेकिन अभी तक साँझ नहीं उठी यह कहते हुए साँझ की माँ कमरे के अन्दर गयी वहां साँझ को ना पाकर यहाँ वहाँ ढूढने लगी अचानक मेज पर रखे कागज की ओर नजर गयी तो कागज पढने के लिए उठा लिया। साँझ की मामाँ के हाथ पैर सुन्न हो चुके थे पैर कांप रहे थे साँझ घर से भाग गयी थी।

घर से भागकर साँझ ने नवल के साथ घर बसा लिया। नवल के प्रेम में अंधी हुयी साँझ को अपनी माँ के दुख का भी विचार नहीं आ रहा था। धीरे-धीरे एक साल बीत गया नवल के स्वभाव में परिवर्तन आने लगा था वह साँझ पर गुस्सा होने लगा था रात को देर से घर आना आम बात हो गयी थी नवल शराब भी पीने लगा था। साँझ को अपनी माँ की याद सताने लगी थी पर वह किस मुंह से माँ के पास वापस जाती यह सोचकर नवल की बदतमीज़ी को सहन करती रही नवल के साथ रहते हुये तीन साल बीत चुके थे। साँझ को डिप्रेशन और थाइरॉइड नाम की बिमारी हो गयी थी नवल इलाज के लिए रूपये भी नहीं देता था साँझ को। साँझ स्वयं को जैसे सजा दे रही हो, उसने सहन करना सीख लिया था नवल के साथ भागकर उसने बहुत बडी गलती जो की थी । एक दिन साँझ डाक्टर के पास चेकअप के लिए पहुंची अभी अन्दर और भी मरीज है आप बाहर ही बैठो नर्स ने साँझ से कहा, साँझ कुर्सी मे बैठकर अपनी बारी का इंतजार करने लगी। साँझ की नजर बगल मे बैठी एक अधेड़ उम्र की औरत पर गयी उस औरत को देखते ही साँझ जोर जोर से रोने लगी।

साँझ को रोते हुए देख औरत घबरा गयी, तुम क्यो रो रही हो ?उस औरत ने पूछा। मैं साँझ हूँ माँ।

साँझ इतनी कमजोर हो गयी थी कि उसकी माँ साँझ को पहचान ही नहीं पायी थी।

क्या हो गया है तुझे ये क्या हाल बना लिया है साँझ की माँ ने रोते हुये साँझ को गले से लगा लिया।

साँझ अपनी माँ से बोली माँ मैने गलती की आपका दिल दुखाया किस मुंह से लौटकर आपके पास आती।

नहीं! नहीं ! ऐसा नहीं कहते साँझ बच्चे कितनी बडी गलती क्यो ना करे माँ बाप बच्चो को दिल से नहीं निकालते।

सुबह का भूला नाम को घर आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते साँझ! यह कहकर साँझ की माँ ने साँझ को अपनी छाती से चिपका लिया।

धुंधला है नेपथ्य

डॉ. रामनिवास 'मानव'
नारनौल-123001 (हरि)
मोबाइल : 8053545632

कलम हुई बैसाखियां, बुजदिल हुए कलाम।
झुक-झुक कुबड़े रहे, सत्ता तुझे सलाम।।

लगी खेलने लेखनी, सुख-सुविधा के खेल।
फिर सत्ता की नाक में, डाले कौन नकेल।।

शीश झुके जिस द्वार पर, क्या कबिरा का काम।
मिलते हैं दरबार में, देव और मतिराम।।

कविता बैठी हाट पर, लिए पराई पीर।
फैशन के इस दौर में, सस्ते हुए कबीर।।

बदले सभी विकास ने, जीवन के प्रतिमान।
घूंघट अब करने लगा, बिकनी का सम्मान।।

अब वह आल्हा की कहां, रही सुरीली तान।।
कजरी, ठुमरी, फाग को, तरस गये हैं कान।।

बढ़ते-बढ़ते यूं बढ़े, जीवन में संत्रास।
नियति आदमी की बने, सुरा और सल्फास।।

सीता-सी संवेदना, व्याकुल और उदास।
मन वैरागी राम-सा, जीवन है वनवास।।

पुलिस-विफलता से बढ़ा, जब-जब भी जनरोष।
मुठभेड़ों के नाम पर, मरे कई निर्दोष।।

धूल-धुआं खुशियां हुईं, पीर हुई अखबार।
सुर्खी सुर्ख अभाव की, बांचें कितनी बार।।

जब-जब भी पर्दा उठा, दिखा अधूरा सत्य।
अनदेखा ही रह गया, जीवन का नेपथ्य।।

राजनीति करने लगी, अब तो स्यापा रोज।
यार रुदाली के सभी, क्या गंगू, क्या भोज।।

राजनीति जब से बनी, पद की वैध रखैल।
ग्राफ बढ़ा अपराध का, देश बना है जेल।।

चकाचौंध है मंच पर, धुंधला है नेपथ्य।
दर्शक-दीर्घा मौन है, नोट करो यह तथ्य।।

योद्धा को फांसी मिली, मुखबिर को सम्मान।
सदा रहा इस देश में, केवल यही विधान।।

ठोकर खाते भोगते जो जीवन-वनवास।
रचते हैं वे ही यहां, एक नया इतिहास।।

हवा उड़ाकर ले गई, खुशबू भरे दुकूल।
हमें मिले सौगात में, कुछ मुरझाये फूल।।

कांटे, आंसू, तितलियां, सपने और पलाश।
अपना तो बस है यही, जीवन का इतिहास।।

मन में पांडव-कृष्ण हैं, तन में कौरव-कंस।
दोनों के चिर द्वंद्वका, भोग रहा मैं दंश।।

कोई कहे रखैल है, कोई समझे सौत।
जीवन की अर्द्धांगिनी, लगे मुझे तो मौत।।

दूरियाँ

दूरियाँ बढ़ रहीं हैं क्योंकि-
बढ़ गई हैं,
किसीऔर से नजदीकियाँ।
मोबाइल हो गए प्रमुख-
छिनती जा रहीं,
रिश्तों की नजदीकियाँ।
अपनों की उपेक्षा कर-
दूसरों से नेह बढ़ाते,
क्या यही रिश्ते हैं-
आज के,
हम समझ न पाते।
मोबाइल के हो गए -
सब कायल,
होते हैं जिनसे -
बहुत से ह्रदय घायल।
अपने - अपने में हैं -
व्यस्तआज के युवा,
क्या रह पाएंगे वे-
केवल चुनिंदा चीजों के लायक।
शोक में है यह पीढ़ी-
अभिभावकों व शिक्षकों की,
जिन्हें देखते अब -
व्यस्त रहते हैं सदा,
किसी और के साथ व्यस्त।
शायद भूख कोई -
बढ़ती जा रही,
वजह से जिसके-
नव पीढ़ी कुछ गुमराह हो रही।
हो जाए ईश की अनुकंपा-
इन पर भारी,
सबकी बुद्धि हो जाए -
नित न्यारी,
भविष्य सुधार कर अपना-
अपने पथ पर,
हैं जिनके वे अधिकारी।

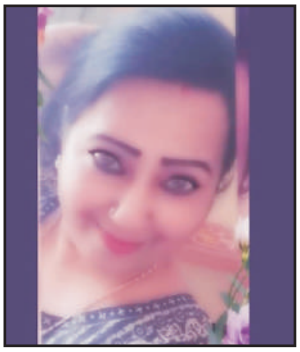

डॉक्टर परमजीत ओबराय
सोहर, ओमान
Mob. : 00968-96103888

प्रेमगीत

प्रेमगीत तुम पर लिखने को,
ले सपनों की चाह उठा।
देख देश की दुर्दशा,
व्याकुल मन कराह उठा।

एक तरफ मदमाता यौवन,
एक तरफ बिलखता बचपन,
कसमकस से भरा है जीवन,
बैचेन हैं तन और मन,
कल तक सब ठीक ही था,
फिर आज ये कैसा भाव जगा।

देख देश की दुर्दशा,
व्याकुल मन कराह उठा।

जाऊं इधर कि उधर जाऊं,
असमंजस घिरा हुआ हूँ,
बैचेन मन को कैसे समझाऊं,
सही रास्ता कैसे पाऊं।
दर्द का रिश्ता रखकर ऊपर,
छोड़ सुखों की छांह उठा।

देख देश की दुर्दशा,
व्याकुल मन कराह उठा।

तेरे साथ रहा जो हर पल,
बना रहूंगा कामी, निर्बल।
चीखें भेद रही हैं पल-पल,
"देव" बुला रहे हैं सूने आंचल,
खुद से ही होकर बेकल,
पहलू की छोड पनाह उठा।

देख देश की दुर्दशा,
व्याकुल मन कराह उठा।

देवेंद्र कुमार सोनी

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी झंझावातों का घेरा है,
मन अधीर है राहों में झमेला है।

पल-पल सपने बनते और बिखरते हैं,
नित पलकों में फिर भी स्वप्न संवरते हैं,
जब से मन में उनका हुआ बसेरा है,
मन अधीर है राहों में झमेला है।

कड़ी धूप में बादल घिर-घिर आते हैं,
बिन बरसे ही वापस चले जाते हैं,
शायद उनको भी यादों ने घेरा है,
मन अधीर है राहों में झमेला है.

अभिलाषायें टूटी और लाचार हुईं,
और भावना बिक -बिक कर बाज़ार हुईं,
दिल में सागर सी लहरों का डेरा है,
मन अधीर है राहों में झमेला है।

अरमानों के गीत जगें तो जानूं मैं,
कोई मीत बनाये तब तो मानूं मैं,
सुख की राह को तकते हुआ सवेरा है,
मन अधीर है राहों में झमेला हैं

कवयित्री
विनीता रानी विन्नी

कृतज्ञ और भावुक मन

कल शाम मैंने कहा, ‘‘चलो घूम आते हैं,बहुत दिन हो गये साथ घूमे हुए।’’ उसने मेरी ओर देखा। निश्चित ही आश्चर्य हो रहा होगा। जल्दी-जल्दी उसने गिलास धो लिया,नल बंद की और अपने कमरे की ओर चली गई। दरवाजे से दिखा, उसने कंघी उठा लिया था और शाल ओढ़ते बाहर निकल आयी। मैंने सैंडिल पहन लिया। वह अपना जूता पहनते बोली, ‘‘किसी दिन पहनकर चली गई थी, लौटकर बतायी, आपका शू तो गजब है।’’

मुझे उसकी बात किसी पहेली जैसी लगी, जिसका कोई ओर-छोर नहीं था। शायद पूछ ही लेता पर उसके चेहरे को देखते हुए चुप हो गया। वह किसी रौ में थी, पुरानी स्मृतियों के। मैं दरवाजे पर खड़ा था,पल्ला पकड़े हुए ताकि वह आराम से निकल सके। कोई सुगन्ध का झोंका महसूस हुआ। ॠकचित आश्चर्य हुआ,वह कभी कोई परफ्यूम नहीं लगाती। उसके निकलते ही मैंने दरवाजा बंद कर दिया। उसने बटन दबा दिया था और मेरे आते ही लिफ्ट चल पड़ी। शीशे में हम दोनों पास-पास दिखे, उसके चेहरे में कोई अतिरेक उभर आया था। नीचे लिफ्ट का डोर खुलते ही ठंडी हवा ने स्वागत किया। हमेशा की तरह सुरक्षाकर्मी ने अभिवादन किया और हम टावर से बाहर फूलों की क्यारियों की ओर बढ़ चले।

‘‘बाहर ठंड है,’’ मैंने कहा, ‘‘घर के भीतर महसूस नहीं हो रहा था।’’ उसने शाल को एक बार फिर फैलाकर ओढ़ लिया और मुस्करा कर मेरी ओर देखने लगी। फूलों की क्यारियों के पास से गुजरते हुए लगा, यहाँ सुगन्ध ही सुगन्ध है और हवा में ताजगी। चारों ओर दुधिया प्रकाश फैला था, आसमान में चाँद अपनी चाँदनी बिखेरे हुए था और सामने से आती लड़कियों के चेहरे दमक रहे थे। उन दोनों लड़कियों ने नमस्ते किया और हमने आशीर्वाद दिया। थोड़ा आगे से सीधे न जाकर हम दाहिनी ओर मुड़ लिए। मेरा मन अपने ही टावर के चारों ओर चक्कर लगाने का हुआ। पीछे से आती हुई कोई महिला तेज आवाज में किसी से मोबाइल में बात करते बगल से गुजरी। वह अपनी रौ में थी। हमारी ही उम्र के दो-तीन और लोग मिले, दुआ-सलाम के साथ हम बढ़ते चले गये। खुले में आते ही हवा ने हल्की सी सिहरन का आभास दिया और वह हँस पड़ी, बोली, ‘‘अक्सर नमस्ते कहती है, खूब बोलती है, अभी किसी धुन में है,किसी से बातें कर रही है।’’ मुझे समझते देर नहीं लगी,बगल से तेज कदम चल रही महिला के बारे में बोल रही है। मैंने कहा, ‘‘हाँ, उसने तुम्हें देखा नहीं।’’ वह मुस्करायी।

शाम कब की ढल चुकी है। लड़कियाँ, बच्चे, महिलाएं और पुरुष सभी चक्कर लगा रहे हैं। कोई-कोई मौन है, शांत और अकेला, कुछ लोग दल में हैं और बातें कर रहे हैं। बच्चों में चंचलता है, तनिक दौड़ने-भागने की चाह भी। कुछ साइकिल चला रहे हैं और सर्र से बगल से गुजर जाते हैं। युवतियों के झुंड की अलग मस्ती है। वह तिरछी निगाहों से मुझे देख लेती है, मेरी नजरों का पीछा करती है और मुस्कराती है। दो-चार को छोड़, सभी नमस्ते, प्रणाम करती हैं और हाथ जोड़े बढ़ती रहती हैं।

तीसरा चक्कर पूरा होने जा रहा है,वह दूसरा चक्कर कहती है। उसकी भावना समझता हूँ। वह चाहती है, अधिक से अधिक चल लिया जाए। मुझसे अधिक उम्र के गांगुली दा, दूर दिखाई दे रहे हैं। वह हँस पड़ती है, बोलती है, ‘‘अक्सर आपके लिए पूछते रहते हैं, अंकल कैसे हैं।’’ मुझे भी हँसी आती है, ‘‘अच्छा, मुझे अंकल बोलते हैं?सीधे दादा ही बना देते।’’ ‘‘कितना अच्छा लग रहा है आप दोनों को देखकर,’’ हाथ जोड़े माया राह रोके खड़ी है।

‘‘अच्छा तो मुझे भी लग रहा है, अपनी दयालु, खूबसूरत बहू से मिलकर, आजकल आ नहीं रही हो?’’ मेरी बात पर उसकी मुस्कराहट कुछ अधिक ही फैल गई है। आँखों की चमक से उसके भीतर की खुशी समझ रहा हूँ और यह भी कि उसे अपनी सुन्दरता का पता है। यह एक मनोवैज्ञानिक पहलू है, लड़कियाँ अपने सौन्दर्य को लेकर कुछ ज्यादा ही सचेत रहती हैं।

माया हम दोनों के लिए कुछ अधिक ही भाव-प्रेम रखती है, खूब खुश रहती है और आये दिन मिलने चली आती है। उसे हम दोनों में उसके मम्मी-पापा की झलक मिलती है। आज उसके पास बहुत सी बातें हैं, बताने-सुनाने के लिए। देर तक बातें करते हुए हम टहलते रहे हैं। हम दोनों के स्वास्थ्य के बारे में पूछती है। मन कहीं न कहीं भीग जाता है, मैं उसे हृदय से आशीर्वाद देता हूँ और सबका हालचाल पूछता हूँ।

वह हँसते हुए कहती है, ‘‘आप दोनों को कभी उदास-निराश नहीं देखती, खुद खुश रहते हो और दूसरों को भी प्रेरित करते हो, खुश रहने के लिए। आपकी बात मुझे आनंद से भर देती हैं-जीवन में संघर्ष करना है, खुश रहना है और आगे बढ़ना है।’’

हम अपने टावर की ओर मुड़ गये हैं और माया आगे बढ़ गयी है। उसकी खुशी, उसका सेवा-भाव और प्रेम देखकर अक्सर सोचता हूँ, सभी लोग ऐसा क्यों नहीं हैं। आखिर उसकी भी जिम्मेदारियाँ हैं, व्यस्तताएं हैं, कैसे कर लेती है यह सब, जबकि अधिकांश लोग रोना रोते रहते हैं। मेरी बातों पर वह खुलकर हँसती है, कहती है, ‘‘उतने ही समय में, उतने ही संसाधनों में दुनिया को कुछ अधिक देने, लौटाने का हौसला रखती हूँ। मैं यह नहीं देखती कि लोग क्या कर रहे हैं, मैं देखती हूँ कि मैं क्या कर रही हूँ और इस तरह मुझे दुनिया से अधिक ही मिल जाता है।’’

माया के विचारों से आह्लादित, खुश होते हुए हम दोनों लिफ्ट के भीतर स्नेहिल एकांत में एक-दूसरे को देख रहे हैं। कुछ है दोनों के मन में जो पुलकित कर रहा है। श्रीमती जी दरवाजा खोलते मुस्करा रही हैं। भीतर कोई भाव उमड़ता है, भाग्यशाली हैं वे लोग जिनकी धर्मपत्नी दयालु भाव से उम्र ढलने के साथ सेवा करती है। मेरा मन कृतज्ञ और भावुक हो उठा है।

विजय कुमार तिवारी
भुवनेश्वर, उडीसा, भारत
मो. - 9102939190

जागी जागी रातें

जागी जागी रातें हैं
सोए सोए से दिन हैं।
नींद कहाँ इन नयनों में
बिखरे बिखरे पलछिन है।

रूठे रूठे लम्हें हैं
धुँआ धुँआ सा ये मन है।
सजाऊँ तुझे मैं ख्वाबों में
महका महका आँगन है।

बुझी बुझी सी साँसे हैं
खोया खोया सा दिल है।
नाम तेरा मेरे अधरों पे
तू ही तो मेरी मंजिल है।

चाँद अकेला अंबर में
चाँदनी उतरी आँगन है।
बेला महकाए रातों को
रातों में छलका यौवन है।

झुकी झुकी ये पलकें हैं
बहकी बहकी बातें हैं।
सावन की बरसती रातों में
पिया मिलन की सौगातें हैं।

नमिता सिंह 'आराधना'
अहमदाबाद

आगोश में आकर तुम्हारे

आगोश में आकर तुम्हारे
मैं महफ़ूज हो जाती हूँ
तुम रात तो मैं
रजनीगंधा बन जाती हूँ।

तुम चंदा तो मैं चाँदनी बनकर
बिखर जाती हूँ
तुम सागर तो मैं लहर बन कर
तुम से ही लिपट जाती हूँ।
आगोश में आकर तुम्हारे
मैं महफ़ूज हो जाती हूँ।

बादलों के आगोश में चाँद
कुछ पल सुस्ता लेता है
लहरों को आगोश में लेकर समंदर
खामोश हो जाता है।
आगोश में आकर तुम्हारे
मैं महफ़ूज हो जाती हूँ।

जाने कितनी ही खुशबू
घुली हुई हैं इन हवाओं में
उन सारे खुशबूओं में मैं
तुम्हारी खुशबू पहचान जाती हूँ।
आगोश में आकर तुम्हारे
मैं महफ़ूज हो जाती हूँ।

तुम फूल तो मैं खुशबू बनकर
महक जाती हूँ
तुम बादल तो मैं बारिश बनकर
बरस जाती हूँ।
आगोश में आकर तुम्हारे
मैं महफ़ूज हो जाती हूँ।

मन की चोट

''मां आप की चाय का टाइम हो गया, चाय बना दूं क्या ? बीना ने अपनी मां सुमित्रा से पूछा।

''बेटा तेरी ताई जी ऊपर आ रही हैं, उनके साथ बाजार जाना है, वह अपने बेटे की शादी के लिए सबको कपड़े खरीदवाना चाहती हैं।''

''अच्छा, अरे हां अजय भैया की शादी की तारीख नजदीक है, कितना आनंद आएगा।'' बीना ने कहा।

''अब तू एक काम कर तेरी ताई जी के लिए भी चाय बना दे और साथ में कुछ अच्छा सा नाश्ता भी बना दे।'' सुमित्रा बोली।

''ठीक है मां।'' इतना कहकर बीना रसोई में चाय और नाश्ता बनाने चली गई, और सुमित्रा भी ड्राइंग रूम में जाकर अपनी जेठानी के साथ बैठकर परिवार के लोगों के लिए खरीदारी की लिस्ट बनाने लगी। कुछ ही देर में बीना चाय और नाश्ते की ट्रे लेकर ड्राइंग रूम के दरवाजे तक पहुंची ही थी कि उसके कानों में मां की आवाज पड़ी--

''अरे दीदी आपने बीना का नाम तो लिखा ही नहीं, उसके लिए भी तो नए कपड़े खरीदने हैं।

''अरे सुमित्रा तू उसकी बड़ी तरफदारी करती है, सौतेली है फिर भी तू उसका कितना ख्याल रखती है। मैं एक काम करूंगी बेटी के पुराने कपड़े मेरे पास रखे हैं जो कि उसने नहीं पहने वही दे दूंगी।''

''नहीं दीदी बीना सब का बहुत ख्याल रखती है, मैं उसके साथ ऐसा नहीं करूंगी....।''

कि तभी बीना दुखी मन से हाथ में चाय की ट्रे लेकर ड्राइंग रूम में अंदर आई। ताई जी ने बीना को देख कर कहा-

''अरे बीना इतना शानदार नाश्ता क्या क्या बना लाई?आजकल बहुत समझदार हो गई है।''

''हां ताई जी मन की चोट इंसान को समझदारी से जीना सिखा देती है ....।

मृदुल त्यागी......

क्या महात्मा गाँधी का सपना सच होगा ?

एक बार फिर से हिंदी भाषा को लेकर सत्ता के गलियारों में चर्चा है, कहीं समर्थन में और कहीं विरोध में स्वर उठ रहा है। यह विवाद केंद्रीय गृहमंत्री के 'हिंदी भाषा को अंगरेजी का विकल्प' कहने से प्रारम्भ हुआ, जिसके उपरान्त उत्तर से दक्षिण तक कोई हिंदी के पक्ष में, तो कोई खिलाफ खड़ा दिखा। इसमें हिंदी फिल्म स्टार अजय देवगन और कन्नड़ स्टार किच्चा सुदीप के साथ अनेक नामी -गिरामी कलाकार और नेता कूद पड़े। सोशल मीडिया पर जहाँ इन दोनों सितारों के बीच वाक् युद्ध हुआ, वहीं राजनेताओं ने भी इसमें अपना स्वर मिलाना शुरू कर दिया। कर्नाटक के नेता अभिनेता किच्चा के समर्थन में आ गए, क्योंकि अगले साल वहां चुनाव होने वाले हैं। वैसे यह घटनाक्रम राजनीति के साथ सोशल मीडिया और उसके दुरुप्रयोग से भी सम्बंधित है, जिसके माध्यम से नेतागिरी से जुड़े 'यूजर्स' दुष्प्रचार करते हैं। कुछ समाचार चैनल तो आंकड़ों के हिसाब से हिंदी और अंगरेजी की तुलना करने लगे और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग फिर उठाई गयी। एक तर्क यह दिया जाता है कि हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली - समझी जाने वाली भाषा है। ऐसे में वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है, जिसे अधिक संख्या में लोग जानते - बोलते हों और जो सीखने में सुगम हो। लेकिन भाषा को अपनी नाक और साख का विषय बनाये दक्षिण के आंदोलन कारियों का कहना है कि हिंदी भाषी क्षेत्र के प्रवासी, अपनी भाषा सीखने की अपेक्षा करने के बजाय उनके राज्यों की स्थानीय भाषा सीखें। उन्हें सदैव यही भ्रम रहता है कि हिंदी भाषा उन पर थोपी जा रही है, जबकि अब वहां भी हिंदी भाषा शिक्षित वर्ग एवं आमजन द्वारा बोली -सुनी जा रही है। वास्तव में भिन्नता में विभिन्नता या अनेकता में एकता रखने वाली भारतीय संस्कृति में प्रत्येक 'चार कोस पर भाषा' बदलने की कहावत कही जाती है। ऐसे में विविधिता और विलगता के इन्ही तथ्यों को देखते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्री एस. निवासन के अनुसार, ''भाषा एक ऐसा मुद्दा है,जिस पर पूरी सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि यह महज संपर्क का मसला नहीं है। यह एक भावनात्मक मुद्दा है, जो पहचान से भी जुड़ा है।" (लेख -हिंदी भाषा जैसी ही मानी जाये हर भारतीय भाषा, हिंदी हिन्दुस्तान अखबार 12 अप्रैल 2022)

दरअसल यह मुद्दा कोई नया नहीं है, स्वतंत्रता पूर्व भी यह मसला महात्मा गाँधी जी के सामने उठता रहा था। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी 'हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न' मानते थे और कहते थे कि 'राष्ट्रभाषा बिना राष्ट्र गूंगा है।' बापू के राजनीतिक क्षेत्र में एक नेता के रूप में उभरने के बाद उन्होंने महसूस किया कि दक्षिण के लोगों को भी बोली जाने वाली हिंदी सीखनी चाहिए, इससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव में मदद मिलेगी। सन 1918 में हिंदी साहित्य के वार्षिक सम्मेलन के बाद गांधी जी ने अपने बेटे देवदास गाँधी को मद्रास जाने और हिंदी प्रचार की शुरुआत करने के लिए कहा। हालांकि देवदास शुरू में अनिच्छुक थे, किन्तु अपने पिता की बात मानकर वे मद्रास चले गए। सन 1918 में जार्ज टाउन के गोखले हॉल में 'हिंदी प्रचार सभा' का समारोह आयोजित किया गया, जिसमें श्री सी. पी. रामास्वामी अय्यर और डॉक्टर एनी बेसेंट ने भाग लिया। महात्मा गाँधी स्वयं इस संगठन के अध्यक्ष थे और चाहते थे कि अधिक से अधिक स्थानीय लोग यहाँ हिंदी प्रचार में शामिल हों। यधपि संगठन की रजत जयन्ती सन 1943 में होनी थी, किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था। तब यह समारोह सन 1946 ईस्वीं में हुआ, जिसमे स्वयं गाँधी जी ने भाग लिया। बापू एक सप्ताह तक सभा परिसर में रहे एवं शाम को लोग उनके साथ प्रार्थना और रामधुन में शामिल होते थे। दिलचस्प बात यह है कि जब देवदास यहाँ हिंदी प्रचार के लिए आये तो उन्हें राजाजी की बेटी लक्ष्मी से प्यार हो गया। बाद में इनसे शादी कर ली, इस तरह गांधीजी का इस शहर से रिश्ते का भी जुड़ाव हुआ। बीज रूप में यह सम्बन्ध भाषायी प्रेम का भी उदाहरण साबित हुआ, जिसकी मिसाल उन के पौत्र श्री गोपाल ष्ण गाँधी के माध्यम से मिलती है। अपने लेख में उन्होंने अपनी 'तमिज्ह' भाषी लक्ष्मी माँ द्वारा रामायण के हिंदी अनुवाद 'दशरथ -नंदन श्री राम' की बात बताई, जिसका तमिल रूपांतर उनके नाना चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने किया था। साथ ही उनके सभी भाई -बहनों को माँ से ही हिंदी भाषा और संस्कार सीखने का जो अवसर मिला, वह राजनीति से अलग व्यवहारिक धरातल पर हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और प्रचलन की स्थिति का परिचायक है।

वस्तुतः महात्मा गाँधी ने बिना किसी भेदभाव के सभी भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए हिंदी या हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहा था, क्योंकि वे हिंदी को भारत की संपर्क भाषा मानते थे। उनका कहना था कि 'मातृभाषा खतरे में है' ऐसा जो शोर मचाया जाता है, वह

या तो अज्ञान वश मचाया जाता है या उसमे पाखंड है। क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले लगभग सभी तमिल, तेलगु भाषी लोग हिंदी को समझते हैं और उसमे बातचीत कर सकतें हैं। तो यहाँ के अहिन्दी भाषी अथवा दक्षिण वासी क्यों नहीं सीख -समझ सकते। सन 1935 ईस्वीं में इंदौर के हिंदी साहित्य सम्मलेन के 24 वें अधिवेशन में महात्मा गाँधी ने अपने भाषण में साफ कहा था, ''मैं हमेशा से यह मानता हूँ कि हम किसी भी हालत में प्रांतीय भाषाओं को नुक्सान पहुंचाना या मिटाना नहीं चाहते। हमारा मतलब तो सिर्फ यह है कि विभिन्न प्रांतों के पारस्परिक सम्बन्ध के लिए हम हिंदी भाषा सीखें। ऐसा कहने से हिंदी के प्रति हमारा कोई पक्षपात प्रकट नहीं होता। हिंदी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। वह राष्ट्रीय होने लायक है।" वास्तव में गाँधी की भाषा नीति में हिंदी भाषा केवल हिंदी प्रदेशों तक सीमित नहीं थी, वह तो देश की एकता और अखंडता की प्रतीक थी। जिसके लिए बापू ने अपने आप को पूरी तरह झोंक दिया और हिंदी प्रचार -प्रसार का कार्य शुरू किया। उन्होंने हिंदी प्रचार संस्थाएं बनाई और कांग्रेस कमेटी की कार्यवाही हिंदी में कराने का प्रयत्न किया। सम्पूर्ण देश की यात्रा करके हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के पक्ष में जनमत बनाया और हिंदी तथा मातृ भाषाओं को बोलने -लिखने के लिए प्रेरित किया। इस तरह उन्होंने देश में हिंदी और अन्य मातृ भाषाओं को समान महत्व दिया, जिससे संकीर्ण प्रांतीयता बाधक न बने। एवं विद्यार्थियों को अंगरेजी की बजाय सदैव हिंदी और मातृभाषा का उपयोग करने की सलाह दी। लेकिन डॉक्टर कमल किशोर गोयनका के अनुसार, ''गाँधी की भाषा नीति का देश में काफी विरोध हुआ, हिन्दू -मुसलमान दोनों ने उन्हें अपनी भाषा का शत्रु माना तथा दक्षिण के प्रांतों में तो हिंदी को जबरदस्ती थोपने तथा उनकी प्रांतीय भाषाओं को नष्ट करने के षड्यंत्र का आरोप लगाया।"(लेख -गाँधी का भाषा चिंतन : हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ, 'अंतिम जन' पत्रिका, सितम्बर 2019)

यधपि दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सन 2018 में सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'शतमानोत्सव' मनाया गया एवं 21 फरवरी 2019 को माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविद ने सभा के प्रागंन में महात्मा गाँधी की प्रतिमा का आवरण किया। किन्तु फिर भी हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के विवाद को तूल दिया जा रहा है ?जबकि हिंदी भाषा का बाजार में भी महत्त्व बढ़ रहा है और वह विश्व व्यापार की भाषा के रूप में अग्रसर है। आज जबकि उत्तर भारत का आम आदमी दक्षिण भारतीय भोजन को खूब पसंद करता है एवं वहां के मसाले सारे भारत में मंगाए तथा इस्तेमाल किये जाते हैं। सम्पूर्ण भारत में मैसूर सिल्क तथा कांजीवरम जैसी साउथ सिल्क की साड़ियों को, महिलायें हमेशा पसंद करती रही हैं। आज का युवा वर्ग तो भाषा और संस्कृति की प्रांतीय दीवारों को लांघकर एक -दूसरे से बखूबी वैवाहिक सम्बन्ध बना रहा है। आम जन भी हिंदी भाषा के जरिये ही दक्षिण भारतीय सिनेमा के द्वारा, वहां की संस्कृति और स्थानीय समस्याओं से परिचित हुए हैं। इस प्रकार हिंदी भाषा या अन्य भाषाओं में 'डब' की गयी फिल्म्स द्वारा दक्षिण भारतीय सिनेमा को देश-विदेश में लोकप्रियता हासिल हुई है। वैसे भी हिंदी सिनेमा ने केवल अंतर्राष्ट्रीय जगत में, बल्कि अंतर्देशीय स्तर पर हिंदी के प्रचार -प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'बॉलीवुड' या 'टॉलीवुड' का भाषा सम्बन्धी विवाद व्यर्थ है, क्योंकि कला और कलाकार सीमाओं में नहीं बंधा होता। अन्ततः महात्मा गाँधी के प्रपौत्र श्री गोपाल ष्णन गांधी का मंतव्य यहाँ उल्लेखनीय है कि, ''हम हिंदी में या किसी भी भारतीय भाषा में ऐसे सन्देश पाएँगे, जो भारत के संयुक्त परिवार में समन्वय लाते हैं और ऐसे भी, जो उस परिवार में अलगाव लाते हैं। भारत के हिंदी भाषी निश्चय ही बहुमत में हैं। हिंदी भारत की सर्वोच्च 'लिंक' भाषा बने, यह हिंदी जगत की एक स्वाभाविक भावना है। हिंदी भारत की सर्वप्रिय भाषा बने, यह हिंदी जगत का एक स्वधर्मी उद्देश्य होना चाहिए। राष्ट्र प्रेम में हिंदी का योगदान निश्चित रूप से बड़ा है। अगर हिंदी -प्रेम में राष्ट्र का योगदान लाना है, तब हिंदी को खुद से नहीं, अन्य भाषाओं और अन्य भाषियों से प्रेम करना सीखना होगा।" (लेख - भारत की सर्वप्रिय भाषा बने हिंदी, हिंदी हिन्दुस्तान अखबार, 4 मई 2022)

श्रीमती संतोष बंसल
दिल्ली–110087

गांधारी का पुनर्जन्म

बेटी के जन्म के समय शायद ही कोई माँ कभी दुखी हुई हो। ज्यादातर मायेँ उसे अच्छी परवरिश देकर सुयोग्य बनाने का दृढ़ निश्चय ही करती हैं । लेकिन सुयोग्य व सुशील बेटी के विवाह की नियति का पर्दा जब उठता है तो अनेक माताएं तड़प उठती हैं। बेटियां नियति को स्वीकार कर लेती हैं। किंतु माता अक्सर असमय स्वर्ग सिधार जाती हैं।

नियति का प्रभाव पुरुषों के लिए उतना कठोर नहीं होता, जितना स्त्री के लिए। कभी-कभी अभिशाप या वरदान जैसी स्थितियां भी बन जाती हैं। वह तीन भाइयों में अकेली बहन थी, पिता की आंखों का तारा थी। सौंदर्य व बुद्धि का मिलाप ऐसा कि देखने वाले अचंभित रह जाते। नाम था गायत्री सोलंकी यूनिवर्सिटी टॉपर और बोलती तो ऐसा लगता सरगम के सातों सुर बज उठे हैं।

पढ़ाई और अनेकों डिग्रियों के बाद विवाह के लिए एक से बढ़कर एक रिश्ते आने लगे। इंजीनियर डॉक्टर मुंसिफ मजिस्ट्रेट सभी गायत्रके रिश्ते के लिए सहर्ष व साग्रह तैयार थे। तभी उसके पिता के पास अचानक यूपी के सहकारिता मंत्री के सचिव का अति विनम्र पत्र आया कि उनके आई.ए.स. बेटे के लिए गायत्री का हाथ मांगते हैं। सभी को गायत्रे के सौभाग्य पर गर्व हुआ। पिता और दो भाई लखनऊ जाकर सचिव जी के घर व उनके बेटे को देख कर आए तो जमीन पर पांव नहीं पढ़ रहे थे। आप लोग लड़के से मिले कैसा है वह मां ने पूछा। ‘‘आई.ए. एस है, गोरा है बस चेहरा चेचक के दागों से भरा हुआ है।” दोनों एक साथ बोले मगर इससे क्या ?पैसों में खेलेगी हमारी गुड़िया पिता ने पुनः कहा।

‘‘लड़के का नाम कुणाल मोहन और पिता का नाम माधव सरन है” इस बार गायत्री के बड़े भाई राजीव सोलंकी बोले।

इस डर से कि रिश्ता हाथ से ना चला जाए गायत्री के पिता ने एक माह के अंदर ही गायत्री व कुणाल की सप्तसदी सम्पन्न करा दी। गायत्री कुणाल के घर आ गई। जयमाल के समय कुछ पलों के लिए देखा हुआ चेहरा, प्रथम मिलन की रात्रि में जो उसने भरपूर देखा तो मन विरक्ति से भर उठा। ऐसे मोटे और लटके हुए होठ, भौंहों की जगह मुरझाई हुई घास की तरह दूर-दूर तक उगे हुए बाल और पूरा चेहरा गहरे काले गड्ढों से भरा हुआ। इस पर जब वे हंसते तो पूरा शरीर दोहरा हो जाता और हलक तक ब्रह्मांड के दर्शन हो जाते। ऐसी विद्रूप हंसी और ऐसे वीभत्स चेहरे के साथ उसे हर सुबह आंख खोलने थी और हर रात स्वयं को परोसना था। थोड़े से पैसों और रईसी के लिए उसके ही पिता ने उसके जीवन के साथ इतनी विभत्सता क्यों जोड़ दी। पहली ही सुबह वह नहाते वक्त बाथरूम में ही फूट-फूट कर रो पड़ी और आधे घंटे तक आंसुओं का सैलाब बहाती रही।

डॉ. अर्चना प्रकाश

लखनऊ, पिन- 226010

मो. - 9450264638

मोहल्ले पड़ोस व रिश्तेदार जिसने भी देखा एक ही वाक्य उनके मुख से निकला ‘‘बहू तो चांद का टुकड़ा है लेकिन रात और दिन की जोड़ी कब तक टिकेगी ?”

कुछ उम्रदराज महिलाओं ने उसे प्यार से गले लगा लिया ‘‘बेटी जो नसीब में होता है उसे कौन रोक सकता है?” शायद उन्हें गायत्री की नियति पर अफसोस हो रहा था। दूसरी ओर कुणाल बेहद खुश थे, और बात बेबात के खिलाकर हंसते हुए सभी को ब्रह्मांड दर्शन करा रहे थे। गायत्री को पता था महाभारत में गांधारी बेहद सुंदर व विद्वान राजकुमारी थी लेकिन जब जन्मांध व कूरुप धृतराष्ट्र से उसका विवाह हुआ तो पति के अंधत्व व वीभत्सता को वह बर्दाश्त नहीं कर पाई और उसने अपनी आंखों में पट्टी बांध ली। पल भर में ही गायत्री को लगा जैसे गंधारी की नियति की वह स्वयं भी भुक्तभोगी है। उसका मन काँप उठा यह सोच कर कि कहीं उसके रूप में गांधारी का पुनर्जन्म तो नहीं हो गया। फिर उसे लगा कि ऐसा कैसे हो सकता है।

गायत्री के दुर्भाग्य की करुणा सिर्फ यही तक सीमित नहीं थी। विवाह के हफ्ते भर में गायत्रि जान गई कि सात्विक प्रेम व सुखद प्रणय से पाल का दूर-दूर तक कोई नाता न था। वे तो सिर्फ दैहिक भूगोल के चतुर खिलाड़ी थे, यहां तक कि ऑफिस की भी अधीनस्थ महिला

कर्मचारियों को भी येन केन प्रकारेण वे अपनी हवस का शिकार बनाने से न चूकते थे। मायके जाने पर गायत्री ने कुणाल की सारी सच्चाई माता-पिता के सामने रखी तो पिता उसे ही समझाते हुए बोले ''बेटी धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा हम इतने बड़े लोगों से झगड़ा नहीं कर सकते, दुधारू गाय की दो लाते भी सहनी पड़ती हैं।" फिर वह धीरे से बोले ''तुम्हारा यह रिश्ता टूटने से हम सब की बदनामी होगी इसे समझने की कोशिश करो और सहनशीलता से काम लो।"

माता-पिता परिवार व समाज के लिए अंततः गायत्री ऐसे वीभत्स चेहरे, कुत्सित चरित्र व विद्रूप हंसी वाले इंसान के साथ निर्वाह करने के लिए विवश थी। गायत्री कभी बीमार भी होती तो कुणाल उसका हाल-चाल भी न पूछते। बच्चों के जन्म बीमारी इत्यादि की भी कुणाल ने कभी एक पल भी जिम्मेदारी नहीं उठाई। कभी कोई मनपसंद उपहार भी लाकर ना दे सके। बेजान पत्थर भी कभी पिघलते हैं लेकिन कुणाल तो निरे पाषाण से भी कठोर निकले।

जिस भी शहर में पोस्टिंग होती, दस बारह दिन के अंदर ही वे अपनी दैहिक भूख के लिए पूरी व्यवस्था कर लेते। अक्सर अजनबी महिलाएं वे घर ही ले आते और घर के एकांत कमरे में शराब और शबाब का भरपूर आनंद लेते। ऐसे अनेक अवसर देखकर भी गायत्री अनदेखा कर देती। बच्चे कभी कभी पूछते भी तो वह कह देती तुम्हारे पापा आंटी के साथ जरूरी मीटिंग कर रहे हैं।

धीरे-धीरे दोनों बच्चे बड़े हो गए अब उन्हें बहलाना या फुसलाना नामुमकिन था। गायत्री की बेटी कृतिका सोलंकी व पुत्र प्रबुद्ध सोलंकी क्रमशः हाईस्कूल व इंटर की कक्षाओं में थे और पिता के ही नक्शे कदम पर चल रहे थे । दोनों बच्चे भी अपने व्यक्तिगत स्वतंत्रता में कोई दखल पसन्द नहीं करते थे। पॉकेट मनी के नाम पर गायत्री से मोटी धनराशि वसूलना एवं उसे मनमानी मौज मस्ती में उड़ाना दोनों की दिनचर्या थी ।

बच्चों की बच्चों को सही राह पर लाने के लिए गायत्री बहुत परेशान थी। बहुत सोच-विचार के बाद उसे लगा कि यदि कुणाल सही राह पर आ जाए तो बच्चे खुद सुधर जाएंगे। इसी दशा में उसने ठोस निर्णय लिए। उसे लगा कि आंखों पर पट्टी बांधकर गांधारी पति की कुरूपता से तो बच गई लेकिन अपने जीवन के इस अंधकार में उसके सौ पुत्रों की निर्मम बलि चढ़ गई। जो वह कभी नहीं होने देगी।

अगले दिन जब कुणाल सज संवर कर ऑफिस जाने लगे तो गायत्री ने उन्हें रोककर कहा ''अब तक तुम्हारी सारी मनमानी पर मैं चुप थी, लेकिन अब तुम्हारी गलत आदतों का असर मेरे बच्चों कृतिका और प्रबुद्ध पर भी पड़ने लगा है।"

वह कैसे ? कुणाल बोले।

''वे इस तरह के दोनों ही पढ़ाई में बेहद कमजोर हैं फिर भी मेहनत से दूर भागते हैं।" गायत्री दुखद स्वर में बोली। ''तो क्या मैं उन्हें कमजोर कर दिया है ? या मैंने उनका कैरियर रोक दिया है ?" कुणाल तैश में बोले।

''आपकी इश्कबाजी की आदतों से दोनों बच्चे गलत प्रेरणा लेकर स्वच्छंद होते जा रहे है। लेकिन अब मैं ऐसा नहीं होने दूंगी।" गायत्री प्रतिवाद में बोली।

कर के देख लो जो कर सकती हो ? कुणाल भी तेज स्वर में बोले और ऑफिस के लिए निकल गए ।

उसी दिन रात 9:30 बजे डोर बेल बजी, उस समय कुणाल घर में नहीं थे और कृतिका व प्रबुद्ध टीवी देखने में मस्त थे। दरवाजा गायत्री ने खोला। सामने खूबसूरत युवती खड़ी थी... जी ! मैम मुझे कुणाल सर ने भेजा है उन्ही के कमरे में इंतजार करने के लिए कहा है।

''क्या नाम है तुम्हारा पढ़ी-लिखी अच्छे घर की लगती हो !" गायत्री ने कहा तो वह युवती रोने लगी और बोली

''जी मैं राशिका हूं । हम दो भाई एक बहन हैं। हमारा मध्यमवर्गीय परिवार है। पिछले दो साल से मेरी प्रोन्नति रुकी हुई है।" मजबूरी में ये सब करना पड़ रहा है।"

गायत्री ने उसे गले लगा कर चुप कराया फिर बोली ''अपने प्रमोशन की दरख्वास्त एवं सारे कागजात पूरे करके कल शाम तक मुझे दे जाना। आठ से दस दिनो के अंदर तुम्हें प्रमोशन का आदेश मिल जाएगा। लेकिन उससे पहले कसम खाओ कि ऐसा काम फिर कभी न करोगी।"

''हम आपसे पक्का वादा करते हैं मैम जी "! रशिका बोली।

एक महीने के अंदर लगभग सात यह स्थिति लड़कियों को गायत्री ने इसी तरह वापस लौटाया और उनके सारे काम स्वयं भागदौड़ करके पूरे कराए। अब कुणाल के ऑफिस में चर्चा फैल गई कि गायत्री कुणाल से ज्यादा योग्य व कार्यशैली में निपुण है। स्थितियाँ यह थी कि कुणाल के साथ कोई लड़की पटती ही न थी।

गायत्री भी धीरे-धीरे समाजसेविका बन चुकी थी और रोजाना ही चार-पांच घंटे घर से बाहर रहने लगी। इसका प्रभाव कृतिका व प्रबुद्ध पर भी पड़ा, वे दोनों भी अपने मम्मा के बदले हुए स्वरूप को समझ नहीं पा रहे थे कोई चारा न देख कुणाल समय पर घर आने लगे। अब वे यदा-कदा गायत्री व बच्चों के साथ भी समय बिताने लगे।

इधर गायत्री की सेवा भावना से प्रभावित होकर कुछ धालमक संस्थाओं के लोग उसे गीता प्रवचन व मानस कथा इत्यादि में भी साग्रह बुलाने लगे। गायत्री के प्रखर व्यक्तित्व प्रतिभा से कुणाल की कॉकटेल व कॉल गर्ल की गतिविधियों पर अंकुश लगा तो वे परेशान हो उठे और

रात्रि के एकांत में उसे प्यार से समझाने लगे ‘‘आजकल तुम धर्म पुराण और समाज सेवा के ढकोसले कुछ ज्यादा ही करने लगी हो ! आखिर इस सब से तुम्हें फायदा क्या होगा?”

‘‘मेरा फायदा व नुकसान मैं स्वयं देख लूंगी आप परेशान ना हो। वैसे भी फायदे को लेकर मेरा और आपका नजरिया अलग है।” गायत्री तल्खी से बोली कुणाल हैरान थे इससे पहले गायत्री उसे इस तरह कभी नहीं बोली थी।

‘‘आखिर तुम चाहती क्या हो ? वे बोले।

‘‘मैं चाहती हूं कि आप मुझे गांधारी ना समझे जिसके सौ बेटे पति की गलती से मृत्यु के मुख में समा गए थे । मैं अपने बच्चों के भविष्य के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हूं। गायत्री दृढ़ता से बोली तो कुणाल का चेहरा उतर गया।

जो सख्ती गायत्री ने कुणाल पर की थी वैसे ही अनुशासन की शक्ति उसने कृतिका और प्रबुद्ध पर रखी। लेकिन कुणाल का पौरुष फुफकार रहा था। वह अक्सर गायत्री को नीचा दिखाने की तरकीब प्रयोग करते थे। लेकिन गायत्री उनके इस प्रतिशोध से सतर्क थी। इसी कारण गायत्रि को बदनाम करने की कुणाल की सारी कोशिशें व्यर्थ हुई तो वे चुपचाप बैठ गए। अब कालोनी के एक बड़े वर्ग में गायत्रि के व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा होनी लगी।

कालचक्र अपनी गति से चल रहा था। कुणाल का रिटायरमेंट भी होने वाला था। लेकिन उन्हें अब कोई चिंता न थी। क्योंकि पिछले वर्ष ही कृतिका ने बाल शिशु रोग विशेषज्ञ की डिग्री हासिल की थी एवं उसका विवाह डाव तरुण चौधरी ई एन टी सर्जन के साथ हो चुका था। बेटा प्रबुद्ध भी कृषि वैज्ञानिक की डिग्री के साथ पौधों की नर्सरी चला रहा था।

मेरा प्यारा गांव

क्यों घुटन सी होती है,
तेरे इस शहर में।
मेरा छोटा सा गांव
ही अच्छा था।

जहां सुबह पक्षियों
के कोलाहल,
दादी के मक्खन रोटी
से शुरू होती।

कितना मधुर था वो
सुबह का कलरव,
आंगन में फुदकते वो पक्षी।

वहां थी बड़े बड़े
पेड़ों की छहियां,
सुंदर सुंदर फूलों
की फुलवाइयां।

खेतों में काम
करते वो किसान,
कितने प्यारे थे
पड़ोस के इंसान।

कितने मनोरंजक
होती थी,
वो मेरे दादाजी
की कहानियां।

वह मेरे घर का आंगन,
पड़ोस में चलती चाकी।

वो जो बड़ों से
सीखे थे संस्कार,
यहां आकर कहीं
गुम से हो गए हैं।

अब तो लगता है
सब था एक सपना।

आखिर क्यों नहीं है
यह सब तेरे शहर में,
काश! लौट सकता
अपने प्यारे से उस गांव में।

अरुण यादव
हमीरपुर उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर- 8601288774

ऋषिका उर्वशी

दिग-दिगंत में है प्रतिष्ठित,
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

इंद्रलोक की परी उर्वशी, देवत्व ऋषित्व सम्पन्न,
सागर की है आत्मजा, मानसिक तनया श्रीमन्नारायण।
अपूर्व सौंदर्य सौदामिनी, भूमा विराट ऐश्वर्य सृष्टि,
चिंतन की लहरों के जैसी, किरणोज्ज्वल रहस्य दृष्टि।
दिग-दिगंत में है प्रतिष्ठित,
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी--

इंद्र सभा की शोभा, प्रेम कला दिव्य चेतना,
नारद मुख से सुनती, पुरुरवा चंद्रवंशीय की महिमा।
अतीन्द्रिय धरातल का करती स्पर्श,उत्कट आतुरता,
रुप में डूब, अरुप का कर संधान, सौन्दर्य मोहकता।
अप्रतिम, अपूर्व है रुपसी अप्सरा, ऋषिका उर्वशी--
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

प्राणों में सिहरन पुलक, प्रफुल्लित मोहवश आकृष्ट,
संयम-मर्यादा शर्तों पर रचाया, गंधर्व विवाह संदृष्ट।
देह तरंगायित, मन समुद्र में लहराती पाती दुर्गम समाधि,
इंद्र व्यथित, षड्यंत्रों से रचित, पलित मेष अपहरित,
मेष ढूंढते, शर्त भूलते, रहस्यमय विलग हुई उर्वशी--
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

वज्रादपि कठोर कुसमादि कोमल, इंद्र से अभिशप्त,
तेज से अपने अन्तरिक्ष को भरने वाली हुई विलग।
गुमी अप्सरा ढूंढता पुरुरवा,गिरता फिरता मुक्त गगन,
सम्बन्धों की डोर टूट गई, लगा न पल, क्षण, दिन।
इच्छा हुई विस्तरित मही से उड़ी आकाश उर्वशी--
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

करी प्रतिज्ञा भंग, सुनी न एक, अनसुनी करते रहे,
मैं वचनों से विवश, कामना वज्रपात, दुःख कर रहे।
अपराधी हो तुम, विरह दण्ड मैं भी भोग रही हूं,
विधाता की लीला है क्या?सबकुछ देख रही हूं।
वायु सी दुष्प्राप्य, ऊषा सम चलती उर्वशी--
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

मैं हूं तेरे पुत्र की वात्सल्यमयी मां, जल्दी ही लौटूंगी,
गिरो मत, हो मृत्युवरण से मुक्त, बनो आत्मिक ऊर्ध्वगामी।
अमरत्व विविध रुप वाली मैं चार वर्ष संगसाथ घूमी हूं,
घृत का किया आस्वाद, कामाध्यात्म परितृप्त रही हूं।
नवनव स्फुरण द्वंद्वों से सर्वथा मुक्त उर्वशी--
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

स्मरण करो जन्मजीवन को, देवों द्वारा प्रदत्त शक्तियां,
अतिविशिष्ट तुमको मान नदियों ने पोषित बढ़ा किया।
हे इला! पुत्र तू श्रेष्ठ कर्म, हवि यज्ञ यजन सम्पन्न,
पुरुरवा नरश्रेष्ठ मेरी सुन, तू है नहीं साधारण स्मरण।
तेरा जन्म दिव्य, तेरे कर्म दिव्य कहती उर्वशी---
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

श्री सम्पन्न रहो सर्वदा, ऊर्जस्वित यश सम्पन्न,
गंधर्वराज पिता चंद्र, बुद्धि स्वरुपिणी मां इला के पुत्रश्रेष्ठ।
आयु पुत्र को पाकर वीरभाव सम्पन्न देवत्व सिद्धियां प्राप्त,
दुष्टों का करके दलन, क्षात्रधर्म सुखधाम तेजस्वरुप।
आराध्या भक्ति अध्यात्म दर्शन की त्रिवेणी उर्वशी--
रुपसी अप्सरा ऋषिका उर्वशी।

डॉ. सरोज गुप्ता
सागर म प्र, पिनकोड ४७०००१
मोबाइल 9425693570

जापान में कविता पाठ

जापान में पहली बार भारतीय दूतावास में कविता पाठ हुआ, भारत कोकिला सरोजिनी नायडू जी के जन्मदिन के मौक़े पर ।

जापान में हिंदी भाषी लोगों की संख्या बहुत कम है और हिंदी साहित्यकार तो बहुत ही कम है। ऐसे में हिंदी बोली और हिंदी लेखन का प्रचार-प्रसार का ज़िम्मा बहुत ही कठिन काम है। उस पर किस प्रकार से हिंदी बोली का प्रचार-प्रसार हो यह सोचना और करना और भी मुश्किल। लेकिन कहते हैं न अगर उद्देश्य ईमानदार हो तो रास्ते मिल ही जाते हैं। हिंदी की गूँज पत्रिका की ओर से भारत कोकिला सरोजिनी नायडू जी के जन्मदिन पर हिंदी को भाषा के प्रचार-प्रसार को उद्देश्य में रखकर भारतीय दूतावास में कार्यक्रम का आयोजन किया गया सश्री मति कनिका अग्रवाल जी सानिध्य से ये कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। कार्यक्रम में ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल में बच्चों ने चढ़-बढ़ कर भाग लिए स ऐतिहासिक यह रहा कि जापान में पहली बार स्कूलों बच्चों द्वारा हिंदी कविता का वाचन हुआ। यह हिंदी की गूँज पत्रिका की यह बहुत बड़ी सफलता है। हिंदी कविता को लेकर बच्चों में ग़ज़ब का उत्साह देखने को मिला। सब के सब बच्चे भारतीय मूल के हैं। हिंदी कविता वाचन के इस कार्यक्रम में जिन बच्चों ने भाग लिया उनका नाम जाह्नवी श्रीवास्तव , जो कक्षा 10 की छात्रा है, हरिथालक्ष्मी रविशंकर कक्षा आठ की छात्रा है, मीशा जोशी भी एवं पूर्वी चौहान भी कक्षा आठ की छात्रायें हैं और पार्थ हेलीरस प्रिंटाह कक्षा आठ के छात्र हैं। प्रगया नामा भारत से जापान आ कर फ़िज़िक्स में पी एच डी कर रहीं हैं उन्होंने भी कार्यक्रम में भाग लिया और बहुत उत्साह से कविता पाठ किया।

कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी बच्चे बहुत उत्साहित थे और प्रयत्न करके हिंदी बोल रहे थे

दसवीं की कक्षा में केवल ५ बच्चे हिंदी पढ़ते हैं।

सच यह है कि हिंदी कविता के इस कार्यक्रम में भाग लेकर सारे बच्चे बेहद ख़ुश थे। सभी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। हिंदी की गूँज पत्रिका हिंदी को लेकर ज़मीनी स्तर ऐसे और भी आयोजन जल्द करेगी। ऐसा प्रथम आयोजन और उसकी सफलता चारों ओर जापान में धूम मचा रही है।

– रमा शर्मा
हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
संरक्षक एवं मुख्य संपादक

मिशा जोशी

जाह्नवी श्रीवास्तव

पूर्वी चौहान

प्रगया नामा

पार्थ हेलीरस प्रिंटाह

हरिथालक्ष्मी

निराला की कविता में प्रगतिशील चेतना

कविवर निराला यद्यपि छायावादी कवियों में स्थान पाते हैं किंतु उनकी रचनाओं में 'प्रगतिवादी' तत्व प्रचुरता में पाए जाते हैं। मानव कल्याण व समाजहित को काव्य साधना का लक्ष्य बनाकर निराला युगचेतना से सदा अनुप्रेरित रहें। "निराला के काव्य में प्रगतिशील और प्रयोगशील तत्व तो आरम्भ से ही विद्यमान थे।"[1]

समाज कल्याण को लक्षित कर कवि की अधिकतर कविताएं प्रगतिशील तत्वों से परिपूर्ण हैं। इन्होंने रूढ़िवाद का खंडन, ब्रिटिश सरकार की दमन-नीति, जातिवाद व सम्प्रदायिकता, अछूत समस्या, नारी उत्थान, शोषण का प्रतिफल, मजदूर व किसान आंदोलन, नवीन साहित्य आंदोलन एवं प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाया। निराला स्वभावतः क्रांतिकारी थे तथा पुरातनता व रूढ़िवादिता के कट्टर शत्रु थे। ध्वनि,उद्घोषक, बादल राग, बापू के प्रति, क्या दुख दूर करके बंधन, भगवान बुद्ध के प्रति, तुलसीदास व सरोज स्मृति में उन्होंने रूढ़िवाद को दर्शाया है।

'उद्घोषक' कविता में प्राचीनता के ध्वंस का आह्वान करते हुए नवजीवन का पक्ष लेते हैं। जीर्ण-शीर्ण नियम नष्ट हो जाए और सदियों से जकड़े हृदय-कपाट खुल जाए -

'छोड़, छोड़ दे शंकाएं, रे निर्झर-गर्जित वीर / उठा केवल निर्मल निर्घोष / देख सामने / बना अचल उपलो को उत्पल, धीर! / प्राप्त कर फिर नीरव संतोष।'[2]

'ध्वनि' कविता में पीड़ितों के हृदय में आशा का संचार करना कवि का लक्ष्य है। नवीनता को ग्रहण करने से ही नई ध्वनि मुखरित होती है। 'बादल राग' में कवि प्राचीनता से उपजी आलस्य को दूर कर नवीनता की बारिश करनेवाले बादलों का आह्वान करता है।

'भगवान बुद्ध के प्रति' कविता में विद्वेष भावना दूर कर राष्ट्रों के बीच मित्रता और प्रेम की भावना को जागृत करने का प्रयत्न किया है। वैज्ञानिक सुख-साधन से संपन्न मनुष्य ने उन्मत्त होकर पैसा को ही जीवन का उद्देश्य बना लिया है। 'प्रेम संगीत' में कवि ब्राह्मण जाति के पुरूष को निम्न जाति की पनिहारिन पर आकृष्ट दिखाया है। प्रेम के समक्ष छुआछूत व रूढ़िवादी सोच का कोई स्थान नहीं।

निरालाजी ने प्रेम संगीत, राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता, स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि लम्बी कविताओं में भी यंत्र-तंत्र जातिवाद का खंडन व विरोध किया है। अपनी प्रतीकात्मक कविता 'गर्म पकौड़ी' में निराला ने सुधारवादियों के मार्ग में कठिनाई उपस्थित करनेवाले निम्न जाति वालों पर कटाक्ष किया है -"अरी तेरे लिए छोड़ी / बम्हन की पकाई / मैंने घी की कचैड़ी।"[3]

'तुलसीदास' कविता में निराला ने तुलसी के समकालीन समाज में शूद्रों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला है। समाज के तमाम दकियानूसी रिवाज पर वो कबीर की भांति बरस पड़े हैं। उन्होंने स्त्री सुधार आंदोलन का भी समर्थन किया था। विधवा, प्रेम संगीत, सम्राट एडवर्ड अष्टम के प्रति, पंचवटी प्रसंग, रानी और कानी तथा सरोज स्मृति जैसी कविताओं में स्त्रियों की दुःखद स्थिति का वर्णन मिलता है -

'वह दुनिया की नजरों से दूर बचाकर / रोती है अस्फुट स्वर में / दुःख सुनता है आकाश धीर / निश्छल समीर / सरिता की वे लहरें भी / ठहर- ठहरकर। / कौन उसको धीरज दे सके?/ दुःख का भार कौन ले सके?"[4]

'सम्राट एडवर्ड अष्टम के प्रति' कविता में कवि स्त्री के सम्मान का गीत गाया है। सम्राट के द्वारा सिंघासन छोड़कर नीचे उतर अपनी प्रेमिका का हाथ ग्रहण करने के साहसिक कदम का अभिनन्दन करते हैं।

'भिक्षुक' कविता में गरीब भिखारी की दयनीय दशा का चित्रण इसप्रकार है -

'वह आता / दो टूक कलेजा करता पछताता पथ पर आता / पेट पीठ दोनों मिलकर है एक / चल रहा लकुटिया टेक।'

कवि की पूरी संवेदना भिक्षुक के साथ है तथा उनका प्रश्न है कि सामाजिक विषमता रूपी चक्रव्यूह को कौन सा अभिमन्यु तोड़ेगा? 'तोड़ती पत्थर' में गरीब मजदूरिन का वर्णन है जो श्रमिकों की शोचनीय दशा का चित्रण करती है। जेठ की तपती दुपहरी में वह पत्थर तोड़ रही है जबकि निष्ठुर पूंजीपति उसे छायादार पेड़ के नीचे बैठने भी नहीं देते। 'बादल राग' में कृषकों की दीन-हीन दशा का चित्रण कर कवि ने क्रांति के प्रतीक बादलों का आह्वान किया है -

'जीर्ण बाहू है शीर्ण शरीर/तुझे बुलाता कृषक अधीर / ऐ विप्लव के वीर।'

'कुकुरमुत्ता' में सामाजिक विषमता को उजागर किया गया है। समाज की वास्तविकता को उजागर करते हुए कहते हैं कि जिसकी बदौलत आज पूँजीपति वर्ग गुलाब बना बैठा है, वही वर्ग भूखा- नंगा है। इन धनिकों ने उनका खून चूसा है -

'अबे सुन बे गुलाब / भूल मत, जो पायी खुशबू रंगोआब / खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट / डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।'

गरीब विधवा की दयनीय दशा को देखकर निराला सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर नवीन विचार का सूत्रपात करना चाहते हैं। उनका कवि हृदय करुणा प्लावित हो उठता है -

'है करुणा रस से पुलकित इसकी आंखें / देखा तो भींगा मन मधुकर की पांखें / मृदु रसावेश में निकला जो गुंजार / वह और न था कुछ, या बस हाहाकार।'

निराला सामंती व्यवस्था बदल कर समानता का समाज स्थापित करना चाहते थे। शिक्षा व चेतना के विस्तार हेतु वो सामन्तों की हवेलियों को पाठशाला में परिवलतत होते देखना चाहते थे।

आज अमीरों की हवेली / होगी गरीबों की पाठशाला / धोबी, पासी , चमार, तेली / खोलेंगे अंधेरे का ताला / एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।

निराला ने शोषित, पीड़ितों का साक्षात्कार किया था जिससे उनकी कविताओं में शोषितों के प्रति सहानुभूति का दर्शन होता है।

निष्कर्ष : सामाजिक चेतना व मानव कल्याण को अपने काव्य का प्रयोजन मानकर लिखने वाले निराला की कविताएँ प्रगतिशील चेतना से सम्पन्न हैं। राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता, तोड़ती पत्थर, भिक्षुक, देवी सरस्वती, गर्म पकौड़ा सरीखी कविताओं में उन्होंने समाज के विविध वर्गों के शोषण एवं समस्याओं को उजागर किया है।

निराला नवीन साहित्यिक-सामाजिक आंदोलन के अग्रदूत थे। राम की शक्तिपूजा, पंचवटी प्रसंग, यमुना के प्रति व देवी सरस्वती के पौराणिक ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित होने के बावजूद इनके पात्र नवीन विचारों के समर्थक दिखते हैं। सामाजिक समस्याओं का हल उन्होंने साहित्य द्वारा सुझाया है। सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में उन्होंने किसी भी परम्परागत विचार, नियम तथा रूढ़ियों का खंडन किया है।

सन्दर्भ संकेत :

1. नन्ददुलारे बाजपेयी, 'कवि निराला', प्र. सं.-1965, पृ.-41
2. 'निराला रचनावली' - 1, पृ. - 104
3. 'निराला रचनावली'- 2, पृ. - 35
4. 'निराला रचनावली -1, पृ. - 73

डॉ. उर्मिला कुमारी
हजारीबाग, झारखंड - 825301
फोन - 8092469033

ग़ज़ल

तुम जहाँ से जुड़े थे वहीं के नहीं
गर वहाँ के नहीं तो कहीं के नहीं

मेरी परवाज़ पर हैरतें मत करो
आसमानी है हम इस ज़मीं के नहीं

हर दफ़ा तुमने तोड़ा भरोसा मिरा
अब तो वादे तुम्हारे यक़ीं के नहीं

नामा-बर ख़त किसी और का दे गया
ये तो लहज़ें किसी हम-नशीं के नहीं

सारी दुनिया से रिश्ते बनाते रहे
वो मकां में मगर एक मकीं के नहीं

मेरे सजदे सवाली है तुमसे सनम
नक़्श-ए-पा क्या तेरे इस जबीं के नहीं

फ़लसफ़ा ज़िंदगी का सुनाती उमा
क्या करे आप लेकिन हमीं के नहीं

श्वेता सिंह उमा
मास्को, रुस

विज्ञानकथा साहित्य में पर्यावरण चेतना

मोरे औदुंबर बबनराव
महाराष्ट्र-४३११३१
मो: ९७६३०६४३७७

पर्यावरण यह प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है । यह हमारे चारों तरफ व्याप्त होता है। पर्यावरण हमारे जीवन का मूल आधार है। यह हमें सास लेने के लिए हवा, पीने के लिए जल, रहने के लिए भूमि प्रदान करता है। लेकिन मानव प्राकृतिक पर्यावरण में अपने स्वार्थ के लिए परिवर्तन करता है। उसमें मानवीय पर्यावरण का निर्माण किया है। इसका परिणाम जल, वायु और मृदा की स्वच्छता में गिरावट दर्ज की जा रही है। बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग से संपूर्ण मानव जाति खतरे में दिखाई दे रही है।

भूमंडलीकरण, उदारीकरण के चलते पर्यावरणीय असंतुलन सबसे ज्यादा बढ़ गया है इस संदर्भ में वी.एन. जन्मेजय लिखते हैं कि "आधुनिक भौतिकवादी संस्कृति और सभ्यता के विकास ने देश की संपदा में वृद्धि की है। औद्योगिकरण, नगरीकरण, यांत्रिकी प्रगति के साथ विशालकाय मिल, फैक्ट्री, कारखाने स्थापित किए हैं। कृषि में विज्ञान का प्रवेश हुआ वैज्ञानिक खेती करने के कार्य में वृद्धि हुई इन सब ने मिलकर प्रकृति के पर्यावरण को नष्ट कर दिया।" इसमें संदेह नहीं है कि मनुष्य की बढती भोगवादी प्रवृत्ति ने ही विश्व को इस संकट के करीब लाकर खड़ा कर दिया है।

बढ़ती वैज्ञानिक प्रगति से मानव सुख-सुविधा के इतने आदी होते जा रहे हैं कि उन्हें इस बात का अंदाजा ही नहीं है कि इससे पर्यावरण पर क्या प्रभाव पढ़ रहा है। सड़कों के लिए न जाने कितने पेड़ काट दिए जा रहे हैं। इतना ही नहीं एयरकंडीशनरों, फ्रिज और गाड़ियों के धुओं निकलने वाली गैसौं से न केवल वायुमंडल दूषित हो रहा है बल्कि ओजोन परत पर भी इसका असर पड़ रहा है। इस संदर्भ में विज्ञान कथाकार देवेंद्र मेवाड़ी कहते है कि "प्रगति की भी एक सीमा होती है महोदय प्रगति के साथ-साथ विवेक भी उतना ही आवश्यक होता है।" बढ़ती औद्योगिक प्रगति के साथ ही मानव जीवन में विज्ञान की भूमिका बढ़ गई है वर्तमान जीवन पर इसकी छाप अंकित है। यह भी सत्य है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी चलते मानव की क्रियाकलाप, व्यवहार और आपसी संबंध में परिवर्तन दिखाई देते हैं इसी परिवर्तन की देन है विज्ञानकथा इस के संदर्भ में देवेंद्र मेवाड़ी का कहना है कि "विज्ञानकथा साहित्य की वह विधा है जिसके माध्यम से लेखक मानव जीवन पर वैज्ञानिक खोजों, तकनीकी प्रगति, भावी घटनाओं और सामाजिक परिवर्तन के संभावित प्रभाव को दर्शाता है। यह भविष्य में झाकता है और अपनी लेखनी से भविष्य की तस्वीर खींचता है। अपनी कल्पना और वैज्ञानिक तत्वों के ताने-बाने से संभावनाओं का संसार बोलता है कैसी होगी कल की दुनिया?मानव का भविष्य क्या है?विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास कल मनुष्य को क्या देगा?क्या मानव सुदूर अंतरिक्ष के ग्रह नक्षत्र में जा बसेगा?या जनसंख्या विस्फोट से वह आकाल और भुखमरी में निरीह होकर अपना ही सर्वनाश होते देखेगा?क्या वह मशीनों रोबोटों और कंप्यूटरों के हाथों खेलूंगा?या धरती के गर्भ अथवा सागरों के पेंदी में रहने लगेंगा?या अपने ही आविष्कारों से विध्वस करके अपने ही सभ्यता को नेस्तनाबूद कर इसके अवशेषों पर अपनी नई दुनिया बसाएगा?क्या मादा भ्रूण को नष्ट करते-करते कल केवल पुरुषों का समाज रह जाएगा?कैसी होंगी कल की दुनिया?" भूमंडलीकरण के कुचक्र में फंसकर विकसित एवं विकसनशील देश अपने यहां के प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन करना शुरू किया जिस के परिणाम स्वरुप इन देशों के सामने पारिस्थितिकी संकट की गंभीर समस्या निर्माण हो गए हैं। विज्ञानकथा साहित्य में पर्यावरणीय संकट को इस समय सबके सामने लाने की कोशिश की जा रही है। स्वच्छ हवा, साफ पानी मानव की बुनियादी जरूरत है, लेकिन यह आम आदमी को यह भी नसीब नहीं हो रही है। जल समस्या इतनी बिकट होती जा रही है कि आंकड़ों के अनुसार 40% जनसंख्या के पास कम से कम स्वच्छता वाला पर्याप्त पेयजल उपलब्ध नहीं है। जल संकट की प्रमुख वजह जंगलों का निरंतर कटते चले जाना परिणाम स्वरूप पेड़ पौधों में भी कमी आई है। इस संदर्भ में देवेंद्र मेवाड़ी की विज्ञान कथा 'दिल्ली मेंरी दिल्ली' इस समस्या को केंद्र रखती है। "लेकिन अब ना हैंडपंप है और न मोटरपंप क्योंकि जमीन के भीतर पानी इतना नीचे पहुंच चुका है कि उसे पंपो से निकालना संभव ही नहीं रहा। इसीलिए अब ना कहीं सुर्ख पलाश दहकते हैं, ना गुलमोहर फुलते हैं, न नीम और पीपल की पत्तियां सरसराती है।" जिस तरह हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे उसे देखकर लगता है कि वह दिन दूर नहीं जब समस्त मानवता असमय ही इतिहास बन जाएंगी। इस विकास के मोह

में हम इतने अंधे हो जा रहे हैं कि हम हमारे आने वाली पीढ़ी की हमें कोई चिंता ही नहीं है। जिस प्रगति से हम जंगल साफ कर रहे उसी प्रगती से पर्यावरण और हमारा आने वाला भविष्य हम खतरे में डाल रहे हैं। पृथ्वी पर घटते जा रहे जंगलों के कारण विश्व भर में जलवायु समस्या का उग्र रूप हमारे सामने आ रहा है। बढ़ती जलवायु समस्या से निर्मित ग्रीनहाउस गैस, भूमि के उपयोग में परिवर्तन, वर्षा के मौसम में बदलाव, समुद्र जल में वृद्धि, वन्यजीव प्रजाति का नुकसान, रोगों का प्रसार और आर्थिक नुकसान, जंगलों में आग ऐसी बहुत सारी समस्या मानव समाज के सामने दिखाई दे रही है। वह दिन दूर नहीं जब सब लोग इतिहास बन जाएंगे इस इसके बारे में 'अतीत में एकदिन' इस विज्ञान कथा में हमारी आंखें खोल देने वाला सच सामने आता है।" सब इतिहास बन गया है प्रोफेसर पिछले पांच सौ वर्षों से ना जाने कितने नासमझ लोगों ने कितने पेड़ पौधों को काट डाला। एक- एक पेड़ के साथ उसकी आगे आने वाली पीढ़ियां खत्म हो गई। परिणाम आपके सामने हैं प्रोफ़ेसर हमें यह कभी भूलना नहीं चाहिए कि एक पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं होता वह भविष्य का एक पूरा जंगल होता है" आज हम इसी भविष्य को खत्म करते जा रहे है। मानवीय जीवन प्रकृति के अस्तित्व पर टिका हुआ है। प्रकृति का संरक्षण मानवीय प्रयासों पर टिका हुआ है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति और मानव के बीच संतुलन को समझने के लिए अनेक अनुसंधान किये है। जब तक मानवीय गतिविधियां प्रकृति साथ संतुलन बनाए रखेंगी, मानवीय जीवन उतना ही सुरक्षित रहेगा। इनी पर्यावरणीय मुद्दों को विज्ञानकथा साहित्य की माध्यम से समाज के सामने लाया गया है। साथ ही विकास के अन्य मॉडलों की खोज करनी होगी तभी मानव का अस्तित्व कायम रह सकेगा।

संदर्भः

१. सुभाष शर्मा-पर्यावरण और विकास,सूचना और प्रसारण मंत्रलय ,नई दिल्ली-११००२, प्रथम संस्करण २०१७. पृ.सं.४५.

२. देवेंद्र मेवाड़ी- सभ्यता की खोज - भविष्य विज्ञानकथा संग्रह, नॅशनल पब्लिकेशन हाऊस , नई दिल्ली -११००२, प्रथम संस्करण -१९९९ पृ.सं.३३.

३. देवेंद्र मेवाड़ी-कोख- नॅशनल पब्लिकेशन हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज, नईदिल्ली-११००२,प्रथम संस्करण,१९९८.पृ.स.४.

४. देवेंद्र मेवाड़ी-दिल्ली मेरी दिल्ली,भविष्य विज्ञानकथा संग्रह, नॅशनल पब्लिकेशन हाउस अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११द्गद्ग२ प्रथम संस्करण १९९८ पृ.सं ३९.

५. देवेंद्र मेवाड़ी-अतीत में एक दिन पृ.सं.७१. वही.

कविता

अच्छे से मिलन

अच्छे से मिलन के बिना
अच्छाई की अनुभूति के बिना
मन खोई हुई चीज की तलाश कर रहा है !
जैसे नींद में नशे में व्यक्ति !
इच्छा और शरीर की अधिक पीड़ा !!
कानों ने सुना है , दिल ने माना है ,
कि कभी , कहीं ,
दूर से किसी ने उसकी झलक पकड़ी है।
हम उसके लिए तरसते हैं
क्योंकि हमें लगता है कि वह
झाड़ियों के नीचे छिपकर हमसे रूठ रहा है।
वाकई , प्यार एक दर्दनाक जुनून है !
मैं उससे पूछता हूँ
जो दूर-दूर छिपा है ,
जो हमें अनसुना करता है ,
क्या वह कभी पूछता है कि हम कैसे हैं ?
क्या वह कभी याद करता है कि हम कहाँ हैं ?

अर्चना चौबे

समय बोध का कथन है राजकुमार कुम्भज

कहानी क़िरदार माँगती है, उपन्यास पात्रें का सामंजस्य, कथाएँ तो कथानक पर ज़िन्दा हैं, निबंध अपनी शैली कहते हैं, लेख तथ्यों से जाने जाते हैं, रिपोतार्ज घटनाओं के सा श्य चलते हैं, यात्रा चित्र बनाती है, लघुकथा अपना सार छोड़ती हैं, डायरी में निजता बनी रहती है, समाचार में आँखों देखा लिखा जाता है पर कविता का परिचय उसकी ऊँचाई, गहराई, बिम्ब, प्रतीक, शैली और रस के सापेक्ष दिया जाता है।

कविता कोई एक कहन पर हज़ारों शब्दों की बचत का दूसरा नाम है। जो लिखा जा रहा है उसे तब तक कविता नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें शब्दों के कम ख़र्च में रस और सार न अंकित हो, कविता तब तक नहीं हो सकती जब तक वाक्य में प्रवीणता का दर्शन न हो, कविता समय के शिलालेख पर युगबोध होती है, इसीलिए कविता कहन का दर्पण होती है।

कविता युग की भाषा में युग का व्यवहार दर्शाती है, युग की इबारतें गढ़ती हुई इतिहास को महिमा मण्डित करती है, वहीं कविता कवि का ही नहीं वरन् तात्कालीन समाज के मनोभावों का परिचय भी देती है। इसीलिए एक कविता कई कहानियों पर भारी मानी जाती रही है। लिखे या समाहित किए जा रहे शब्दों की मापनी का ईमान भी यह कहता है कि बोझिल होने से पहले ही उसके रस को चरम देते हुए पाठक मन तक बात या कहें विचार पहुँचाने का नाम कविता है।

बहरहाल, बात जब कविता की हो और समय अपनी कहानी में एक ऐसे क़िरदार को जगह न दे, जो स्वयं पात्रों और बिम्बों की अदृश्य लड़ाई के बीच कुछ शब्द अकिंचन चुराकर रस उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखता जो, यह कतई सम्भव नहीं हैं। कविता के दीर्घकालीन इतिहास में जब भी 'मिनी पोएट्री' का उल्लेख होगा, तब-तब कालिदास के मालवा या कहें मुक्तिबोध के भीतर की कविताई के ध्वजवाहक राजकुमार कुम्भज की लेखन शैली और कहन को याद किया जाता रहेगा। राजकुमार कुम्भज का जन्म आज़ादी वाले बरस में ही गुलाम भारत के सुदीर्घ मध्यभारत प्रान्त के इन्दौर शहर में हुआ। संभावनाओं की अवधारणा के दीर्घकालिक इतिहास में प्रारम्भ से ही काव्य परम्परा का अनुष्ठान किया जाता रहा है। कविता हमेशा से हृदय के भावों का चित्रण होती है, और इसी शब्द चित्र में एक दर्शन निहित रहता है।

राजकुमार कुम्भज भी उसी परम्परा के कवि हैं, जो रसिक मन को समझकर नए बिम्बों और प्रतीकों के सहारे कल्पनाशीलता के अश्वों की सवारी करते हुए पाठकमन पर उसे अंकित करने में अपना गहरा दखल रखते हैं। प्रेम, अटखेलियाँ, लड़कपन, दर्शन, चोट और व्यंग्यात्मक शैली के बीच से प्रेम के प्रवाह को पुनः स्थापित करते हुए पाठकमन को भावना के साथ तर्कों से सामंजस्य बनाने के लिए विवश करने की शैली के धनी राजकुमार कुम्भज की कविताओं का चयन श्री सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय ने अपने संपादन में निकले चौथा सप्तक में सम्मिलित कर इस बात पर मोहर भी लगाई कि कविता के मानकों पर अमिट छाप छोड़ने का सामर्थ्य भी कुम्भज जी में विद्यमान है।

श्री कुम्भज जी की कविता 'थके-थके से शब्द हैं तो भी' में वे लिखते हैं कि-

थके-थके से शब्द हैं तो भी
थके-थके से ही हैं शब्दों के संवाहक तो भी
मैं ही नहीं एक अकेला किंतु हैं और-और भी अनेकों
जिनके सीने में अंगार भरी सड़कें
बर्फ़ से ढके हैं द्वीप उधार
बर्फ़ की चादर लपेट सोया है साहस
फैले हैं, फैले हैं अनलिखे पृ

डॉ. अर्पण जैन ''अविचल''
शंकर नगर, इंदौर
सम्पर्क-
+91-9893877455,
+91-9406653005

रोहन का पश्चाताप

रोहन 8वी क्लास में पढ़ता था। वह अपनी क्लास का सबसे शरारती व नालायक बच्चा था। उसका होमवर्क कभी पूरा नहीं होता था। टीचर्स के कारण पूछने पर वह रोज नये-नये झूठ बोलता और बहाने बनाता। उसके टीचर व परिवार वाले उसके झूठ बोलने की बुरी आदत से बहुत परेशान थे। लाख कोशिश करने के बाद भी रोहन सुधरने का नाम नही ले रहा था। रोहन के दादा जी ने भी उसे बहुत समझाया और कहा - बेटा रोहन, तुम्हारे झूठ बोलने की आदत के कारण किसी दिन तुम्हें बहुत बड़ा परिणाम भुगतना पड सकता है। लेकिन, रोहन कहाँ किसी की बात सुनने वाला था?

शनिवार, रविवार की छुट्टी के बाद स्कूल खुला। गर्मी के कारण सभी बच्चों का बुरा हाल हो रहा था। बच्चे गर्मी के बारे में ही बात कर रहे थे कि तभी क्लास में हिंदी के सर शिवकुमार का प्रवेश हुआ और सभी बच्चे शांत हो गये। शिवकुमार सर ने सब बच्चों को बताया कि दो दिनों के बाद हम सब पास के गांव में पिकनिक पर जाने वाले है। ये सुनकर बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि एक तो पढ़ाई से छुट्टी दूसरा गांव के सुंदर वातावरण में घूमने का मौका मिल रहा था।

आज पिकनिक का दिन है सभी बच्चे अच्छा - अच्छा खाना पैक करवाकर लायें है। रोहन ने भी मम्मी से कुछ स्पेशल बनवाया है। स्कूल बस में बैठकर सभी गाँव में पहुंच जाते हैं। वहाँ बहुत सुंदर फलों के बाग में सब के ठहरने का इंतजाम था। बाग में बने बडे से चबूतरे पर बैठकर बच्चे ठंडी और ताजी हवा का आनंद लेने लगे। बाग के माली ने फलों से भरी टोकरी शिवकुमार सर को बच्चों के खाने के लिए दी। माली ने सभी बच्चों से कहा-कि बाग के पीछे से एक नदी बहती है कोई भी वहां न जाये। सब बच्चे खाने का, खेलने, कूदने का व गांव का मजा ले रहे थे। रोहन ने देखा कि सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं तभी उसने अपने दोस्त 'अजय और राजू' से नदी में नहाने के लिए बोला - लेकिन, उन्होंने ये कहकर मना कर दिया कि उन्हें तैरना नही आता। और अगर सर को पता चला तो बहुत डांट पडेगी। लेकिन, रोहन को तो नदी पर जाना था। इसलिए उसने अजय और राजू से झूठ बोल दिया कि उसे तैरना आता है। और हम सर के पता चलने से पहले ही वापिस आ जायेंगे। काफी आनाकानी करने के बाद आखिर अजय और राजू को रोहन के साथ नदी पर जाना पड़ा। वे तीनों नहाने के लिए जैसे ही नदी में उतरे अचानक अजय का पैर फिसल गया। अजय गिरने ही वाला था कि राजू और रोहन ने उसका हाथ पकड़ लिया। लेकिन, पानी का बहाव बहुत तेज होने के कारण वे तीनों बहने लगे। तभी उन्हें एक पत्थर दिखाई दिया उन्होंने उसे कसकर पकड लिया और चिल्लाने लगे। अजय ने रोहन से कहा - "रोहन तुम्हें तो तैरना आता है।" तुम हम तीनों की जान बचा सकते हो। रोहन ने रोते हुए अजय से कहा - मुझे माफ कर दो, मुझे तैरना नही आता मैने तुम दोनों से झूठ बोला था। ये सुनकर अजय और राजू के होश उड़ गये और वो दोनों जोर - जोर से "बचाओं - बचाओ" चिल्लाने लगे। नदी के पास से गुजरते हुए गांव के एक आदमी ने उनकी आवाज सुनी और वह उन तीनों को बचाने के लिये नदी में कूद पडा। आज रोहन को दादाजी की कही वो बात "कि झूठ के कारण किसी दिन तुम्हें बहुत बडा परिणाम भुगताना पडेगा" याद आ रही थी। जैसे - तैसे गांव वाले ने उन तीनों को नदी से बाहर निकाला। इतने में शोर सुनकर शिवकुमार सर और बाकी बच्चें भी वहां आ गये। अजय और राजू ने सर को पूरी बात बताई, जिसे सुन कर सर को बहुत गुस्सा आ रहा था। सर ने रोहन को बहुत डांटा और कहा - आज तुम्हारे झूठ के कारण तुम तीनों मरते - मरते बचे हो।रोहन अगर तुम्हें आज भी अक्ल नही आई तो कभी नही आयेगी। रोहन रोता - रोता सर के पैरों में गिर पडा। उसने सर से अपनी गलती की माफी मांगी, उसे अपनी भूल का अहसास हो गया था। उसकी आंखों में पश्चाताप के आंसू थे। आज रोहन मे बदलाव देखकर सर बहुत खुश हुए, उन्होंने रोहन को उठाया और अपने गले से लगा लिया।

निधि "मानसिंह"
कैथल (हरियाणा)
(भारत)

प्रगति का अक्षय मंत्र

राजेन्द्र शर्मा
नोएडा , 201301
+91 98102 20986

प्रथम प्रभु का ध्यान कर
फिर लक्ष्य पर संधान कर
मस्तिष्क में दृढ़ ठानकर
मंज़िल तरफ़ प्रस्थान कर

1.

न ध्यान हो इधर-उधर
न भटकना कभी डगर
प्रयास कर, अभ्यास कर
निरंतर ....निरंतर.....

2.

हो चाह शुद्ध प्रखर मुखर
उत्साह ज्यों अचल शिखर
प्रतिभा स्वयं होगी निखर
प्रगति के पथ होगा सफ़र।

3.

हैं जो बड़े ,सम्मान कर
झुक मातृ-भू का मान कर
बेशक से स्वाभिमान कर
ना भूल कर अभिमान कर।

4.

जीवन भी है हर पग समर
लड़..., हार न स्वीकार कर
तानकर हिम्मत का शर
कठिनाइयों पर वार कर

5.

ईश्वर को अलपत कर्म कर
निःस्वार्थ सारे धर्म कर
एक बार कर ले देख कर
जीवन बनेगा अग्रसर।

टुकुर टुकुर

प्रेम न दुःख है न सुख
रोग है न वियोग
आदि है न अंत

प्रेम एक बंजारा है
एक जोगी है
एक दरवेश है

मस्त मौला फ़क़ीर
जिस देहरी को चूमता है
खुदा बना देता है

सजदा और इबादत टुकुर
टुकुर देखते रह जाते हैं

वंदना गुप्ता

हिन्दी का गुणगान

हिन्दी भारत की शान है हिन्दी,
विश्व की पहचान है हिन्दी।

आओ हम,सदा, इसे अपनाये
हिन्दी का गुणगान, सर्वत्र गाये
हम सबके लिए वरदान है हिन्दी,
इस देश की शान है हिन्दी।

हिन्दी है सबका मान है
हिन्दी भाषा में सबका सम्मान है।
इस देश की आन, बान है, हिन्दी
भारत की पहचान है हिन्दी।

उत्तर से दक्षिण तक
पूरब से पश्चिम तक
गीता का ज्ञान है हिन्दी
मातृभूमि की शान है हिन्दी।

भारत की शान है हिन्दी
घर-घर की पहचान है हिन्दी।

जयप्रकाश सूर्य वंशी, किरण
साकेत नगर नागपुर
महाराष्ट्र

खरगोश

डोर बेल बजी थी, रोहित ने अखबार पढ़ते हुए इस उम्मीद में शैली की ओर नजर डाली कि वो उठ कर देख ले, पर वो निलवकार भाव से सोफे ओर बैठी चाय के घूंट भरती रही मानो कह रही हो, मैं ही क्यों उठूं?, तुम भी तो देख सकते हो, और उसके इस बर्ताव से मन ही मन झल्लाते हुए रोहित उठने का उपक्रम कर ही रहा था कि पलाश दौड़ता हुआ आ गया।

और तभी उसकी चहकती हुई आवाज़ सुनाई दी दादी, बाबा!!! उत्साह उसकी आवाज़ में साफ साफ सुनाई पड़ रहा था।

इस बार चौंकने की बारी रोहित और शैली की थी। अरे! माँ, पापा, आप?अचानक?

सरप्राइज! मां ने हंसते और चहकते हुए कहा।

थोड़ी ही देर में घर का माहौल बदल चुका था। पलाश की हंसी और उत्साह का तो कोई ठिकाना ही नही था।

रूटीन में बंधा, उबाऊ सा घर चहल पहल से आनंदित हो चुका था। रोज ही कुछ नया बनता, ऑफिस से आ कर शैली, रोहित और स्कूल से आकर

पलाश, खाली न बैठे रहते।

बस्ता पटक पलाश कभी दादी तो कभी बाबा के गले मे बाहें डाल कर झूल जाता।

दादी गर्म खाना देती।

ऐसे में ही एक दिन मां ने रोहित से कहा, रोहित पलाश बहुत अकेला है, अब उसका भी कोई भाई या बहन आना चाहिए।

5 वर्षीय पलाश ताली बजाते हुए कूदने लगा, हुर्रे मैं भी तो मम्मी से बहन ही मांगता हूं, पर मम्मी डांट देती है।

और रोहित! फौरन बोला, कैसी बातें करती हो मां?आजकल के जमाने मे कोई दो बच्चे करता है भला?

एक ही पालना मुश्किल है। इस बार शैली ने भी रोहित की हां में हां मिलाई।

अचानक शैली की नज़र पलाश के उतरे हुए मुँह पर पड़ी।

तरस आया उसे पलाश पर, पर दोनो ही एक बच्चे के अपने निर्णय पर अडिग थे। अगले दिन मां पापा लखनऊ वापस चले गए।

पलाश खूब रोया, ये देख जाते जाते दादी बाबा भी रो दिए। उसके सर पर हाथ फेरा गले लगाया और भारी मन से विदा ली।

घर फिर यंत्रवत चलने लगा।

शैली की आंखों से इस बार पलाश का उतरा हुआ चेहरा न जा रहा था।

इसी उलझन में वो एक दिन अपनी बाल सखा दीप्ति के यहां पहुंची।

दीप्ति उसे देख खुशी से चहकी, अरे तू! ये शाम को सूरज मेरे घर?और दोनो हंस दी।

चाय पीते हुए, उसने अपनी समस्या दीप्ति को बताई, दीप्ति के भी एक ही बेटी थी। पर शैली की समस्या पर वो हंस दी, अरे बस, इतनी छोटी सी बात।

ठहर मैं अभी लाती हूँ तेरी समस्या का हल पलाश अभी बहुत छोटा है, उसे दोस्तों के अलावा भी घर पर एक कंपनी चाहिए ही जब तक वो थोड़ा बड़ा नही हो जाता।

दीप्ति जब लौटी तो उसके हाथों में दो नन्हे खरगोश थे

एक सफेद और एक चितकबरा । बहुत प्यारे, ले ये पलाश के लिए मौसी की गिफ्ट।

तभी उसके मोबाइल की घंटी बजी, मम्मी आप कहाँ हैं?ये पलाश था

आती हूँ बच्चे, फिर हम लोग पार्टी करते है हंसते हुए उसने कहा। और दीप्ति के गले लग उसे धन्यवाद दे घर चल पड़ी शैली।

घंटी की आवाज सुन पलाश ने ही दरवाजा खोला?

आप कहाँ चली गई थी?और दोनो हाथ पीछे देख पूछा, आपके हाथों में क्या है?

तेरी गिफ्ट, शैली ने हंसते हुए कहा और दोनो खरगोश पलाश के हाथों में पकड़ा दिए। लो दो दो दोस्त----

और पलाश खुशी से उन नर्म गुदगुदे दोस्तों को पाकर समझ नही पा रहा था कि अपनी खुशी कैसे बताए?

क्या नाम रखेगा?एक का चुनमुन, और दूसरे का क्या रखूं मम्मी?

दूसरे का पलाश रख देते हैं, धत! हंसते हुए बोला पलाश।

दूसरे का गुदगुदी रखता हूँ, और समवेत हंसी।

तब से दो वर्ष बीत चुके, रोहित और शैली जब भी घर लौटते उन्हें पलाश खुश मिलता, उसके पास ढेरों किस्से होते चुनमुन, और गुदगुदी के, इसने आज ये किया, वो मेरी गोद मे कूद गया, दोनो मेरे साथ सो गए आदि आदि।

और उल्लासमय वातावरण हो चुका था उस घर का खरगोशों के कारण।

रश्मि सिन्हा
ग्रेटर नोएडा
मो. 7617029029

हमारी भाषाएं हमारी पहचान हैं

राजकुमार जैन राजन
चित्तौड़गढ़, राजस्थान
मोबाइल : 9828219919

भाषा अभिव्यक्ति का एक सहज माध्यम है। इसके साथ ही समाज और संस्कृति को भी जोड़ा जाता है। संस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। भाषाओं की उम्र मनुष्य की उम्र की तुलना में सैंकड़ों-हज़ारों गुना लंबी होती है इसलिए भाषा व्यक्तियों के एक पूरे समाज को, एक समूची सभ्यता को भी परिभाषित करती है। भारत में भाषिक बहुलता आज भी सामाजिक व्यवहार का एक अहम हिस्सा है। मानव कैसे जीवन यापन करता था, उसका भूतकाल किस तरह का था, इस तरह देखें तो भाषा हमारा पूरा इतिहास भी है। हमारी भाषा हमारी पहचान होती है और यही पहचान भाषा को जिंदा रखती है। उसे शक्ति देती है। इसी पहचान के चलते व्यक्ति अपनी भाषा से प्यार करता है, उस पर गर्व करता है।

यूं तो भाषाएं बोले जाने, लिखे जाने से ही बचती हैं, पर वे बची रहें इसके लिए निरन्तर सामूहिक प्रयास जारी रहने चाहिए। हर भाषा को जीवित रहने और विकसित होने का अधिकार और अवसर मिलना चाहिए। इसकी उपेक्षा का मतलब अपनी संस्कृति, अपनी पहचान के प्रति उदासीन होना है। सम्पूर्ण विश्व मिलकर सांस्कृतिक व भाषिक विविधताओं की रक्षा करे। इसी लिए यूनेस्को ने नारा दिया है- 'भाषाओं की आकाशगंगा में हर शब्द एक सितारा होता है।' यूं तो हमारा देश भारत हज़ारों भाषाओं वाला देश है। हमारे देश में एक कहावत प्रचलित है- 'कोस-कोस पर भाषा बदले, चार कोस पर वाणी' मतलब भौगोलिक दूरी के साथ ही बोलने का लहज़ा भी बदलता जाता है। आज भारत की मातृभाषाओं की चर्चा की जाए तो यह संविधान की आठवीं अनुसूची की 22 भाषाओं तक ही सीमित नहीं हैं अपितु भाषा के रूप में 105 से भी अधिक भाषाएं भारत में सदियों से प्रवाहमान हैं। इनमें बोलियों को भी जोड़ लें तो यह आंकड़ा 780 के करीब पहुंचता है। इतनी सारी भाषाओं, बोलियों और लहजों के चलते हमें शायद इस बात का अहसास ही नहीं होता कि कब और कहाँ हमारी ही कोई भाषा विलुप्त हो रही है और उसके साथ ही ज्ञान-विज्ञान की एक विरासत ही खत्म हो जाती है। भाषा समाप्त होती है तो संस्कृति पर खतरा होता है और संस्कृति के नष्ट होने पर समाज पर संकट आता है। हर एक भाषा में अपना एक ज्ञान होता है जो साहित्य, लोक, विज्ञान के रूप में हैं। यदि एक भाषा समाप्त होती है तो उसकी पूरी ज्ञान परम्परा समूल नष्ट हो जाती है। मातृभाषा ही हमारी संवेदनाओं की वाहक होती है।

वस्तुतः मातृभाषा उस परिवेश की भाषा होती है, जिसमें शिशु का जन्म होता है, उसका पालन-पोषण होता है। जब इस संसार में बच्चे का पदार्पण होता है, उसकी पहली भाषा मातृभाषा होती है। सोते-जागते बच्चों को हर समय मातृभाषा की गूंज सुनाई देती हैं। उस भाषा को सीखना सहज और सरल होता है। मातृभाषा में सीखना सरल होता है क्योंकि बालक उस भाषा के साथ साँस लेता बड़ा होता है। वह उसकी भाषा होती है और उस भाषा को जीवन-व्यवहार में लाना उसका स्वभाविक अधिकार होता है। इस परिप्रेक्ष्य में जब हम हिंदी के संदर्भ में विचार करते हैं तो यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण ॠहदी प्रदेश की भाषा हिंदी है। यह हिंदी केवल खड़ी बोली का परिमार्जित रूप नहीं है अपितु हिंदी प्रदेश में बोली जाने वाली सभी बोलियों का समुच्चय है। परन्तु भारत में राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी कारणों से भाषा और मातृभाषा का सवाल उलझता ही चला गया। आज की कटु सच्चाई यही है।

बहुभाषिकता भारतीय संस्कृति का मूल स्वभाव है। यहाँ की भाषाओं में परस्पर संबंध भी हैं। वहीं हिंदी भाषा की व्यापकता व संप्रेषणीयता इतनी बढ़ी है कि रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ ही रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। दरअसल हिंदी ही एक मात्र भाषा है जिसके जरिये भारत के छोटे से छोटे गाँव-कस्बे के अपेक्षाकृत कम पढ़े लिखे व्यक्ति को भी अपनी ओर आकृष्ट किया जा सकता है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ऐ.पी.जे.अब्दुल कलाम ने स्वयं के अपने अनुभवों के आधार पर एक जगह कहा था कि, 'मैं अच्छा वैज्ञानिक इस लिए बन पाया कि मैंने अपनी शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की थी।' मातृभाषा के माध्यम से सीखने का बौद्धिक विकास पर बहुआयामी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रसन्नता की बात है कि हमारी नई शिक्षा नीति भी सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, विकास व उनको सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। हिंदी भाषा-भाषी समुदाय विशाल है किंतु उसे इस विशालता का अनुमान नहीं होता। हमारी हिंदी में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने की पूरी क्षमता है। इस क्षमता की पहचान अगर नहीं की जाएगी तो हिंदी तकनीकी प्रगति की दौड़ में काफी पीछे रह जायेगी। दुर्भाग्य से हम इस पहचान के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं। हम हिंदी भाषी ही इसकी उपेक्षा कर रहे हैं और अपनी ही मातृभाषा के विरोध में खड़े हो रहे हैं।

अंग्रेजी के मोहपाश में बंधे हमें यह क्यों नहीं दिखाई देता है कि इस मानसिकता के चलते हम अपनी ही भाषा की चिन्दियाँ बिखेर रहे हैं। हमारा हिंदी समाज ही भाषा की इस हरियाली को रेगिस्तान में

बदलने को क्यूं आमदा है। अंग्रेजी का हौव्वा केवल भ्रम पर टिका हुआ है। विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिक अध्ययन यह स्थापित कर चुके हैं कि मातृभाषा में सीखना प्रभावी तरीके से सीखने का आधार होता है। आज 'सबके लिए शिक्षा' का लक्ष्य सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस लक्ष्य की पूलत मातृभाषा के बिना अधूरी है। केंद्र सरकार द्वारा इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों का सुखद परिणाम दिखाई देने लगा है।

अपनी भाषा में बोलते हुए हम हीन भावना से ग्रसित हो हिचकते हैं कि कहीं हमें 'अनपढ़' न समझ लिया जाए। यह सिर्फ हिंदी बोलने वालों के साथ ही नहीं हो रहा है, बाकी भारतीय भाषाएं बोलने वालों में भी यह प्रवृति पनप रही है। हिंदी-समाज इससे कुछ ज्यादा ही प्रभावित हो रहा है। अपनी भाषा के सत्य से मुंह मोड़कर अंग्रेजी को जिस तरह एक अकाट्य विकल्प की तरह बैठा दिया गया है, उसने विचार और कार्य को अंग्रेजी पर आश्रित बना दिया है। पिछले कुछ वर्षो में अखबारों-पत्रिकाओं, संचार माध्यमों, सिनेमा-टी.वी. चैनलों ने भी एक ऐसी 'हिंगलिश' भाषा ईजाद करने की षड़यंत्रपूर्वक कोशिश की है जो चिंता का विषय था, पर जनता की उसे स्वीकृति नहीं मिली। इस लिए वे वापस हिंदी भाषा के मूल स्वरूप की ओर लौटने लगे हैं। यह प्रसन्नता का विषय है। हाँ, चिंता का विषय यह जरूर हैं कि अभिभावक बचपन से ही अपने बच्चों को विदेशी भाषा और विदेश में पढ़ने का विकल्प उपलब्ध करवाते हैं। यह आज 'स्टेटस सिंबल' बन गया है। हमारी भाषा में, हमारे ही देश में उच्चस्तरीय शिक्षा उपलब्ध है तो फिर हम क्यों नहीं इस मानसिक गुलामी से उबर पा रहे हैं ?विश्व के किसी भी देश में विदेशी भाषा को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। विदेशी भाषा में विदेश में पढ़ाई करने की आत्म मुग्धता में डूबे अभिभावक तब सरकार को कोसने लगते हैं जब यूक्रेन जैसी युद्ध की परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं। ऐसा कभी भी, कहीं भी हो सकता है, तो फिर क्यों नहीं हम अपने बच्चों को अपने ही देश में, अपनी ही भाषा में उच्च शिक्षा दिलवाएं। इससे हमारे बच्चे हमारी सांस तिक विरासत व हमारी जड़ों से भी जुड़े रहेंगे। 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाते हुए हम प्रण लें कि विदेशी भाषा की गुलाम मानसिकता को त्याग देंगे तभी भारत दुनिया में फिर से 'विश्वगुरु' बनने की ओर अग्रसर हो पायेगा।
हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं में रचे साहित्य पर भी खतरा मंडरा रहा है। उसे वैश्विक पहचान नहीं मिल पा रही है। पहले ज्ञान और मनोरंजन दोनों की उपस्थिति किताबों में थी।आम पाठकों को लुभाती किताबों व पत्रिकाओं की एक विशाल और आकर्षक दुनिया थी। रचनाकार भी अपनी पूरी ऊर्जा का उपयोग कर एक सुंदर व प्रभावित करने वाली रचना का सृजन करता था।आज यह परम्परा समाप्त होती जा रही है क्योंकि अंग्रेजी संस्कृति के पागलपन में हमने हिंदी व अन्य भाषायी साहित्य से दूरी बना ली है। पठन-पाठन की परंपरा को हम नकारते जा रहे हैं। दूसरी ओर प्रायोजित लेखन, प्रकाशन व सम्मान का धंधा भी पाठकों को दिग्भ्रमित कर रहा है। प्रतिदिन ऑनलाइन सम्मान, प्रशस्ति पत्रों ने भी लेखकों को आत्ममुग्ध कर रखा है। कुल जमा आठ-दस रचनाएँ भी नहीं लिखी होंगी कि उन्हें 'प्रेमचंद साहित्य सम्मान', 'सुभद्रा कुमारी चौहान काव्य सम्मान', 'महादेवी वर्मा स्मृति हिंदी गौरव सम्मान', 'धर्मवीर भारती राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान' जैसे कई सम्मानों से नवाजा जाता है। इन प्रशस्ति पत्रें को फेसबुक, इंस्टाग्राम, कू, व्हाट्सएप्प जैसे सोसल मीडिया प्लेटफार्म पर चस्पा कर रचनाकार स्वयं को 'महान' 'मानने का भ्रम पाले रहता है। पैसा लेकर साझा संग्रह व सम्मान का गोरख धंधा करने वाले कई 'साहित्य माफिया' पनपते जा रहे हैं जिन्होंने साहित्य को व्यवसायिक उत्पाद बना दिया है और लाखों का वारा-न्यारा हो रहा है। यह कृत्य भी भाषा के आभामंडल को धुंधला कर रहा है। प्रबुद्ध रचनाकारों व पाठकों से भी प्रतिबद्धता अपेक्षित है कि वे इन प्रयासों का हर मंच पर विरोध करें।

सवाल केवल हिंदी भाषा का ही नहीं, अपनी अन्य भाषाओं का भी है। सब तरह की साहित्य अकादमियां राजनीति की शिकार है। वर्षो से न उनमें निदेशक नियुक्त हुए हैं न साहित्यिक गतिविधियाँ ही संचालित हो पा रही है। ऐसे में 'मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी' के नव नियुक्त निदेशक डॉ. विकास दवे ने अपनी नियुक्ति के साथ ही वर्षो से व्याप्त साहित्यिक पतझड को बहार में बदलने का महत्वपूर्ण, स्तुत्य, प्रेरक व अभिनन्दनीय कार्य प्रारंभ किया है। शासन व साहित्यकारों के बीच सेतु का काम करने वाली साहित्य अकादमी ने आपके निदेशक बनने के बाद जिस तरह से सक्रियता दिखाते हुए पूरे राज्य के विभिन्न शहरों में लगातार साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से साहित्यकारों के साथ जनभागीदारी को भी महत्व दिया है, यह स्तुत्य है। आपके प्रयासों का ही प्रतिफल है कि साहित्य अकादमी ने पिछले चार वर्षो से लंबित पुरस्कारों के लिए न केवल एक साथ प्रविष्टियाँ आमंत्रित की है बल्कि प्रदेश की छः बोलियों के साहित्य के लिए भी (51 हजार रुपये प्रत्येक) पुरस्कारों की घोषणा है। डॉ. विकास दवे जी की इस सक्रियता, चैतन्यता से हिंदी के साथ ही अन्य भाषाओं के साहित्य जगत में आशा का संचार होगा। साहित्य व संस्कृति फिर से पल्लवित हो मुस्कराने लगेगी। काश! अन्य राज्यों की सरकारें भी ऐसा कर पाए तो हिंदी को विश्व भाषा का दर्जा प्राप्त होने से कोई नहीं रोक सकेगा, वहीं हमें अपनी किसी भी क्षेत्रीय भाषा की मौत पर शोक गीत गाने को भी बाध्य नहीं होना पड़ेगा। हमारी भाषाएं हमारी पहचान हैं। उनका जीवित रहना हमारी पहचान का जीवित रहना है। भाषा के भविष्य को जीवन के भविष्य से जोड़कर ही देखना होगा।भारत के विभिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाएं समृद्ध तभी होगी जब मातृ भाषाओं में परस्पर संपर्क, सम्प्रेषण, समन्वय, सहयोग तथा विचारों एवम भावनाओं का विनिमय आदान-प्रदान होगा।

असभ्यता का आक्रमण

–समीक्षक : डॉ. धनेश द्विवेदी

विगत दिनों डायमंड प्रकाशन से प्रकाशित अरविंद पथिक के सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'असभ्यता का आक्रमण 'ने मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया। आकर्षक कलेवर और शीर्षक के वैशिष्ट्य से प्रभावित होकर जब मैंने इसे पढना प्रारंभ किया तो दो सौ छासठ पृष्ठ की पुस्तक को आद्योपन्त एक ही बैठक में पढ़ गया। कथानक की रोचकता एवं उपन्यास की प्रवाहपूर्ण भाषा इसे पठनीय बनाती है....

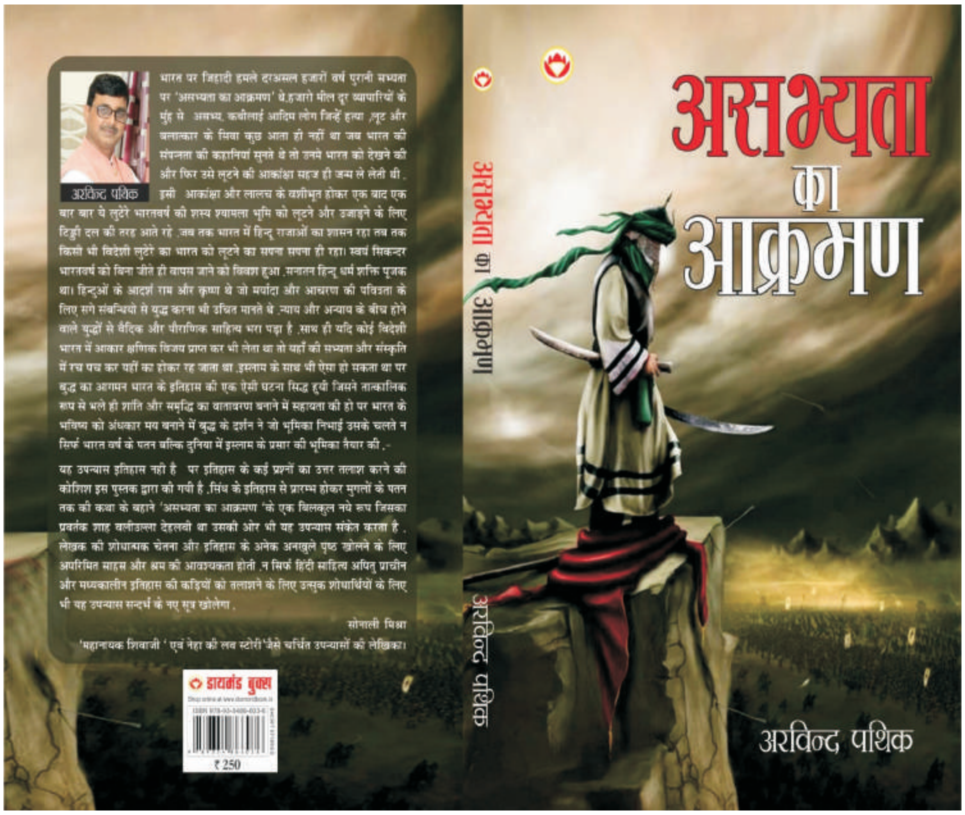

यों तो पुस्तक का शीर्षक 'असभ्यता का आक्रमण' प्रख्यात अमेरिकी लेखक सैमुअल हटिंगटन की पुस्तक 'क्लैसेज ऑफ़ सिविलाईजेशन' से प्रेरित लगता है, पर इस उपन्यास की विषय वस्तु 'सभ्यताओं का टकराव' न होकर एक सभ्य और सांस्कृतिक रूप से श्रेष्ठ राष्ट्र और समाज पर नितांत असभ्य बर्बर समाज का ऐसा नृशंस आक्रमण है, जो अभी तक थमा नहीं। अपितु किसी न किसी रूप में यह आक्रमण आज भी जारी है।

सामान्तया भारत पर पहला अरब आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम के सिंध पर हमले को बताया जाता है पर लेखक ने क्रमबद्ध ढंग से मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण से पहले कम से कम छः ऐसे आक्रमण जिनमें आक्रमणकारी विफल हो गये थे, का रोचक वर्णन इस पुस्तक में किया है। पुस्तक की भूमिका में लेखक ने पुस्तक के लेखन का मन्तव्य स्पष्ट करते हुए लिखा है---

"पौराणिक कथाओं से लेकर आधुनिक इतिहास तक की कड़ियों को जोड़ने के क्रम में मैंने कहीं कहीं लेखकीय स्वायत्ता का उपयोग किया है, पर ऐसा करते हुए मैंने कहीं भी कोरी गल्प या स्थापित तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने में कोई रुचि नहीं दिखाई। मैं चाहता तो पुस्तक को इतिहास की पुस्तक के रूप में भी लिख सकता था। इसके लिए पर्याप्त सन्दर्भ और प्रमाणिक स्रोत भी0 मेरे पास हैं परन्तु इतिहास के रूखे निर्मम अंदाज़ को मेरी चेतना स्वीकार नहीं कर पाती। मेरा स्पष्ट मानना है कि ऐसा कोई भी लेखन जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में गौरव का भाव न भरता हो उसे लिखने का कोई अर्थ नहीं...."

'असभ्यता का आक्रमण' को पढ़ने के बाद मैं कह सकता हूँ कि

लेखक इस उपन्यास को लिखने के अपने घोषित उद्द्देश्य को प्राप्त करने में काफी हद तक सफल रहा है। 653 ई. से 1763 ई. तक ग्यारह सौ वर्षों के 'भारत के इतिहास 'को दो सौ बासठ पृष्ठों में समेटने की सोचना भी, न सिर्फ दुष्कर अपितु बचकाना प्रयास ही कहलायेगा। यह कार्य तब और मुश्किल हो जाना स्वाभाविक है जब कथानक की कड़ियाँ जोड़ने, परिस्थितयों का विश्लेष्ण करने और समस्या का समाधान प्रस्तुत करने की कोशिशे भी इस प्रयास में शामिल हो गयी हो।

असभ्यता और सभ्यता का भेद स्थापित करते समय यदि लेखक आर्क्मणकारियों के अमानुषिक अत्याचारों की ओर संकेत करता है तो दूसरी ओर प्राचीन भारत में युद्धों में प्राप्त की जाने वाली विजयों तक के वर्गीकृत होने का उल्लेख करता है..बर्बर आक्रमणों का सामना भारतीयों ने किस साहस और वीरता का अप्रितम प्रदर्शन करते हुए किया इसका उल्लेख तो इस उपन्यास में लेखक ने किया ही है, साथ ही भारतवर्ष की धरती पर हुए 'प्रथम जौहर' तथा पराजित राजा द्वारा जीवित अग्नि में प्रवेश कर जीवन लीला समाप्त कर लेने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।

उपन्यास के कथानक का प्रारंभ प्रोफेसर अरूण और उनके सहकर्मी प्रोफेसर हारुन अली के बीच एक सामान्य चर्चा के दौरान ''पाकिस्तान किसने बनवाया ?'' प्रश्न और उसके उत्तर से उत्पन्न असहज स्थिति को संभालने की कोशिश से होता है। यही प्रश्न तब एक बार फिर एक नए रूप में सामने आता है जब प्रोफेसर अरूण अपने कालेज के जमाने के मित्रों के साथ एक बार फिर उलझ जाते हैं।

पने द्वन्द्वसे उलझते हुए उपन्यास का नायक अरूण हरिद्वार चला जाता है और वहां कुछ युवको से वार्तालाप के दौरान वह नवयुवकों से राष्ट्र और समाज के लिए उठ खड़े होने का आह्वान करता है। उनमे से एक युवक अजय, प्रोफेसर अरूण पर भावनाओं को भड़काने का आरोप लगाता है। अरूण युवक को सत्य को स्वीकारने की चुनौती देता है और अपने ठहरने के स्थान पर आकर राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में जानने के लिए आने का निमत्रण देता है। युवक अगले दिन 'शांति सदन' (प्रोफेसर अरूण के ठहरने के स्थान पर पहुँचता है। प्रोफेसर अरूण अजय को भारतवर्ष पर हुए असभ्य बर्बर आक्रमणों की कहानी सुनाने के क्रम भारतवर्ष के इतिहास के एक ऐसे पक्ष से परिचित कराता है जिसे अजय और उसकी पीढ़ी ने न तो पहले कभी सुना था और ना ही पढ़ा था।

'असभ्यता का आक्रमण' की कहानी सिर्फ भारतवर्ष हुए असभ्य बर्बर हमलो तक सीमित नहीं है अपितु चंगेज खान और हलाकू खान जैसे क्रूर मंगोलों आक्रान्ताओं द्वारा पूरी दुनिया विशेषकर अरबो और ईरानियो के साथ की गयी क्रूरता का भी वर्णन करती है। इसके साथ ही भारतवर्ष के इतिहास में जाटों की वीरता, दक्षिण में विद्यारण्य माधवाचार्य की प्रेरणा से विजयनगर साम्राज्य की स्थापना और संगम वंश की नीव हरिहर राय और बुक्का राय द्वारा रखने का सजीव वर्णन कर लेखक ने मध्यकालीन भारत के इतिहास के एक गौरवशाली पृष्ठ की झलक भी दिखलाई है।

इसके अतिरिक्त मुगलों के पतन। शाह वलीउल्ला देहलवी की जिहादी विचारधारा। जाटों के इतिहास और भारत की धरती पर अंग्रेजों के आगमन तक की कहानी यह उपन्यास कहता है।

लेखक का उद्देश्य इतिहास के अज्ञात और गुमनाम पृष्ठों को सामने लाने का अधिक है बनिस्वत ज्ञात इतिहास के इसलिए वह राणा कुम्भा और जसवंतसिंह की चर्चा तो करता है पर मुगलों के लगभग पौने दो सौ वर्षों के शासन के बारे में अधिक कुछ नहीं कहता।

इस उपन्यास को पढ़ते हुए इतिहास की किसी पुस्तक को पढने का अह्सास होता है, पर 'जब लेखक 'आइडिया ऑफ़ इण्डिया' और इलियट और डाउसन जैसे पश्चिमी विचारकों को उद्धृत करते हुए भारत के गौरवशाली अतीत की चर्चा करता है तो उसका दृष्टिकोण समझ आता है।

इस तरह के अनेक प्रसंगो ने इस पुस्तक को पठनीय बना दिया है। यदपि लेखक ने पुस्तक को उपन्यास कहा है पर पुस्तक पढ़ते हुए इतिहास से गुजरने का भाव ही मन में आता है। तीन सौ रूपये मात्र में आकर्षक कलेवर और साज सज्जा वाली पेपरबैक में उपलब्ध यह पुस्तक संग्रहनीय है। ऐतिहासिक उपन्यास लेखको वह एक परम्परा जिसे आचार्य चतुरसेन और नरेंद्र कोहली जैसे प्रख्यात लेखको ने पुष्पित पल्लवित किया था, 'असभ्यता का आक्रमण' का सृजन कर अरविन्द पथिक द्वारा उसी परम्परा को आगे बढाये जाने की संभावना है।

सबसे बड़ा सत्य और राजरानी

हरीश नवल
पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063,
9818999225

सन् 1969 में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज का छात्र था। हमारे कॉलेज की पत्रिका 'इंद्रप्रस्थ' का छात्र संपादक का दायित्व मुझे दिया गया। मैंने विद्यार्थियों से रचनाएँ मांगने के लिए नोटिस लगा दिए। लगभग दो महीने में मेरे पास पर्याप्त रचनाएँ हो गईं और मैंने विधिवत संपादन कर एक डमी बना ली जिसे हमारे परामर्शदाता डॉ. भरतसिंह उपाध्याय ने स्वी त कर लिया और मुद्रक को दे दिया।

मेरे पास मुद्रक से संशोधन के लिए प्रूफ आने लगे और मैं उनके संशोधन में जुट गया। तभी एक दिन एम.ए. की एक छात्र राजरानी सूद मेरे पास आई और कहा कि वह अपना एक लेख पत्रिका के लिए देना चाहती है। मैंने उन्हें बताया कि सारे लेख आ चुके हैं और मैं प्रूफ देख रहा हूँ इसलिए अब कोई और रचना जा नहीं सकती, मैं क्षमा चाहता हूँ। इसपर राजरानी ने बहुत आग्रह किया कि उसकी शादी होने वाली है उसके बाद फिर कभी उसकी रचना छप नहीं सकेगी। मैंने उससे कहा तुम लेखिका हो किसी भी पत्रिका में शादी के बाद छपवा लेना लेकिन उसका कहना था कि वह कॉलेज की पत्रिका में छपवाएगी और यह उसकी अंतिम रचना होगी। शादी के बाद वह कहाँ लिख पाएगी।

हारकर मैंने उससे कहा कि वह अपनी रचना दे दे मैं उपाध्याय सर से पूछ लूंगा, इसपर वह बोली, ''हरीश जी रचना तो मैंने अभी लिखनी है जल्द ही लिखकर दे दूँगी।'' यह सुनकर मुझे कुछ अजीब सा लगा कि बिना रचना के ही वह मेरे पीछे पड़ी रही। मैंने कहा कि मैं उपाध्याय सर से पूछ लूंगा, वह यदि कहेंगे तो ही छपेगी तब तक तुम लिख लो। वह 'धन्यवाद' कहकर जाने लगीं। तभी मुझे कुछ विचार आया मैंने उससे कहा वह मुझे बता दें कि किस विषय पर वह लिखेगी ताकि मैं सर से पूरी बात कर सकूँ; वह ठिठकी फिर बोली, ''सर को बताइए कि मैं जीवन के सबसे बड़े सत्य पर लिखूंगी।'' मैंने कहा कि कॉलेज की पत्रिका के लिए यह विषय थोड़ा भारी पड़ेगा दार्शनिक रचना कॉलेज में कौन पढ़ेगा?उसने गहरी नज़रों से देखते हुए मुझे बताया कि वह इसी विषय पर लिखेगी। यह बताकर वह चली गई।

मैंने डॉ. भरत सिंह उपाध्याय को राजरानी की बात बताई। उपाध्याय जी स्वयं भी दार्शनिक थे और बौद्ध दर्शन पर उनकी पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध थीं। मेरी बात सुनकर उन्होंने बड़े गंभीर स्वर में कहा, ''बेटा भले ही दो तीन दिन और लग जाएं पर उसका लेख ज़रूर छापना बल्कि सबसे पहला लेख वही हो, हो सके तो उसका फोटो भी लेख के साथ छापना।'' मैं गुरुवर के समक्ष क्या कहता फिर भी हिम्मत करके मैंने कहा कि रचनाओं पर तो किसी की भी फोटो नहीं छापने का विधान है। गुरुदेव ने आदेश दिया कि राजरानी का लेख फोटो सहित ही छपेगा।

तीन दिन बाद राजरानी ने अपना लेख मुझे दिया जिसका शीर्षक देखकर मैं चौंक गया शीर्षक था 'मृत्यु का स्वरूप'। मैंने उससे कहा कि अपना फोटो भी मुझे दे दो यह तुम्हारे लेख के साथ छपेगा ऐसा उपाध्याय जी ने कहा है। वह बोली कि 'भिजवा दूँगी।'

इसके तीन चार दिन बाद राजरानी के परिवार से कोई आया, शायद उनका भाई था और मुझे दुल्हन बनी राजरानी का फोटो दे गया।

आश्चर्य कि लेख छपने से पूर्व ही अचानक राजरानी का देहांत हो गया। वास्तव में वह रचना उन्होंने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में ही लिखी थी। उन्हें मृत्यु का आभास था, ऐसा स्पष्ट लगता है परंतु बिना उन्हें देखे या लेख पढ़े उपाध्याय सर ने कैसे निर्णय ले लिया कि राजरानी का लेख फोटो सहित छपेगा। 1969 की कॉलेज पत्रिका में पृष्ठ चार पर छपा सबसे पहला लेख राजरानी सूद का ही है।

वाल्मीकि रामायण में प्रतिपादित सामाजिक एवं पारिवारिक नैतिक आदर्श

डा. पूनम पाण्डेय
अमरकंटक (म0प्र0)
मोबा. 9984159477

वाल्मीकि रामायण भारतीय सभ्यता और संस्कृति के उच्चतम नैतिक आदर्षो से मण्डित संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ महाकाव्य है। इस महाकाव्य में महाकवि वाल्मीकि ने प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मानव जीवन के उन विषिष्ट नैतिक आदर्षो को प्रस्तुत किया है, जो न केवल भारतीय जनों को, अपितु विष्व को प्रेरित करने वाले हैं। इस महानतम ग्रन्थ में यद्यपि सामाजिक, पारिवारिक, आलथक, राजनीतिक, धालमक एवं दार्षनिक सभी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति परक विषयों से सम्बद्ध नैतिक आदर्ष पिरोये गये हैं, लेकिन उनमें सर्वोपरि महत्ता सामाजिक एवं पारिवारिक नैतिक आदर्षो को प्रदान की गई है।

सामाजिक नैतिक आदर्षो का प्रतिपादन रामायणकार वाल्मीकि का सर्वोच्च लक्ष्य रहा है। कवि ने वैदिक काल से चले आये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैष्य और शूद्र चारों वर्णो को1 समाज के संगठनात्मक आधार स्तम्भों के रूप में स्वीकार तो किया, लेकिन उनमें कर्तव्य रूपी धर्म की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया है। रामायणकार की मान्यता है कि आचारपरक कर्म ही चारों वर्णों का अपना-अपना धर्मपालन है।[2] महाकवि का स्पष्ट उद्घोष है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैष्य और शूद्र सभी वर्णो को अपने कर्माचार में प्रवृत्त होकर उसी मे सन्तोष रखना चाहिए[3]

रामायणकार वाल्मीकि ने चारों वर्णों में ब्राह्मणों को वेदों[4] एवं स्मृतियों के[5] समान समाज में सर्वोच्च मानकर उनके कर्मपरक नैतिक आदर्षो को लौकिक अभ्युदय एवं पारलौकिक निःश्रेयस प्रदायक माना है। ब्राह्मणों के नैतिक आदर्षो में महाकवि ने कहा है कि ब्राह्मणों को इन्द्रियों पर विजयी होकर अपने सांसारिक कर्तव्य कर्मो में संलग्न रहना चाहिए। उन्हें अध्ययन को सर्वोपरि मानना चाहिए। दान लेना यद्यपि उनका प्रमुख वर्णाचार है, लेकिन प्रतिग्रह का परित्याग करना चाहिए। कवि की मान्यता है कि ब्राह्मण संयम पूर्वक दान लेने की स्पृहा न करें।[6] एक अन्य प्रसंग में कवि ने ब्राह्मण के कर्माचार में अध्ययन के साथ यज्ञ को अनिवार्य माना है। इसके अतिरिक्त ब्राह्मण को सत्यवादी होकर सांसारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए सदा देने की कामना करनी चाहिए।

दद्यान्न प्रतिगृह्णीयात् सत्यं ब्रूयात् न चानृतम्।[7]

भारतीय संस्कृति में वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत द्वितीय स्थान क्षत्रियों को प्रदान किया गया है, जो समाज के रक्षक माने गये हैं।[8] वाल्मीकि रामायण में क्षत्रि के कर्मपरक नैतिक आदर्षो को 'प्रजानां परिपालनम्' कहकर प्रजा रक्षण को उनका सर्वोपरि नैतिक आदर्ष बताया गया है।[9]

कुसीद षिवाणिज्यं पशुपाल्यं विंषः स्मृतम्।[10]

महाकाव्यकार वाल्मीकि ने वैष्यों के नैतिक आदर्षो को बतलाते हुए कहा है कि कृषि, पशुपालन और व्यापार रूप कर्तव्य कर्म ही वैष्यों के प्रमुख नैतिक आदर्ष है।[10] कुसीदकृषिवाणिज्यं पशुपाल्यं विंषः स्मृतम्।[11] वैष्यों के अतिरिक्त चतुर्थ वर्णषूद्र माना गया है। महाकवि ने कहा है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैष्यों की सेवा ही शूद्र का सर्वोपरि नैतिक आदर्ष गया है।[12]

भारतीय संस्कृति में श्रम को मानवजीवन का सर्वोपरि नैतिक आदर्ष मानकर आश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन किया गया है। मानव के लौकिक अभ्युदय एवं पारलौकिक निःश्रेयस् की प्राप्ति के लिए भारतीय मनीषियों ने सम्पूर्ण जीवन को सौ वर्ष मानकर उसके चार सोपान माने तथा उन सोपानों को आश्रम कहकर उनके अन्तर्गत किये जाने वाले श्रम या कर्माचार को आश्रमों का सर्वोपरि नैतिक आदर्ष माना। पी0वी0 काणे ने श्रम को आश्रमों का प्रमुखतम लक्ष्य मानकर कहा है कि आश्रम शब्द के दो अर्थ है-एक परिश्रम करना और दूसरा जहाँ श्रम किया जाये, वह स्थान विषेष।[13]

महाकवि वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चारों आश्रमों को मान्यता प्रदान करते हुए उनमें स्थित ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी और संन्यासी चारों के नैतिक आदर्षो को विविध सन्दर्भो में प्रस्तुत किया है। उन्होंने ब्रह्मचारी के विषय में स्पष्ट किया है कि ब्रह्मचारी को व्रतों और ब्रह्मचर्य रूप नैतिक आदर्षो का सदैव परिपालन करना चाहिए। महाकवि ने गुरू की आज्ञा के सम्यक् परिपालन को ब्रह्मचारी का सर्वोपरि नैतिक आदर्ष कहा है। गुरूओं के द्वारा निलदष्ट व्रतों और ब्रह्मचर्य का परिपालन ब्रह्मचारी का

सर्वस्वभूत नैतिक आदर्ष होता है।[14]

महाकवि वाल्मीकि ने आश्रमों में द्वितीय गृहस्थ आश्रम को चारों में प्रमुख आश्रम मानकर कहा है-चतुर्णामाश्रमाणां हि गार्हस्थ्यं श्रेष्ठमाश्रमम्।[15] गृहस्थी के नैतिक आदर्षों में महाकवि ने विवाहोपरान्त पत्नी से सन्तानोत्पत्ति को प्रमुखतम आदर्ष माना है।[16] रामायण में सन्तानोत्पत्ति न होने पर यज्ञादि नैतिक उपायों से सन्तान प्राप्ति को गृहस्थ का विषिष्ट नैतिक आदर्ष माना गया है। रामायण में राजा दषरथ के सन्तानोत्पत्ति न होने पर यज्ञ से सन्तानों की प्राप्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।[17]

भारतीय संस्कृति में तृतीय आश्रम वानप्रस्थ माना गया है। पचास वर्ष की आयु के पश्चात नियम पूर्वक वनवास को वानप्रस्थी का प्रमुखतम नैतिक आदर्ष कहा गया है।[18] यह आश्रम स्वार्थ से परार्थ की ओर उन्मुख करता हुआ व्यक्ति के पारलौकिक निःश्रेयस् का मार्ग प्रषस्त करता है। मनु ने स्वाध्याय, द्वन्दों को सहन करने की शक्ति से सम्पन्न होना, सभी प्राणियां के प्रति मैत्रीभाव, मन का वषीकरण, दान एवं दयालुता वानप्रस्थी के नैतिक आदर्ष माने हैं।[19] महाकवि वाल्मीकि ने रामायण में त्याग[20], तपस्या[21], भक्ति, ज्ञान साधना[22], मधु मूल एवं फलों का सेवन[23] वानप्रस्थी के विषिष्ट नैतिक आदर्ष माने हैं।

भारतीय मनीषियों ने चतुर्थ एवं अन्तिम आश्रम संन्यास माना है। यह आश्रम त्याग का आश्रम कहा गया है। इस आश्रम में संन्यासी ग्राम से बाहर वृक्ष के नीचे निवास करता हुआ भिक्षा से जीवन चलाता है तथा ब्रह्म साधना को अपना सर्वोपरि जीवन लक्ष्य मानकर उसी में रत रहता है। महाकवि वाल्मीकि ने पूर्ण अनुषासन, सयंम, तपसाधना, प्रवृत्ति से निवृत्ति, अऋृहसा, वैराग्य और आसक्ति का परित्याग संन्यासी के नैतिक आदर्ष माने हैं।[24]

वाल्मीकि रामायण का सर्वोपरि वैषिष्ट्य सामाजिक व्यवहार परक नैतिक आदर्षों का प्रतिपादन है। यद्यपि ये आदर्ष, वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों में बीजारोपण की स्थिति में विद्यमान हैं, लेकिन इनकी पल्लवनपरक प्रयोगात्मक संस्थिति वाल्मीकि रामायण में देखने को मिलती है। महाकवि वाल्मीकि ने रामायण के रामकथापरक कथानक को प्रयोगषाला बनाकर व्यवहार परक सामाजिक नैतिक आदर्षों को आद्योपान्त पिरोया है। यहाँ यह कथन सर्वथा समीचीन एवं सर्वमान्य होगा कि इन व्यवहारपरक सामाजिक नैतिक आदर्षों के कारण ही भारतीय संस्कृति एवं समाज विष्व में सर्वोच्च महिमा से मण्डित रहे हैं। सामाजिक व्यवहार में प्रमुख रूप से मान्य इन नैतिक आदर्षों में सत्यबोलना, दानषीलता, दयालुता, त्याग भावना, सन्तोष, लज्जा, निन्दा न करना, कपट रहित व्यवहार, गुण ग्रहण करने की प्रवृत्ति, प्रियवाणी, शील सम्पन्नता, कर्तव्य और अकर्तव्य को समझने की क्षमता तथा सरल व्यवहार आदि ऐसे नैतिक आदर्ष हैं, जो केवल भारतीय समाज में पारस्परिक व्यवहार के मध्य नैतिक आदर्ष माने जाते हैं।[25] रामायण महाकाव्य में ये नैतिक आदर्ष सर्वोच्च महिमा से मण्डित रहे हैं। इन नैतिक आदर्षों में सत्य को सामाजिक व्यवहार का सर्वोच्च आदर्ष मानकर महाकवि ने कहा है कि सत्यवादी परम पद को प्राप्त करता है। समाज में सत्य सम्पूर्ण सामाजिक व्यवहार का मूल है। किसी भी समाज में सत्य से बढ़कर कुछ भी नहीं होता है। दानषीलता भारतीय समाज का वैदिक काल से ही सर्वोच्च नैतिक आदर्ष कहा गया है।[26] वाल्मीकि रामायण में दान को समाज का विषिष्ट व्यवहारपरक नैतिक आदर्ष मानकर कहा गया है कि दान कभी भी अवज्ञा पूर्वक नहीं करना चाहिए। अवज्ञा पूर्वक दिया दान देने वाले की हत्या करता है।[27] त्याग भावना भारतीय संस्कृति एवं समाज का वैदिक काल से सामाजिक श्रेष्ठता का जनक नैतिक आदर्ष रहा है। ईषावास्योपनिषद् में इसी त्याग भावना को भारतीय समाज का सर्वोच्च नैतिक आदर्ष मानकर त्याग पूर्वक भोग करने और आसक्ति से रहित होने का उपदेष दिया गया है -

तेन त्यक्तेन भुज्जीथाः मागृधः कस्यस्विद्धनम्।[28]

महाकवि वाल्मीकि ने त्याग को सामाजिक मूलमन्त्र मानकर व्यवहार परक सर्वोच्च नैतिक आदर्ष माना है। सामाजिक विषमता त्याग भावना के अभाव में ही उत्पन्न होती है। आदि कवि ने आदर्ष सामाजिक गुणों में त्याग को भी महत्वपूर्ण माना है।[29]

भारतीय समाज में सन्तोष को परम महत्वपूर्ण नैतिक आदर्ष माना गया है। महाकवि वाल्मीकि ने सन्तोष रूपी नैतिक आदर्ष का साक्षात् स्वरूप श्रीराम के चरित्र में प्रस्तुत किया है, जो कहने पर भी वन यात्रा में अपने साथ धन नहीं ले जाते। वे वल्कल धारण करके ही गमन करते हैं।[30]

यह तथ्य सर्वथा सत्य है कि नैतिक आदर्ष दया की भावना किसी भी समाज अथवा राष्ट्र में प्राणियों को पारस्परिक एकता के सूत्र में आबद्ध करके उस समाज को श्रेष्ठता प्रदान करने वाली होती हैं। प्राणियों में पारस्परिक दया को आचार्य चाणक्य ने लौकिक अभ्युदय और मानसिक उत्कर्ष पैदा करने वाली धर्म की जन्मभूमि माना है।[31] वाल्मीकि रामायण तो दया का ही साकार रूप है। व्याध के द्वारा पक्षी का वध किये जाने पर महाकवि वाल्मीकि का हृदय करूणा पूर्ण दया से भर गया। अपनी भार्या के विरह में करूण विलाप करते हुए पक्षी के प्रति दया भावना के परिणाम स्वरूप ही लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रथम महाकाव्य वाल्मीकि रामायण उद्भूत हुआ-

तथाविधं द्विजं दृष्ट्वा निषादेन निपातितम्।
ऋषे धर्मात्मनस्तस्य कारूण्यं समजायत्।।[32]

सामाजिक व्यवहार में लज्जा का भाव उस समाज की उत्कृष्टता

का द्योतक नैतिक आदर्ष हुआ करता है। लज्जा रूपी आदर्ष मण्डित समाज में कोई भी व्यक्ति अनैतिक एवं निन्दनीय कर्म अथवा आचरण के प्रति उन्मुख नहीं होता है। लज्जा ही व्यक्ति के आचरण की श्रेष्ठता या दुष्टता की सूचक होती है। तभी तो सीताजी रावण के नारीहरण रूपी दुष्टतापूर्ण आचरण को लज्जा पूर्ण मानकर कहती हैं-

ई षं गर्हितं कर्म कथं कृत्वा न लज्जसे। स्त्रिया च हरणं नीच रहितेषु परस्य च।।[33]

भारतीय संस्कृति में सामाजिक व्यवहार में निन्दा को सर्वत्र क्षुद्रता का द्योतक माना गया है। सामाजिक व्यवहार में न तो किसी की निन्दा करनी चाहिए और न ही ऐसा कार्य अथवा आचरण करना चाहिए, जिससे समाज निन्दा करे। समाज में श्रेष्ठ अथवा उत्तम व्यक्ति निन्दा की अपेक्षा मृत्यु को उत्तम मानते हैं। वाल्मीकि रामायण में महाकवि वाल्मीकि ने लक्ष्मण के चरित्र को इसके उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है, जो सीताजी को वन में छोड़ने जैसे निन्दित कर्म करने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेष्ठ मानते हैं।[34]

भारतीय मनीषियों ने समाज में सदैव कपट रहित व्यवहार को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर नैतिक आदर्ष माना है। परस्पर व्यवहार में छल अथवा कपट होने पर समाज पतन को प्राप्त करता हुआ विनष्ट हो जाता है, क्योंकि कपट से सत्यता विनष्ट हो जाता है तथा भावनाओं, विचारों एवं तथ्यों में बनावटीपन आ जाता है। कपट व्यक्ति की नीचता को बतलाता है।[35] कपट पूर्ण व्यवहार के कारण ही रामायण में रावण का विनाष हुआ। उसने मारीच को कपटमृग के रूप में तथा स्वयं को कपटी संन्यासी के रूप में प्रस्तुत करके निन्दनीय कृत्रिम व्यवहार किया। कपटपूर्ण आचरण का परिणाम रावण तथा उसके सहयोगी बन्धु-बान्धवों के विनाष के रूप में रामायण में दृष्टिगोचर होता है।[36]

भारतीय संस्कृति में सामाजिक व्यवहार में गुणों को ग्रहण करने की प्रवृत्ति को सामाजिक उत्थान परक नैतिक आदर्ष माना गया है। वैदिक काल से ही भारतीय समाज में गुणवान व्यक्तियों को सम्मान एवं आदर होता रहा है। तैत्तिरीयोपनिषद् में दीक्षान्त उपदेष में गुण सम्पन्न कर्म तथा अनुकरण योग्य गुणवान चरित्र के ग्रहण करने की षिक्षा दी गई है।37 चाणक्य ने गुणों की षिक्षा बालक से भी ग्रहण करने का उपदेष दिया है।[38] महाकवि वाल्मीकि ने चाणक्य के समान ही गुणों को सर्वथा ग्राह्य बतलाकर शुभ वाक्य को बालक से भी ग्रहण करने की षिक्षा दी है।[39]

यह तथ्य सर्वथा सत्य एवं सर्वमान्य है कि प्रियवाणी सामाजिक व्यवहार की सर्वोच्च नैतिक आदर्ष बनकर सबको आकृष्ट करने वाली होती है। समाज में प्रिय बोलने वाले का कोई भी विरोधी या शत्रु नहीं होता है।[40] भारतीय मनीषियों ने प्रिय वाणी को सामाजिक व्यवहार का सर्वोच्च नैतिक आदर्ष तो माना, लेकिन उसमें सत्यता का समावेष करके सत्ययुक्त प्रिय बोलने की षिक्षा दी है।[41] वाल्मीकि रामायण में भी प्रिय बोलने को समाज का नैतिक आदर्ष मानकर कभी भी अप्रिय वाचन न करने के लिए कहा गया है।

न ब्रूयात् किंचिदप्रियम्।[42]

भारतीय संस्कृति में मनस्विता को मानव जीवन का विषिष्ट नैतिक आदर्ष माना गया है। सुख और दुःख में समभाव से रहना ही मनस्वी का सर्वोपरि नैतिक आदर्ष कहा गया है। पुराणों में मनस्वी साधु के स्वरूप को बतलाते हुए कहा गया है कि जो सम्मान पाकर हलषत नहीं होता तथा अपमान से क्रोधित नहीं होता, किसी के कठोर वचनों को सुनकर जो क्रोध में कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करता, वही मनस्वी साधु कहा जाता है। महाभारतकार वेदव्यास ने सफलता में प्रसन्न तथा असफलता में उद्विग्न न होने वाले को मनस्वी कहा है।[43] महाकवि वाल्मीकि ने रामायण में मनस्विता को मानव जीवन का विषिष्ट नैतिक आदर्ष माना है। मनस्वी के तात्पर्य को स्पष्ट करते हुए महाकवि ने कहा है कि जो सुख-दुःख, लाभ-हानि तथा जय-पराजय में समान भाव से जीवन यापन करता है, उसी को मनस्वी कहा जाता है।44 वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम मनस्विता के सजीव स्वरूप हैं, जो राज्याभिषेक की बात सुनकर प्रसन्नतापूर्ण नहीं हैं तथा वनवास को सुनकर दुःखी नहीं होते हैं। सुखपूर्ण समाचार उन्हें प्रसन्नता से उन्मत्त नहीं कर पाता है तथा वनवास जैसे समाचार उन्हें क्लेष, दुख या ईर्ष्या से ग्रसित नहीं कर पाते हैं।

इनके अतिरिक्त भी अन्य व्यावहारिक सरलता, शीलवत्ता आदि सामाजिक नैतिक आदर्षों का वाल्मीकि रामायण में चित्रण किया गया है।

सामाजिक नैतिक आदर्षों के साथ-साथ पारिवारिक नैतिक आदर्ष वाल्मीकि रामायण में आद्योपान्त देखने को मिलते हैं। आदर्षपुत्र, आदर्ष भाई, आदर्ष पति और आदर्ष पत्नी के जीवन के विविध रूपों का जैसा सहज एवं प्रेरणाप्रद स्वरूप महाकवि वाल्मीकि ने रामकथा के भव्य कथानक में प्रस्तुत किया, वैसा विष्व का कोई भी कवि नहीं कर पाया है। यह तथ्य सर्वथा सत्य है कि परिवार मानव के विकास की वह आधार भूत पाठषाला होती है, जहाँ मानव माता का स्नेह, पिता का प्रेम, पति-पत्नी की दाम्पत्य प्रीति, सन्तान प्रेम तथा सबके साथ निवास को प्राप्त करके प्रेम, परित्याग, स्नेह, वात्सल्य और सहिष्णुता आदि नैतिक आदर्षों से समन्वित होता है। महाभारतकार ने परिवार में नैतिक आदर्षों के परिपालन को तप के समान मानकर कहा है कि परिवार में बड़े और छोटे भार्या, पुत्र, पौत्र तथा दौहित्र आदि का औचित्यपूर्ण निग्रह और अनुग्रह प्राप्त करना ही पारिवारिक सर्वोच्च नैतिक आदर्ष हुआ करता है तथा यह साक्षात तप के समान है -

ज्येष्ठानुज्येष्ठ पत्नीनां भ्रातृणां पुत्रनप्तृणाम्।

निग्रहानुग्रहो पार्थ गार्हस्थमिति तत्तपः।[45]

महाकवि वाल्मीकि ने परिवार को सर्वोच्च धालमक संस्था मानकर उसके प्रत्येक सदस्य के लिए नैतिक आदर्शों का परिपालन अनिवार्य कहा है। रामायण में परिवार में किसी को भी स्वेच्छाचारिता की अनुमति नहीं दी गई है-

नात्मनः कामकारोऽस्ति पुरूषो यमनीष्वरः।[46]

रामायण में माता-पिता को सन्तान के लिए सर्वस्वभूत कहा गया है। उनकी आज्ञा का पालन पुत्र का सर्वोपरि नैतिक आदर्ष मानकर उसे धर्माचरण की संज्ञा प्रदान की गई है। इसके साक्षात् उदाहरण श्री राम है जो पिता की आज्ञा पाकर राज्याभिषेक का परित्याग करके वन जाने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। महाकवि ने माता, पिता के वचन पालन तथा सेवा को धर्माचरण मानकर कहा है-

न ह्यतोधर्माचरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।

यथा पितरिषुश्रूषा तस्यवावचनक्रिया।[47]

वाल्मीकि रामायण में परिवार के ज्येष्ठजना के आज्ञा पालन को सर्वोपरि नैतिक आदर्ष माना गया है। महाकवि ने स्पष्ट किया है कि ज्येष्ठ जनों के द्वारा कही बात का कभी उत्तर नहीं देना चाहिए -

उत्तरं हि न वक्तव्यं ज्येष्ठेनाभिहितं पुनः।।[48]

महाकवि ने परिवार में बन्धुत्व को स्थापित करने वाला उसे माना है, जो सहायता के लिए तत्पर रहता है।[49] परिवार में छोटों के प्रति ज्येष्ठों के नैतिक आदर्षों को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया गया है। छोटे भाइयों की सब प्रकार से रक्षा करना ज्येष्ठ भ्राताओं का नैतिक आदर्ष है जो श्री राम और लक्ष्मण के मध्य देखने को मिलता है। जहाँ लक्ष्मण बड़े भाई राम की आज्ञा के पालन को अपना सर्वोपरि धर्म मानते हैं, वहीं लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर उनके बिना श्री राम अपने जीवन को व्यर्थ मानते हैं-

अयं समरषूलाधी भ्राता मे शुभलक्षणः।

यदि पंचत्वमापन्नः प्राणमे किं सुखेन च।।[50]

उपर्युक्त समग्र विवेचन से स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में सामाजिक एवं पारिवारिक नैतिक आदर्ष आद्योपान्त देखने को मिलते हैं। नैतिक आदर्षों के विषिष्ट प्रतिपादन के कारण ही यह ग्रन्थ सम्पूर्ण विष्व के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया है।

सन्दर्भ सूची -

1. ऋग्वेद, 8/4/19
2. चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति। वाल्मीकि रामायण, अयो0काण्ड, 98/57
3. ब्राह्मणाः क्षत्र्यिाः वैष्याः शूद्रा लोभवलजताः। स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः।
   -वा0रा0 युद्धकाण्ड, 131/14 (का0सं0)
4. ऋग्वेद, 4/50/8, तैत्तिरीय संहिता, 1/7/3/1
5. मनुस्मृति, 10/75, 76
6. वा0रा0 बालकाण्ड, 6/13
7. वही, अरण्यकाण्ड, 45/15
8. ऋग्वेद, 8/4/19, शुक्रनीति, 1/81
9. वाल्मीकि रामायण, अयो0 काण्ड, 106/19
10. याज्ञवल्क्य स्मृति, 119
11. वाल्मीकि रामायण, अयो0 काण्ड, 94/40
12. वही, बालकाण्ड, 6/17
13. धर्मषास्त्र का इतिहास, भाग-1, पी0वी0 काणे, पृ0 267
14. वाल्मीकि रामायण, अयो0काण्ड, 12/84
15. वही, अयो0काण्ड, 98/58
16. वही, उत्तरकाण्ड, 3/4, 5, 6
17. वही, बालकाण्ड, 8/1, 2
18. बौधायन धर्मसूत्र, 2/6, 11
19. मनुस्मृति, 6/6, 7, 8
20. वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड, 84/10
21. वही, अयो0काण्ड, 28/12-24
22. वही, अयो0काण्ड, 109/26-27
23. वही, अयो0काण्ड, 85/17
24. वा0रा0 अरण्यकाण्ड, 7/7, 8
25. वही, अयो0काण्ड, 101/11-13
26. देषकालविधानेन द्रव्यं श्रद्धा समन्वितम्। पात्रं प्रदीयते यत्तु तद्धर्मस्य प्रसाधनम्।। मनुस्मृति, 7/87
27. अवज्ञया तं न्यात् दातारं नात्र संषयः। वा0रा0 बालकाण्ड, 12/28
28. ईषावास्योपनिषद्, 1
29. सत्यं दानां तपस्त्यागो मित्र्ता शौचमार्जवम्।।
    विद्या च गुरूषुश्रूषा ब्रुवाण्येतानि राघवे। वा0रा0अयो0काण्ड, 12/30
30. वा0रा0 अयो0 काण्ड, 33/2, 3
31. दयाधर्मस्य जन्मभूमि, चाणक्यसूत्रणि, 236
32. वा0रा0 सुन्दरकाण्ड, 38/41 (का0सं0)
33. वही, अरण्यकाण्ड, 57/6
34. श्रेयो में मरणं मेद्यमृत्युर्वायत्परं भवेत्।
    न चास्मिन्नी षे कार्यं नियोक्ष्यो लोकनिन्दिते। वा0रा0 उत्तराकाण्ड, 46/5
35. चाणक्य सूत्रणि, 202
36. वाल्मीकि रामायण वा0रा0 किष्किन्धाकाण्ड, 38/6
37. तैत्तिरीयोपनिषद्, षिक्षाध्याय, अनु0 11
38. चाणक्य सूत्रणि, 137
39. वा0रा0 उत्तरकाण्ड, 84/20
40. चाणक्य सूत्रणि, 442
41. मनुस्मृति, 4/138
42. वा0रा0 सुन्दरकाण्ड, 31/21
43. महाभारत उद्योग पर्व, 77/12
44. वा0रा0 उत्तरकाण्ड, 51/9
45. महाभारत शान्ति पर्व, 66/23
46. वा0रा0 अयोध्याकाण्ड, 18/15
47. वही, अयो0काण्ड, 104/10
48. वही, उत्तरकाण्ड, 23/6
49. वही, युद्धकाण्ड, 51/26
50. वही, युद्धकाण्ड, 89/4

साक्षात्कार

डॉ. अम्बे कुमारी का, डॉ. अमरनाथ पाठक द्वारा

डॉ. अमरनाथ पाठक – आप अपना संक्षिप्त परिचय दें।

डॉ. अम्बे कुमारी – मैं हिंदी विभाग मगध विश्वविद्यालय में सहायक प्राचार्या हूँ। मेरी अभिरुचि कविता और साहित्यिक गतिविधियों में है। इसके अलावा पर्यावरण के लिए काम करना भी मुझे अतिशय पसंद है।

डॉ. अमरनाथ पाठक – आपकी पहली रचना कौन सी थी ? और उसका प्रेरणा स्रोत क्या था ?

डॉ. अम्बे कुमारी – मैं बचपन में रामचरितमानस के चौपाईयों की नक़ल करके चौपाईयों की रचना करती थी। उस समय मैं लगभग 7 वीं कक्षा में पढ़ती थी। समय के हिसाब से मैं उसे हीं अपनी पहली रचना मानती हूँ।

डॉ. अमरनाथ पाठक – आपमें साहित्यिक अभिरुचि कैसे जगी ?

डॉ. अम्बे कुमारी – मेरी माता श्रीमती लीलावती कुमारी प्रधानाचार्य थीं। उनके विद्यालय में कहानियों और कविताओं की बहुत-सी पुस्तकें सरकार के तरफ से आती थीं। मैं उन पुस्तकों को पढ़ा करती थी, जिससे मेरे मन में बचपन से हीं साहित्यिक झुकाव पैदा हो गया। मेरे पिताजी - स्व. मनी प्रसाद साह, तुलसीदास की रामचरितमानस सदैव पढ़ा करते थें, मैं भी उसे सुनती थी, और पढ़ती थी, जिससे मेरे अंदर कविता के प्रति झुकाव पैदा होने लगा। इसके अलावा मेरे पिताजी मुझे मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर की रचनाएँ बचपन में सुनाया करते थें। जिससे मेरे अंदर हिन्दी के प्रति लगाव पैदा हो गया। और कविता के प्रति अभिरुचि जगी।

डॉ. अमरनाथ पाठक – अभी तक आपके कितने काव्य - संकलन हैं ? उनमें कुछ प्रिय रचनाओं का नाम बताएँ ?

डॉ. अम्बे कुमारी – अभी तक मेरे पाँच काव्य - संकलन हैं। इनमें चार हिन्दी के काव्य संकलन है। 'धरती का हरा रंग', 'नालंदा का स्नेहोपहर' , 'सदी का अंतिम संस्कार' और 'पोछती है जो आँसू की बूँद' हिन्दी के काव्य संग्रह हैं और 'लहरिया ई पावन हो' भोजपुरी का काव्य - संकलन हैं। इसके अलावा लगभग 80 साझा संकलन में मेरी कविताएँ प्रकाशित है। चार वर्ल्ड रिकॉर्ड पुस्तकों में भी रचनाएँ प्रकाशित है

इनमें से मेरी कुछ प्रिय रचनाएँ हैं - 'एक हीं मानव का', 'श्रम का मूल्य', 'हरिश्चन्द्र और शव', 'आँखें', 'सौरमंडल का संवाद', 'वृक्ष और मानव', 'श्रम का जोगी और मदिरालय', 'उत्तर केवल राम है', 'क्यों चले गए बाबुल'।

डॉ. अमरनाथ पाठक – सभी काव्य संकलनो के पीछे कौन -सी पृष्ठभूमि थी ?

डॉ. अम्बे कुमारी – मेरा पहला काव्य संग्रह 'धरती का हरा रंग' (2016) है, इसकी रचना के पीछे प्रकृति मेरी प्रेरणा -स्रोत बनीं। मैं अक्सर प्रकृति के बीच रहती हूँ। पेड़ -पौधों से मुझे गहरा लगाव है। आज के इक्कीसवीं सदी में जब मैं पर्यावरण का ह्रास देखती हूँ , तो मुझे बहुत दुःख होता है। उसी मनः स्थिति में मैंने इस काव्य-संकलन की रचना की। इसमें मैनें प्रकृति के हरे-भरे सौंदर्य तथा उसके वर्तमान क्षरण पर भी कविताएँ लिखी है। मेरा दूसरा काव्य -संकलन 'नालंदा का स्नेहोपहर' (2019) है। यह काव्य संग्रह शिक्षा जगत पर आधारित है। इसमें मैंने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय के शिक्षा प्रणाली पर कविताएँ लिखी हैं। इस दौरान मैनें नालंदा विश्वविद्यालय के खण्डहरों का भी भ्रमण किया , जिससे मुझे भारत के गौरवपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था का अनुभव हुआ। मेरा तीसरा काव्य-संग्रह 'सदी का अंतिम संस्कार' (2020) है। यह काव्य संग्रह कोरोना काल के संस्मरणों पर आधारित सुंदर काव्य-संकलन है। मेरा चौथा काव्य संकलन भोजपुरी का है - 'लहरिया ई पावन हो' (2022)। इसमें भोजपुरी की विभिन्न भावों से भरी कविताओं का संग्रह है, जिसकी प्रेरणा मुझे भोजपुरी क्षेत्र के लोकजीवन से मिली। मेरा पाँचवा काव्य - संग्रह 'पोछती है जो आँसू की बूँद है' (2022) है, जो विभिन्न भावों की भरा 101 कविताओं का काव्य संकलन है, इसके सृजन के पीछे विभिन्न मानवीय संवेदनाओं एवं प्रकृति सौंदर्य की प्रेरणा रही है। मेरी दो गद्य पुस्तकें प्रकाशित हैं - 'नई कहानी आंदोलन और कमलेश्वर की कहानियाँ'(2016) तथा

‘हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृतिः पुनर्खोज’ (2019)

डॉ. अमरनाथ पाठक –आप अपनी प्रिय रचना की कुछ पंक्तियों का उल्लेख करें।

डॉ. अम्बे कुमारी – मेरी एक प्रिय कविता है - ‘एक हीं मानव का’ जो मेरे काव्य-संग्रह ‘पोछती है जो आँसू की बूँद’ में संकलित है। मैं उसकी कुछ पंक्तियों का उल्लेख करती हूँ-

गिरती है जो आँसू की बूँद
वह एक हीं मानव की है,
चाहे भारत हो या पाकिस्तान।
है एक हीं दर्द, एक हीं घाव
एक हीं दुःखों का अनंत पड़ाव,
उफनता है जो आँखों से समंदर
वह एक हीं मानव का है।
गिरती है जो खून की बूँद
वह एक हीं मानव की है,
चाहे अमेरिका हो या जापान
वह एक हीं मानव की है।
मुरझाये चेहरों पर खुशियाँ लाने
कोई अमेरिका से भारत आता है,
पराये देश की धरती को
वह अपना कह अपनाता है,
पोछती है जो आँसू की बूँद
वह एक हीं मानव की है।

डॉ. अमरनाथ पाठक – भावी पीढ़ी के लिए काव्य-लेखन को कितना जरूरी मानती हैं ?

डॉ. अम्बे कुमारी – कविता में जीवन को कलात्मक सौंदर्य के साथ अभिव्यक्त करने की क्षमता है। यह मन , वाणी और आत्मा को एक साथ तृप्त कर सुख देती है। भावी पीढ़ी जो मशीनीकरण की अतिशय गुलाम होती जा रही है , कविता उसे लोक जीवन के सौंदर्य में खींच ले जाने में सक्षम है। कविता को मैं सभ्यता तथा जीवन का धरोहर मानती हूँ , और यह अद्भुत धरोहर भावी पीढ़ी के पास होना हीं चाहिए ताकि उनका स्वस्थ और सर्वांगीण विकास हो सके।

डॉ. अमरनाथ पाठक – आपकी दृष्टि में एक अच्छे कवि होने के कौन से गुण होने चाहिए ?

डॉ. अम्बे कुमारी – मेरी दृष्टि में एक अच्छा कवि संवेदना से भरपूर होना चाहिए। कवि जीवन और मरण दोनों का चितेरा होता है , निश्चय हीं वह संपूर्ण सौंदर्य को सृजित करने वाला अद्भुत चित्रकार होता है, इसलिए उसमें पारखी दृष्टि भी होना आवश्यक है। एक अच्छे कवि में नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का होना आवश्यक है।

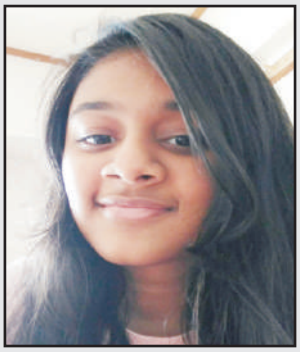
रित्या गुप्ता

मेरा नाम रित्या गुप्ता है। मैं ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल में दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं जापान में पिछले ६ सालों से रह रही हूँ। हमारे वि ॥लय में हिंदी बोलने में कई लोग माहिर हैं। क्या वह हिंदी पढ़ते हैं?इसका जवाब हैं नहीं। मेरे कई मित्र केरेला से हैं जिन्हे टूटी-फूटी हिंदी आती हैं। हिंदी का हमारे वि ॥लय में इतना जोश नहीं हैं क्योंकि लोगों को इस भाषा का महत्त्व नहीं पता। मैं और मेरे कुछ सहपाठी इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषियों का होंसला भड़ाना चाहते हैं। हम यह नहीं चाहते कि, कल को कोई अपने आप को अनपढ़ समझे और उसे यह बोलने में शर्म आये की वह भारतीय है।

दसवीं की कक्षा में केवल ५ बच्चे हिंदी पढ़ते हैं। हमारे वि ॥लत में उस माहौल की कमी होती है जो हमें हिंदी जैसी शुद्ध भाषा पढ़ने में प्रोत्साहित करें। भले ही हमारे वि ॥लय को ग्लोबल इंडियन क्यों न कहा जाता हो लेकिन जभ भी कोई हिंदी में बात करता तो उसे अंग्रेजी में बात करने को कहा जाता है। यह बात सोच कर मेरे मन को दुःख होता है। हमारे स्कूल की हर एक अध्यापिका हिंदी में बात करती है। लेकिन मेरी यह समझ में ही नहीं आता की विद्यार्थियों को क्यों रोका जाता है ! आशा करती हूँ की आप लोग, जो हिंदी भाषी हैं वह हिंदी बोलते रहें और अपने यार दोस्तों को हिंदी बोलने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। धन्यवाद।

राम-कथा
विश्व धरोहर

असमीया साहित्य एवं लोक-कथा में रामायण की परिचर्चा

डॉ॰ जयप्रकाश मिश्रा
पटना, बिहार।
सम्पर्क नम्बर - 9470488518

सम्पूर्ण विश्व साहित्य में रामायण एक चमत्कारी ग्रंथ है। जन-मानस में यह प्रचलित है कि तुलसीदास रचित रामायण एवं बाल्मीकि रामायण का सामाजिक एवं अध्यात्मिक महत्व है। यह चमत्कारी ग्रंथ किसी भाषा और देश की धरोहर नही वरन् सम्पूर्ण मानव समाज को समर्पित प्रभु श्रीराम का आलशवाद है जिसमें समय-समय पर सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। कवि की प्रेरणा, जन मानस की चेतना, राजनेताओं की विकृत एवं सुसंस्कृत व्याख्याओं से भी यह परे नही है। महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने यह कहा था कि

''राम तुम्हारा जीवन स्वयं एक काव्य है)
कोई कवि बन जाय सहज समभाव्य है।।''

दशकों तक हिन्दी को सेवा प्रदान करने वाले फादर कॉमिल बुल्के जो कि राँची विश्वविद्यालय से जुड़े रहे और हिन्दी विभाग की गरिमा को अपनी उपस्थिति से चर्मोत्कर्ष पर पहुँचा दिया, उनसे एक किसी ने पूछा था कि फादर आप इसाई धर्म को मानने वाले है फिर रामायण के प्रति आपका झुकाव कैसे हुआ ?जबाव यह मिला कि रामायण के किस भाग में यह वलणत हैं कि रामायण केवल हिन्दुओं का ग्रंथ है। सच तो यह है कि रामायण जैसा चमत्कारी ग्रंथ सम्पूर्ण विश्व में अनुपलब्ध है। जैसा कि मैने उपर कहा जन-जन में और कण-कण में श्रीराम विद्यमान हैं। अतः रामायण के किसी एक पहलु का वर्णन करने में शब्द और स्याही दोनो कम पड़ जायेंगे।

कबीर की एक लोकोक्ति याद आती है कि -

सात समंद की मसी करौ
लेखनी सब बनराई।
धरती सब कागद करौ
हरि गुण लिखा न जाई।

पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों में सैकड़ों जनजातियाँ रहती हैं। सबकी भाषा-संस्कृति अलग-अलग हैं। पूर्वात्तर भारत लोक-साहित्य का भंडार है। आज भी जिन जनजातियों की अपनी लिपि नहीं है अथवा लिखित साहित्य नहीं है, लोक साहित्य में बहुत समृद्ध है।

जहाँ तक असमिया समाज की बात है यहाँ विभिन्न समय में असम आये हुए विभिन्न जनगोष्ठियों का प्रभाव देखा जाता है। यह प्रभाव भाषा, पोषाक रीति-रिवाज, उत्सव आदि सभी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अतः कहा जा सकता है कि द्रविड़, मंगोल आदि के साथ-साथ सभी जनजातीय संस्‌ ति के मेल से ही वृहद असमिया जाति का निर्माण हुआ है। असम में लिखित साहित्य के साथ-साथ लोकसाहित्य की भी कोई कमी नहीं है। असमिया लोकगीत असामिया जन जीवन, असमिया लोक-मन के आशा-आकांक्षाओं का सजीव चित्रण है। इन गीतों में जिस प्रकार सामान्य जनमानस के भावावेग, अनुभूति, सुख-दुख के क्षण, परंपरा, विश्वास आदि संस्कृति के विविध पक्ष मुखर हो उठा है उसी प्रकार इन गीतों से सामाजिक और नैतिक सीख भी प्राप्त हुआ है।

असमिया लोकगीत में रामकथा का वर्णनः असमिया लोक साहित्य में विशेष रूप से मुहावरों, लोकोक्ति, लोकगीत, लोक कहानियों आदि में रामायण कथा का प्रभाव परिलक्षित होता है। असमिया लोकगीतों के अंतर्गत अनेक ऐसे गीत हैं, जहाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से राम कथा का वर्णन किया गया है। आसाम के विवाह गीतों में वर खोजने से लेकर वर की विदाई तक का वर्णन मिलता है। असमिया व्याह-गीतों या ''वियाहनामों लौकिक कथाओं के साथ-साथ राम-सीता, शिव-पार्वती आदि की कथा वर्णन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यमान है। ये गीत सिर्फ महिलाएं गाती हैं। असमिया विवाह संस्कार में जोरोण(चढ़ावा)) पानी तोला) नावनी (स्नान)) दूल्हे का स्वागत, अग्नि कुंड) पंडाल सजावट) बेटी विदाई आदि अनेक

परंपरागत रस्में) रीति-रिवाज है जहाँ राम-सीता के कथाओं का वर्णन है। राम-सीता को इन गीतों में आदर्श नारी-पुरूष माना गया है।

1) पानी तोला गीतः- असमिया समाज में विवाह संस्कार में एक महत्वपूर्ण रस्म है 'पानी तोला'। इसमें गाँव की महिलायें पास की नदी या तालाब से कलश में पानी लाते है और बाद में उसी पानी से दूल्हा-दुल्हन को नहलाया जाता हैं। पानी लाने जाते समय सभी महिलायें हर्षोल्लास के साथ-साथ नृत्य-गीत भी करते हैं। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं उन्हें ब्याह-गीत कहा जाता है। एक उदाहरण इस प्रकार है -

''जोन बेलि छकुरि गोपीनी
जोन बेलि जोने चिकेमिकाय
तरा ऐ मई बोलो किबा फूल फुले।
जोन बेलि रामचंद्रर पदुलित
जोन बेलि छकुरि गोपीनी
तरा ऐ पारे बुले येन बुले ।।''

अर्थात चाँद सूरज जैसी सुन्दर गोपियाँ एक साथ पानी लेकर आ रही हैं। दूर से उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है, मानो वे कोई फूल हो आज रामचंद्र जैसे सुन्दर वर के आँगन में ढेर सारे फूल खिल रहे हैं। इस गीत में वर को रामचंद्र के साथ तुलना की गयी है।

(2) नावनी गीत (स्नान गीत):- असमिया समाज में शादी से पहले दूल्हा और दुल्हन को नहाने की रस्म है। इस रस्म में दूल्हा-दुल्हन को हल्दी लगाकर केले के पेड़ के नीचे स्नान कराया जाता है और इस अवसर पर गाँव की महिलायें गीत गाती हैं जिसे 'नवनी गीत' कहा जाता है। दूल्हे को स्नान करने के लिए बुलाते हुए महिलायें इस प्रकार गाती हैं -

''नावनी घरलै नाहे रामचंद्र ऐ राम
सीता क'ला बुलि सुनि हे ।।
सुवर्णर शज्याते आइदेउ षुइ आछे
इकथा मनतो नाई ।।''

यहाँ दूल्हे को रामचंद्र के साथ तुलना है। गाँव की महिलायें दूल्हे को चिढ़ाते हुए कहते हैं कि हमारे रामचंद्र स्नान घर में नहीं आना चाहते, क्योंकि उन्होंने कहीं से सुन लिया है कि उनकी होने वाली पत्नी सीता काली है। हे राम सोने के पलंग पर बैठकर वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। क्या तुम इस बात को भूल गये हो इस गीत में दूल्हा-दुल्हन की राम-सीता के साथ तुलना की गयी है। इसी तरह से जोरोन गीत, विदाई गीत, नावरिया गीत, तुलसी गीत या अन्य ऐसे कई अवसर हैं जहाँ राम और रामायण से जुड़ी घटनाओं का जिक्र होता है।

असमिया भाषा में राम कथा के लिपिबद्ध इतिहास का स्पस्ट उत्कर्ष इतिहास हमें चैदवीं शताब्दी ईसवी के प्रारंभिक काल से प्राप्त होता है। इससे पहले वैष्णव सम्प्रदाय में विशाल कृष्ण साहित्य देखने को मिलता है। वह भागवत और महाभारत के रूप में असमिया समाज में बहुतायत से प्राप्त है। किन्तु राम साहित्य उसकी तुलना में कुछ कम देखने को मिलता है। वहाँ के समाज में राम कथा, लोक गीतों की बारहमासी के रूप में गाई जाती रही, जिनमें राम बारह माही, सीता बारह माही, कौशल्या बारह माही आदि अधिक विख्यात हैं।

असम में राम का कोई विशिष्ट भक्ति-सम्प्रदाय नहीं पाया जाता है। यहाँ तक कहा गया कि पहले यहाँ पूजा के लिए राम मंदिर तक नहीं जाये जाते थे। अब भी यहाँ शंकर देव और उनके मतावलम्बियों के द्वारा प्रतिपादित वैष्णव सम्प्रदाय में कृष्ण भक्ति की प्रधानता है। वैष्णव समुदाय में रामायण का उतना प्रमुख स्थान हीं है, जितना भागवत महापुराण और महाभारत का पाया जाता है। यद्यपि वैष्णव सम्प्रदाय में राम को कृष्ण की अपेक्षा अवतारी प्रमुखता प्राप्त नहीं है कृष्ण सोलह कलाओं से युक्त पूर्ण ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित हैं। राम विष्णु जी के दश अवतारों में से एक माने जाते हैं। किन्तु पूजा-आराधनादि खूब होती है।

इसी तरह बिहू गीतों में, वागमाही गीतों में एवं नावखेलवा गीतों में भी कहीं न कहीं राम से सम्बन्धित प्रसंगों का उल्लेख आता है। बिहू पर्व आसाम की पहचान है जो कृषि से विभिन्न गतिविधियों पर आधारित है। बिहू गीतों मे भी राम के वन गमन के पश्चात अयोध्यावासियों दारूनकथा का जिक्र है। मै चंद पक्तियों का उल्लेख करना चाहुँगा -

रामेन बोले लक्ष्मण भाई सीता कोईक गोइला
दंडूका वनते सीता रामने हरिला
रामकांदे इनाइ-बिनाइ लक्ष्मण कांदे रोई
बांटते जटायू कांदते सीता कथा रोई...........।
ठीक इसी तरह दो पक्तियां बारहमाही गीतों की-
माथाय हात दिया भाबे अरण्य भीतरे
पितृवाक्य पालिते आइलो भाई दुईजन
निदारून मातृ बने दिला कि कारण।

निस्दंह असाम सस्कार एवं परम्परा के माध्यम से पूर्वोत्तर राज्यों का प्रवेश द्वारा एवं सांस तिक राजधानी है। सुदूर पूर्व में अवस्थित होने के बावजूद वहाँ की परम्परायें आज भी पूर्णरूप से जीवित है। आधुनिकता के रंग में रंगे आज के युवा भी अपनी परम्परागत रीति-रिवाजों के प्रति पूर्ण रूप से समलपत है। मेरी असाम भ्रमण के दौरान मुझे इस पहलू से रूबरू होना पड़ा वार्तालाप के दौरान कई बार नवाशमिता ने मुझे न केवल इन परम्पराओं परिलक्षित होता दिखाया

बल्कि बार-बार वीडियों के माध्यम से परम्पाराओं के मूलारूप से भी अवगत कराया। एक बार एक हल्की टिप्पणी पर उन्होंने नराजगी भी व्यक्त की और उन्होंने यह बताया कि अपनी परम्पराओं पर उन्हे नाज है और इस पर अनावश्यक टिप्पणी नहीं चाहिए। वे एक आधुनिक महिला है फिर भी अपनी परम्परा के प्रति उनका समर्पण कबिले तारीफ है।

यही हिन्दुस्तान की खुबी है। संस्कारो से परिपूर्ण यह देश विभिन्न भाषा, सम्प्रदायों के साथ लेकर चलते हुए अपने संस्कारों को जीवित रखने में कामयाब रहा है। राम का स्वरूप साधारण मानव से उपर था तभी उन्हें मर्यादा पुरूषो ाम कहा गया। आज भी वे उतने ही प्रासंगिक हैं और आनेवाला कल भी उन्हें एवं रामायण को पूर्णरूप से जीवित रखेगा यही मंगल-कामना है।

साभार- श्रीरामकथा का विश्व संदर्भ महाकोश का प्रथम भाग एवं प्रो॰ विनय कमार संकायाध्यक्ष मानविकी मगध विश्वविद्यालय बोधगया एवं नवाशमिता मिश्रा भाषा पदाधिकारी भाषा कोष विद्यान विभाग असाम सचिवालय से परिचर्चा तथा असाम परिभ्रमण के दौरान मिली जानकरी पर आधारित

शोध और परिकल्पना

संजू कुमारी
बोधगया, बिहार

प्रस्तावना

मानव के विकास सुख और समृद्धि के मूल में अंततः एक ही चीज होती है- वह है ज्ञान और उसका उपयोग। इसलिए ज्ञान में वृद्धि मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। इसके लिए वह हमेशा प्रयत्न करता रहता है। इस प्रयास के क्रम में वह नवीन ज्ञान की प्राप्ति के साथ ही पहले से प्राप्त ज्ञान की सत्यता की जांच परख करता है। इस प्रक्रिया से ज्ञान के आयाम में विस्तार होता है और यह प्रक्रिया ही शोध है।

शोध चाहे मनोवैज्ञानिक हो या प्रयोगात्मक किसी समस्या के चयन के बाद उस समस्या से संबंधित परिकल्पना का निर्माण करना होता है। किसी शोध के वास्तविक अध्ययन शुरू करने के पहले शोधकर्ता अनुमान लगाता है कि अध्ययन के बाद किस तरह का परिणाम निकलेगा। सही अर्थों में इसे ही परिकल्पना कहते हैं। दूसरे शब्दों में, शोधकर्ता किसी शोध समस्या के चयन के बाद उसका एक अस्थाई समाधान जांचनीय प्रस्ताव के रूप में रखता है इस जांचनीय प्रस्ताव को ही तकनीकी भाषा में परिकल्पना कहते हैं। अर्थात परिकल्पना या प्राकल्पना किसी शोध समस्या का एक प्रस्तावित परीक्षण उत्तर होता है। यदि प्रयोग या शोध के निष्कर्ष से परिकल्पना की पुष्टि हो जाती है तो उस परिकल्पना को सही मान लिया जाता है। परंतु यदि इसकी पुष्टि नहीं होती है तो परिकल्पना में परिमार्जन कर दिया जाता है या उसकी जगह पर कोई परिकल्पना विकसित कर ली जाती है।

शोध का अर्थ

शोध के लिए अंग्रेजी में 'रिसर्च' शब्द का प्रयोग किया जाता है। रिसर्च मूल रूप से लैट्रिन के 'र' अर्थात द्वारा और सर्च अर्थात खोजना से बना है। वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास ही शोध है अतः अनुसंधान वह वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग के द्वारा वर्तमान ज्ञान का परिमार्जन, उसका विकास तथा किसी नए तत्व को खोजना या ज्ञानकोष में वृद्धि करना है। व्यापक अर्थों में अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा करना होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुराने वस्तु एवं सिद्धांतों का पुनः परीक्षण करना जिससे नए ज्ञान, तथ्य प्राप्त हो सके उसे शोध कहते हैं।

शोध की परिभाषा

सामान्य अर्थ से आगे बढ़कर जब हम शोध के आदर्श स्वरूप और शैक्षणिक संदर्भ पर विचार करते हैं तो हमें एक व्यवस्थित परिभाषा की आवश्यकता होती है। ऐसे में शोध के संबंध में अलग-अलग विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है जो इस प्रकार हैः-

एल बी तथा रेडमैन के अनुसारः-

शोध या अनुसंधान नवीन। ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रयास है।

डॉक्टर एम. वर्मा के अनुसारः-

अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नए ज्ञान को प्रकाश में लाती है अथवा पुरानी त्रुटियों एवं भ्रांत अवधारणाओं का परिमार्जन करती है

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि शोध नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए या किसी समस्या समाधान के लिए उपलब्ध जानकारियों और साक्ष्यों को व्यवस्थित करके क्रमबद्ध तरीके से विश्लेषण कर परिणाम प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहा जाता है।

साथ ही शोध की इस परिभाषा के आधार पर शोध की कई प्रकृति स्पष्ट होती है जो इस प्रकार है

1) शोध एक अनोखी प्रक्रिया है जो ज्ञान के प्रकाश एवं प्रसार में सहायक होता है।

2) शोध के द्वारा या तो किसी नए तथ्य सिद्धांत विधि या वस्तु की खोज की जाती है या फिर प्राचीन तथ्य, सिद्धांत, विधि या वस्तु में परिवर्तन किया जाता है।

3) शोध सुव्यवस्थित, बौद्धिक, तर्कपूर्ण तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है।

4) शोध में विभिन्न स्रोतों (प्राथमिक तथा द्वितीयक) से प्राप्त आंकड़े का विश्लेषण किया जाता है। इसलिए इसमें ॠचतन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसमें पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों की कतई गुंजाइश नहीं होती है।

5) पूरी प्रक्रिया की सफलता के लिए व्यवस्थित तरीके से क्रमबद्ध चरणों से गुजरना होता है। इन क्रमबद्ध चरणों की व्यवस्था ही शोध का स्वरूप निर्धारित करती है।

6) शोध के स्वरूप में कई बातें शामिल हैं जैसे शोध का उद्देश्य, शोध का प्रकार, समस्या चयन, समस्या से संबंधित सभी प्रकार की जानकारियां एकत्रि करना, प्रविधि का चुनाव आकार एकत्रि करना, उपकरणों या विधि का चुनाव, प्रकल्पना का निर्माण, आंकड़े का विश्लेषण तथा प्राकल्पना का सत्यापन और अंत में प्रतिवेदन लेखन।

परिकल्पना

किसी भी समस्या का समाधान करने से पहले ही उसके परिणामों के संबंध में अनुमान करना ही परिकल्पना कहलाता है। प्राककल्पनाओं के निर्माण के समय शोधकर्ता का प्रयास रहता है कि उस में अधिक से अधिक वैसी विशेषताएं मौजूद हो जिससे परिकल्पना की वैज्ञानिकता बढ़ सके। परिकल्पना को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया हैः-

रेबर तथा रेबर के अनुसार :-

परिकल्पना वह कथन, प्रस्ताव या अभिधारण है जो कुछ तथ्यों की अंतिम व्याख्या का काम करती है।

मैक ग्यूगन के अनुसार :-

दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंधों के बारे में बनाए गए परीक्षण के कथन को प्राकल्पना कहा जाता है।

कारलिंग के अनुसार

दो या दो से अधिक चरों के मध्य अनुमानात्मक कथन को प्राकल्पना कहा जाता है। प्राककल्पनाओं को हमेशा घोषणाआत्मक वाक्य के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है और वे चरों के बीच में सामान्य या विशिष्ट संबंध बतलाते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार परिकल्पना की निम्नलिखित प्रकृति स्पष्ट होती हैः-

1) परिकल्पना में दो या दो से अधिक चरों के बीच के संबंधों का उल्लेख किया जाता है। चरों के बारे में विस्तृत जानकारी एक उदाहरण से समझ सकते हैं। पुरस्कार से शिक्षण ज्यादा शीघ्रता से होता है। इस प्राकल्पना में पुरस्कार एक चर है और सीखना दूसरा चर है।

2) परिकल्पना की जांच अनुभाविक अध्ययनों के आधार पर की जाती है। इसके लिए आवश्यक है कि प्राकल्पना को एक परीक्षणीय कथन के रूप में व्यक्त किया जाए। अर्थात प्रत्येक परिकल्पना के द्वारा दो या दो से अधिक चरों के संबंधों को जांचा जा सके।

3) परिकल्पना वास्तविक परीक्षण के बाद या तो सही प्रमाणित होती है या गलत प्रमाणित होती है। वास्तविक परीक्षण का परिणाम जब पूर्व कल्पना के कथन के अनुरूप होता है तो इस पूर्व कल्पना को स्वीकार कर लिया जाता है इसके विपरीत परीक्षण का परिणाम प्राकल्पना के प्रतिकूल रहता है तो ऐसी स्थिति में इस परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया जाता है।

4) परिकल्पना वास्तविक परीक्षण के पूर्व किया गया अनुमानित प्रस्ताव है। समस्या के सामने आते ही उसके समाधान के पूर्व उसके परिणाम के बारे में एक अनुमान दिमाग में आ जाता है, वही प्रकल्पना है। यह प्रकल्पना व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर बनाता है।

5) परिकल्पना के रूप में जो प्रस्ताव बनाए जाते हैं या जो परिकल्पना बनाई जाती है उसका आधार शोधकर्ता के जीवन की पूर्व अनुभूतियों या पूर्व अनुभव होता है। इसी के आधार पर शोधकर्ता दो या दो से अधिक चरों के बीच एक सामान्य या विशेष संबंधों की कल्पना करता है।

अच्छी परिकल्पना की विशेषताएं

एक अच्छी परिकल्पना की निम्नलिखित विशेषताएं हैं जो इस प्रकार हैः-

1) प्रकल्पना को संप्रत्यात्मक रूप से स्पष्ट शब्दों में व्यक्त होना चाहिएः-

प्रकल्पना को बहुत ही स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करना चाहिए। इसके शब्दों में व्यार्थकता नहीं होना चाहिए। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि कुछ शब्दों के कई अर्थ निकलते हैं। यदि हम ऐसे शब्द का उपयोग

कर देंगे तो अलग अलग व्यक्ति इसका अपने-अपने ढंग से भिन्न भिन्न अर्थ लगाएंगे। इससे शोध का परिणाम प्रभावित होगा। अतः प्रकल्पना को वस्तुनिष्ठ ढंग से परिभाषित होना चाहिए जिससे सभी लोगों के लिए इसका अर्थ स्पष्ट एवं समान है।

2) परिकल्पना को परीक्षणीय होना चाहिएः-

परिकल्पना को दो या दो से अधिक संभावित परिवर्त्यो या चरों का परीक्षणीय कथन होना चाहिए। परिकल्पना का निर्माण इस तरीके से किया जाना चाहिए कि उसकी जांच के बाद निश्चित रूप से यह बताया जा सके कि वह सत्य सिद्ध हो रही है या असत्य है। अतः परिकल्पना के लिए आवश्यक है कि उसकी जांच अनुभव सिद्ध अध्ययनों के आधार पर की जा सके।

3) प्राकल्पना कल्पना को मितव्ययी होना चाहिएः-

एक अच्छी परिकल्पना को मितव्ययी होना चाहिए। अर्थात प्राककल्पनाओं की सीमा पहले से ही निश्चित रहनी चाहिए।

4) प्रकल्पना को उपलब्ध उपकरणों से संबंध होना चाहिएः-

एक अच्छी शोध परिकल्पना में ऐसे चरों का इस्तेमाल होना चाहिए जिनको आसानी से उपलब्ध वैज्ञानिक परीक्षण के द्वारा नापा जा सके। यह उपकरण उपलब्ध नहीं होंगे तो फिर उन चरों के संबंधों का ना तो ठीक प्रकार से मापन किया जा सकेगा और ना ही प्राकल्पना की सत्यता की जांच की जा सकेगी। ऐसी परिकल्पना को अवैज्ञानिक मानकर उसे छोड़ दिया जाता है।

5) प्रकल्पना को तथ्यों तथा सिद्धांतों से संबंध होना चाहिएः-

एक उत्तम प्रकल्पना संबंधित क्षेत्र के मौजूद सिद्धांतों या तथ्यों के आधार पर बनाई जाती है। कभी-कभी हम कोई पूर्व कल्पना बना लेते हैं जो देखकर तो बहुत आकर्षक लगती है परंतु इससे संबंधित कोई तथ्य सिद्धांत नहीं मिलते हैं। यदि प्राकल्पना तैयार की जाती है कि अधिक गाना सुनने वाले कम बुद्धि के होते हैं यह देखने में तो आकर्षक लगती है परंतु वैज्ञानिक रूप से एक अच्छी परिकल्पना नहीं हो सकती क्योंकि संबंधित कोई तथ्य सिद्धांत मौजूद नहीं है।

6) परिकल्पना को सकारात्मक होना चाहिएः-

शोधकर्ता को ऐसी परिकल्पना का निर्माण करना चाहिए जिससे दो या दो से अधिक चरों के संबंधों को स्वीकार किया जाता है।इसलिए कभी भी नाकारात्मक कथन के रूप में परिकल्पना को नहीं बनाना चाहिए। अच्छी परिकल्पना साकारात्मक कथन के रूप में होती है। इसमें दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंधों को स्वीकार किया जाता है अस्वीकार नहीं।

7) परिकल्पना में तालकक पुर नेता तथा व्यापकता का गुण होना चाहिएः-

परिकल्पना में तार्किक क्षमता एवं व्यापकता होनी चाहिए। जब कोई परिकल्पना केवल शोध समस्या के समाधान तक ही सीमित हो तो मानना चाहिए कि उसमें तालककता एवं व्यापकता उपलब्ध है। कभी-कभी ऐसी पूर्व कल्पना बना दी जाती है जिससे संबंधित समस्या के अलावा अन्य विषय एवं समस्याएं भी शामिल हो तो उसे वैज्ञानिक परिकल्पना कहेंगे।

8) समाधान योग्य कथन होना चाहिएः-

परिकल्पना को समस्या के समाधान के पूर्व ही उसके अनुभव एक समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है इसलिए परिकल्पना को समस्या विशेष के समाधान के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

9) परिकल्पना को अध्ययन किए जाने वाले क्षेत्र की अन्य परिकल्पना उसे संगत होना चाहिएः-

एक अच्छी एवं वैज्ञानिक परिकल्पना को संबंधित क्षेत्र की अन्य प्रकल्पनाओं के अनुकूल होना चाहिए। मैंक गूगन के अनुसार -हालांकि यह विशेषता किसी वैज्ञानिक प्राककल्पनाओं के सत्य सिद्ध होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः यह परिकल्पनाओं के विरोधी ना होकर उसके अनुकूल होती है।

10) परिकल्पना का एक अनुमानात्मक कथन होना चाहिएः-

एक अच्छी और वैज्ञानिक का परिकल्पना हमेशा एक अनुमान आत्मा कथन के रूप में व्यक्त की जाती है। कारऋलगर ने भी माना है कि परिकल्पना कभी भी एक प्रश्न के रूप में नहीं होती बल्कि एक कथन के रूप में होती है।

11) परिकल्पना को समस्या से संबंध होना चाहिएः-

एक अच्छी एवं वैज्ञानिक परिकल्पना शोध समस्या से संबंधित रहती है। शोध समस्या के चयन के बाद शोधकर्ता उसका एक अस्थाई समाधान एक परीक्षणीय प्रस्ताव के रूप में करता है। अतः शोध समस्या का एक प्रस्ताविक परीक्षणीय उत्तर ही परिकल्पना कहलाता है इसलिए परिकल्पना को समस्या से संबंध होना चाहिए।

12) परिकल्पना को परिमाणनीय होना चाहिएः-

एक अच्छी परिकल्पना के लिए आवश्यक है कि वह परिमाणनीय हो। अर्थात यह विभिन्न चरों के बीच संबंध का मात्रत्मक अध्ययन करने वाला होना चाहिए। उदाहरण के लिए बुद्धि तथा रचनात्मकता के बीच धनात्मक सहसंबंध होता है। इस परिकल्पना में बुद्धि तथा रचनात्मक दोनों चरों के बीच संबंध का उल्लेख किया गया है। इन दोनों चरों के संबंधों का मात्रत्मक अध्ययन एवं मापन किया जाता है। इन दोनों दलों के बीच किस मात्र तक संबंध है तथा एक में वृद्धि तथा कमी से दूसरे पर इसका क्या और कितना प्रभाव पड़ता है।

13) परिकल्पना को भविष्यवाणी करने में समर्थ होना चाहिएः-

एक अच्छी परिकल्पना में भविष्यवाणी करने की क्षमता होनी चाहिए। अतः परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसके आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओं के संबंध में पूर्वकथन या भविष्यवाणी की जा सके।

परिकल्पना के स्रोत या आधार

परिकल्पना का निर्माण करना हमारे लिए एक मुश्किल काम होता है। ऐसा नहीं होता है कि समस्या के समाधान से संबंधित जो पूर्वानुमान समस्या के समाधान के पहले हम करते हैं वह पूरी तरीके से काल्पनिक होते हैं। बल्कि उसका कोई ना कोई ठोस आधार अवश्य होता है। जिनसे प्राकल्पना के निर्माण में सहायता मिलती है। इन आधारों को ही प्राकल्पना का स्रोत कहते हैं। कुछ ऐसे ही स्रोत निम्नलिखित हैंः-

1) तत्परता एवं रुचिः- जैसे ही शोधकर्ता के समक्ष कोई समस्या उत्पन्न होती है उसी के साथ-साथ उस में समस्या के समाधान के लिए मानसिक तत्परता भी उत्पन्न हो जाती है। यदि विषय शोधकर्ता के लिए रुचिकर रहता है तो वह उतनी ही तत्परता हो उसके समाधान के लिए प्राक्कलन का निर्माण करता है। विषय में वह जितना ही दक्ष होगा परिकल्पना का निर्माण उतना ही कुशलता से करेगा।

2) व्यक्तिगत अनुभवः- शोधकर्ता के व्यक्तिगत अनुभव प्राककल्पनाओं के निर्माण में काफी मदद करते हैं। शोधकर्ताओं के लिए किसी विशिष्ट क्षेत्र में खासकर वैसे विषय में जिनके संबंध में उन्हें पर्याप्त अनुभव पहले से ही मौजूद हो, उनके ये अनुभव ही अच्छी परिकल्पना के निर्माण में मदद करते हैं। अतः परिकल्पनाओं के निर्माण का एक प्रमुख आधार व्यक्तिगत अनुभव है।

3) उपलब्ध शोध साहित्यः-परिकल्पना के निर्माण का एक प्रमुख स्रोत पहले से उपलब्ध शोध या अनुसंधान है। आमतौर पर जो शोध होते हैं वे विभिन्न पुस्तकों संदर्भ, विभिन्न शोध पत्रिकाओं, शोध साहित्य में प्रकाशित होता है। पहले किए गए शोध कार्य के शोधकर्ताओं के लिए काफी उपयोगी हो जाता है। यदि वे उसी विषय में शोध करना चाहते हैं तब प्रायः प्रत्येक शोधकर्ता अपने शोध पत्र के बाद के शोधकर्ताओं के लिए कुछ सुझाव एवं अपने शोध की कुछ कमियों का उल्लेख कर देते हैं। नए शोधकर्ताओं को इन सूचनाओं के आधार पर अपनी आवश्यकता के अनुसार परिकल्पना का निर्माण करने में काफी सुविधा होती है। व्यवहारिक दृष्टि से परिकल्पना के प्रतिपादन के लिए यह काफी महत्वपूर्ण स्रोत है।

4) उपलब्ध संगत सिद्धांतः- परिकल्पना ओं के निर्माण का एक प्रमुख स्रोत पूर्व के सिद्धांत हैं। शोधकर्ता, जिस विषय पर शोध करना चाहता है यदि उस विषय पर पहले से कोई सिद्धांत उपलब्ध है तो इसके आधार पर उसे नए शोध के लिए परिकल्पना तैयार करने में सुविधा होती है।

5) विशेषज्ञों के विचार एवं निर्देशः- यह शोध परिकल्पना निर्माण के लिए बहुत ज्यादा व्यवहार में लाया जाता है। जिस क्षेत्र में शोधकर्ता शोध करना चाहता है उस क्षेत्र के अनुभव तथा विशेषज्ञ विद्वानों से संबंधित समस्या पर विचार विमर्श करके एवं उनसे सुझाव लेकर जब परिकल्पना बनाई जाती है तो एक अच्छी परिकल्पना तैयार होती है जो समस्या के समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है।

6) अनुरूपताः- अनुरूपता का अर्थ समानता से है। जब दो वस्तुओं एवं परिस्थितियों में एक-दूसरे से अधिक ॠबदुओं पर समानता रहती है तो एक में किसी गुण या विशेषता को देखकर दूसरे में भी उसकी उपस्थिति की उम्मीद की जाती है। दो भिन्न-भिन्न वस्तुओं, विषयों या प्राणियों में समानता के आधार पर परिकल्पना बनाई जाती है।

7) संस्कृतिः- शोध के लिए परिकल्पना के निर्माण में भिन्न-भिन्न संस ति का भी अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। एक संस ति में जिस प्रकार के परिकल्पना का निर्माण होता है, संभव है दूसरी संस ति में समान परिस्थितियों के रहते हुए विभिन्न परिकल्पना का निर्माण किया जाए।

8) विरोधी परिणामः- परिकल्पनाओं के निर्माण का एक आधार किसी विषय पर विभिन्न शोधकर्ताओं के विरोधी परिणाम भी है। नई शोधकर्ता इन विरोधी परिणामों के आधार पर किसी नई परिकल्पना की रचना कर लेते हैं क्योंकि इसके आधार पर उन्हें किसी निश्चित परिणाम पाने की उम्मीद होती है।

9) पहले के शोधः- पहले के शोध भी परिकल्पना के निर्माण में एक मुख्य स्रोत माने जाते हैं। शोध कार्य शुरू करने के पहले शोधकर्ता संबंधित क्षेत्र में पहले से किए गए शोध कार्यों का अध्ययन करता है। तथा उनसे आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करता है। यह सूचनाएं उस नई परिकल्पना के निर्माण में काफी सहायता पहुंचाते हैं। आमतौर पर जितने भी शोध होते हैं, प्रत्येक में शोधकर्ता अपने शोध के बाद शोधकर्ताओं के लिए कुछ वैसे सुझाव का उल्लेख देता है जिसे शोधकर्ता ने अपने शोध में महसूस किया या इससे संबंधित वैसे विषयों की चर्चा कर देता है जिसके आगे अध्ययन करने की जरूरत है। नये शोधकर्ता इन सूचनाओं के आधार पर शोध परिकल्पना का निर्माण कर सकते हैं या निर्माण में मदद कर सकते हैं।

शोध के लिए परिकल्पना का महत्व या सार्थकता

किसी भी अनुसंधान के लिए परिकल्पना का कितना महत्व, उपयोगिता एवं आवश्यकता है इसे हम निम्नलिखित ॠबदुओं के माध्यम से समझेंगे-

1) परिकल्पना शोध को सार्थक बनाती है-

करलिंगर का मानना है कि परिकल्पना के उपयोग से शोध कार्य सार्थक बन जाता है। परंतु जब समस्या को परिकल्पना में परिवलतत कर दिया जाता है तो इसकी सार्थकता स्पष्ट हो जाती है।

2) यह शोध के लिए दिशा-निर्देश करती हैः-

करलिंगर के अनुसार, परिकल्पना शोध कार्य के लिए रास्ता दिखलाने का काम करती है। परिकल्पना से ही शोधकर्ता को पता चलता है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। किस दिशा में प्रयास करना है और क्या प्रयास नहीं करना है। इससे शोधकर्ता अपनी सीमाओं को जान जाता है और व्यर्थ के प्रयासों से बच जाता है।

3) शोध के लिए आरंभ विंदु प्रदान करती हैः-

परिकल्पना से शोधकर्ता को शोध को कहां से और कैसे प्रारंभ किया जाए इसकी जानकारी मिल जाती है। परिकल्पना के निर्माण से शोधकर्ता को यह मालूम हो जाता है कि शोध अध्ययन कहां से शुरू किया जाए इससे वे व्यर्थ के प्रयासों से बच जाते हैं। इन्हें सही दिशा मिल जाती है और सही मार्ग पर चलकर अपने शोध को आगे बढ़ाता है।

4) परिकल्पना सत्य की स्थापना में सहायक होती हैः-

परिकल्पना के निर्माण के बाद उसके परीक्षण की आवश्यकता होती है। परीक्षण अनुभाविक आधार पर किया जाता है। परीक्षण से प्राप्त परिणाम यदि प्राक्कलन के अनुरूप होते हैं तो परिकल्पना सत्य प्रमाणित होती है। और यदि परिणाम प्रतिकूल हुए तो परिकल्पना असत्य साबित होती है। चाहे वह सत्य प्रमाणित हो या असत्य इन दोनों ही स्थितियों में किसी की स्थापना होती है।

5) प्राकल्पना समस्या के वैज्ञानिक संविधान में सहायक होती हैः-

करलिंगर के अनुसार, परिकल्पना किसी भी समस्या के वैज्ञानिक समाधान में दिशा निर्देशित करता है। चूंकि परिकल्पना परीक्षणीय होती है इसलिए समस्या के आधार पर परिकल्पना का निर्माण किया जाता है। फिर अनुभाविक अध्ययनों के आधार पर इसे सत्य या असत्य सिद्ध कर दिया जाता है। अतः परिकल्पना समस्या के वैज्ञानिक ढंग से समाधान में सहायता करती है।

6) परिकल्पना सिद्धांत में सहायक होती हैः-

शोधकर्ता पहले परिकल्पनाओं का निर्माण करता है और फिर अनुभाविक अध्ययनों के आधार पर उसकी जांच करता है। बार-बार परिकल्पनाओं की जांच के बाद जो परिणाम प्राप्त होता है उसके आधार पर किसी सिद्धांत की रचना की जाती है।

7) परिकल्पना पूर्व कथन में सहायक होती हैः-

परिकल्पना से किसी खास घटना के संबंध में भविष्यवाणी करने में मदद मिलता है। किसी शोध परिणाम के आने की पूर्व उसके संभावित परिणाम प्राप्त करना परिकल्पना द्वारा संभव हो जाता है। करऋलगर के अनुसार, भविष्यवाणी करना परिकल्पना की एक विशेष शक्ति है।

8) परिकल्पना शोध के क्षेत्र को सीमित करती हैः-

करलिंगर के अनुसार, परिकल्पना का एक प्रमुख कार्य शोध के क्षेत्र को सीमित करना है परिकल्पना से शोध का क्षेत्र सीमित हो जाता है क्योंकि इसे दो या दो से अधिक चरों के बीच के संबंधों की एक निश्चित दिशा मालूम हो जाती है। इसमें शोधकर्ता को काफी सुविधा होती है। जब तक परिकल्पना का निर्माण नहीं हुआ रहता है तब तक शोध का स्वरूप सामान्य रहता है। परंतु परिकल्पना के निर्माण के बाद इसका स्वरूप विशिष्ट हो जाता है। परिकल्पना से शोध का क्षेत्र सिमट जाता है तथा केंद्रित हो जाता है।

9) परिकल्पना विश्वसनीय ज्ञान को प्राप्त करने में सहायक होती हैंः-

करलिंगर ने माना है कि परिकल्पना विश्वसनीय ज्ञान को ढूंढ निकालने का एक शक्तिशाली हथियार है। अतः परिकल्पना से विश्वसनीय ज्ञान हासिल करने में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि शोध कार्य को वैज्ञानिक तरीके से पूरा करने के लिए परिकल्पना का महत्वपूर्ण योगदान रहता है ऐसा नहीं है कि परिकल्पना के अभाव में शोध कार्य नहीं किया जा सकता। परंतु इसकी सफलता की पूरी उम्मीद नहीं की जा सकती। करलिंगर ने माना है कि आधुनिक विज्ञान में परिकल्पना के बिना सफल शोध कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। उन्होंने यह भी माना है कि वैज्ञानिक शोध के समुचित संचालन के लिए परिकल्पना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1) तुलनात्मक अध्ययनः भारतीय भाषाएं एवं साहित्य राजमल बोरा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
2) साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमानः देवराज उपाध्याय ,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3) शोधः स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्य विधि- बैजनाथ सिंगल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
4) अनुसंधान प्रविधिः सिद्धांत और प्रक्रियाः एस.एन.गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5) हिंदी अनुसंधानः विजय पाल सिंह राजपाल एंड संस, दिल्ली।

सन्नाटे और खौफ का मंज़र

कुमार सुबोध
इंदिरापुरम,
गाजियाबाद – २०१०१४

26 जनवरी 2001 का दिन था। यह दिन भारत सरकार की तरफ से समूचे देश में सार्वजनिक अवकाश घोषित होता है। इसलिए कामकाजी लोग कुछ विलम्ब से अपने बिस्तर से विदा लेते हैं। हमारे साथ भी कुछ ऐसा ही था।

वर्ष 1994 में बैंक द्वारा दिल्ली से गुजरात हुए तबादले की वजह से उन दिनों सपरिवार अहमदाबाद में निवासित था। दिल्ली वालों को गणतंत्र दिवस की परेड देखने का विशेष जुड़ाव रहता है और क्यों ना हो। हमारी यह परेड मात्र परेड नहीं है। राष्ट्रीय पर्व का यह आयोजन पूरे विश्व में अपनी शान-बान के लिए प्रसिद्धि से जाना जाता है।

सुबह 08:45 बजे का समय था। उस दिन हमारे पास आई माताजी समयानुसार अपनी नियमित दिनचर्या पश्चात् तैयार होकर टेलीविजन खोलकर बैठी थी। धर्मपत्नी घर के फर्श को बुहार रही थी और मैं स्नानागार में था। बेटा पलंग पर गहरी निद्रा में सो रहा था और बड़ी बेटी ट्यूशन पढ़ने गई हुई थी। तभी ड्राइंग रूम से एकाएक माताजी का ऊंचा स्वर कानों में कौंधने लगा। मानो किसी कारणवश चिल्ला रही हों। शब्द ठीक से कुछ सुनाई नहीं दे रहे थे। जल्दी से निवृत्त हो बाहर आने के लिए बाथरूम का दरवाजा खोला, तो समझ में आया। माताजी 'भूकंप आ रहा है' कहकर आगाह कर रही थी - "जहां हो, वहीं एक कोने को पकड़कर सुरक्षित हो जाओ। बाकी ऊपर वाला देखेगा। मन ही मन अपने ईष्ट देव से प्रार्थना करते रहो। सब भला और अच्छा होगा। वही जीवन की रक्षा करेंगे"।

बाथरूम का दरवाजा खोलते ही एहसास हो गया था कि कुछ गड़बड़ है। साधारण कदम ही अनायास रूप से अधिक आगे की तरफ पड़ा था। पुख्ता सबूत हेतु खिड़की की तरफ बढ़ बाहर झांकते ही मोटरसाइकिल एक स्टैंड पर खड़ी दाएं बाएं हिलोरे ले रही थी। पीछे पलटा, तो देखा कि बंद सीलिंग फैन घड़ी के पऐंडूलम की तरह तीव्र गति से झकोले खा रहा था। उसके ठीक नीचे सो रहे पुत्र को तुरंत अपने आंचल में समेटे धीमे से ड्राइंगरुम की ओर लपका, जहां माताजी और धर्मपत्नी पहले से कोनों से सटी ईश्वर से प्रार्थना के माध्यम से सबकी सुरक्षा की गुहार लगा रही थी।

किंकर्तव्यविमूढ़ से दस मंजिला इमारत के प्रथम तल पर स्थित अपने मकान में हतप्रभ बैठे सभी दीवारों को आंखों के समक्ष दरकते हुए देख रहे थे। घर की सभी दीवारों बीच से लगभग 4-6 सेंटीमीटर तक फट गई थी।

अपने घरों को छोड़कर चारों ओर बाहर निकल आए लोगों का हाहाकार, विलाप और चीत्कार भरा शोरगुल सुनाई दे रहा था। सभी अपने घरों और इमारतों को झूला-झूलते अथवा ढहते हुए हताश खड़े देख रहे थे। रिक्टर स्केल पर 7.6 की तीव्रता वाले कच्छ-भुज से चले इस भूकंप ने लगभग 2 मिनट तक धरती को हिलाकर कंपा दिया था, जिसने गुजरात के कई शहरों के अनगिनत इलाकों में भारी तबाही मचाई थी। चारों तरफ मातम का गमगीन वातावरण पसर गया था।

भुज, भचआऊ और अंजार को पूर्णतया खंडहर में तब्दील कर दिया था। बहुत से बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग गिरती इमारतों के मकानों के नीचे कहीं दब गए थे, वहीं दूसरी ओर अनगिनत लोग इसी बीच परलोक भी सिधार गए थे। मृतकों की संख्या 20,000 से ऊपर आंकी गई थी।

इस भयावह और घातक त्रासदी के शांत होने पर हम जब नीचे उतरे, तो माहौल देखकर सिर चकरा गया था। चारों तरफ लोग अपनी जान बचा घरों को छोड़कर खुले आसमान की छाया में इकट्ठा खड़े अपनी पथराई आंखों से जीवन भर की पूंजी को ताश के पत्तों की तरह मलबे में तब्दील होते विलाप कर रहे थे। केवल अहमदाबाद में ही लगभग 1000 इमारतें ढह गई थी।

दोपहर के सूरज की तपन भी अब असहनीय हो गई थी, किंतु बावजूद इसके मायूसी से ग्रसित घबराए हुए लोग वापिस अपने मकानों के अन्दर जाने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे। नीचे एकत्रित बिल्डिंग के लोगों को ढांढस बंधा माताजी संग अपने मकान में लौट हम अपनी

दिनचर्या में लग गए, जैसाकि कुछ हुआ ही नहीं था। उसी दिन शाम की रेलगाड़ी से माताजी को दिल्ली लौटना था। सपरिवार उन्हें रेलवे स्टेशन पहुंच ट्रेन में बैठाकर विदा किया और घर की तरफ बढ़ चले थे। रास्ते भर सारा वातावरण एक अजीब-सी अकुलाहट और उत्पीड़न देता हुआ प्रतीत हो रहा था।

तीन दस मंजिला इमारतों में स्थित 60 मकानों वाले अपने रिहायशी काम्प्लेक्स के नजदीक पहुंचने तक शाम को रात के अंधेरे सायों ने अपनी आगोश में समेट लिया था। बिजली की आपूर्ति बंद कर दिए जाने की वजह से भी चारों तरफ गहरा अंधकार पसरा था। हम दो परिवारों को छोड़ सभी अड़ोसी-पड़ोसी अपने रिश्तेदारों के यहां रहने चले गए थे। चूंकि हमारे पास ऐसी सुविधा का कोई विकल्प उपलब्ध नहीं था, इसलिए अगले तीन महीनों तक दोनों परिवार सन्नाटे और खौफ के मंज़र में इन्हीं अंधकारमय परिस्थितियों से जूझते और आए दिन आते भूकंपीय झटकों को झेलते हुए मेरे वाले मकान में जिंदगी बसर करते रहे थे। हां, मौत के भयावह तांडव की पुनरावृत्ति होने की अधिसूचना जारी होने पर हमें तीन दिन विश्वविद्यालय परिसर में बनाए सरकारी आश्रय में शरणाथह्न के तौर पर बिताने पड़े थे। उन तीन दिनों में जो सदह्न पड़ी थी, वो पिछले 7 वर्षों में गुजरात के विभिन्न शहरों में रहते हुए कभी नहीं देखी थी। दो-दो कम्बल के साथ अपने पास उपलब्ध ऊनी वस्त्रें को शरीर पर धारण करने के बाद भी कंपकंपी छूट रही थी।

आपदाग्रस्त त्रासदी के उपरांत मौत और विस्थापन के कहर से मचे हाहाकार, कोहराम, विलाप और चीत्कार से उत्पन्न जिस सन्नाटे और खौफ के मंज़र ने समाज को रूदन ग्रसित कर चपेट में ले झकझोर दिया था, उसका रती भर भी एहसास और अंदाजा अभी तक शायद इसीलिए नहीं हुआ था, क्योंकि हमारा संबल हमारी माताजी बांधे हुए थीं। उन्होंने ही उन विकट परिस्थितियों में परिवार को ढांढस बंधाया था और बिना घबराए उनका सामना करने के लिए साहस और धैर्य बनाए रखने का सबक दिया था।

इससे यह प्रेरणा मिलती है कि जीवन में कैसी भी विकट परिस्थितियां आड़े आएं, हमें अपने आपको जागरूक रखते हुए संवेदनशीलता विश्वास साहस संयम और धैर्य का परिचय देते हुए उनका सामना करना चाहिए। साथ ही, आस-पड़ोस के मानव समुदाय के प्रति कर्तव्य निभाते हुए उनका संबल बन दृढ़ता से प्रतिस्थापित करने में सहयोगी बनें। ऐसी कर्मठता से ही सन्नाटे और खौफ के मंज़र से सफलतापूर्वक निजात मिल पाएगी, ऐसा मेरा दृष्टिकोण भी है और दृढ़विश्वास भी।

माँ -पिता की अभिलाषा

माँ के आँचल में संवरा बचपन
वही था ममता का दर्पण
उसकी गोद बहुत थी प्यारी
सिखा सब उस चारदीवारी

थामा जब पिता का हाथ
सीख झे तब दुनियादारी
प्यार में थी उनके सख़्ती
पा गये हम अपनी हस्ती

सही ग़लत का पाठ सिखाया
व्यय अपव्यय का ज्ञान कराया
सुख दुःख में संभव रहना
सन्मार्ग की डगर पर चलना

परिश्रम से निरंतर बड़ना
सत्य के पाथ पर अटल रहना
अभिमान अपमान से दूर रहना
आदर सत्कार ही हो गहना

भूखा प्यासा ना सोए कोई
छीनना ना किसी का निवाला

जीवन ही एक रंगमंच
किरदार यहाँ ऐसा निभाना
भूल ना पाए जानने वाला
ज़िंदगी की यही परिभाषा
माँ-पिता की थी अभिलाषा

डॉ. सुनंदा जैन
पूर्व सहायक प्राध्यापिका

हिंदी गीत एवं काव्य संग्रह

मंजू किशोर ''रश्मि''

पुस्तक -''मरीचिका के पार" की मूल संवेदना तृष्णा से पार मानवता को नव उपहार देना है ।

कृति -हिंदी गीत एवं काव्य संग्रह

लेखक - आदरणीय श्री मुकुट मणिराज

पुस्तक का मुख्य पृष्ठ ही लेखक के लिखने की मंशा, तृष्णा और मरीचिका के पार सत्य के आभास को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है। कृतिकार मृग रूपी कुरंग मन को कुलांचे भरता हुआ मरीचिका के पार ले जाना चाहता है। तम से दूर चमकते प्रकाश की ओर बढ़ने की क्षमता देता है।

पुस्तक को हाथ में थामने के बाद एकटक नज़रें गड़ाए पाठक को आगे के पृष्ठ दर पृष्ठ खोलने को मजबूर कर देता है। जब तक आखिरी गीत का मर्म न समझ लें । ''इसको भी जाना ही होगा" करोना जैसी महामारी पर तंज करते हुए लेखक कहते है जैसे-

भारत क्या है, करोना को यह सच समझना ही होगा।

कितने ही आये चले गये, इसको भी जाना ही होगा।

काली रात कितनी भी गहरी हो ठहर नहीं सकती उजाला लेकर सूरज को आना ही होता है।

कोई विप्पत्ति स्थाई नहीं होती। पाठक पुस्तक को पूरा पढ़ न लें तब तक छोड़ने का मन नहीं बना पाता। इस कृति की सभी रचनाएं कवि की मौलिक शैली में हैं पुस्तक जीवन की विभिन्न वास्तविकताओं से साक्षात्कार कराती हुई सीधे पाठकों से संवाद करती हैं सभी गीत और कविताएं उर्जावान पक्ष लिए सृजन क्षमता के स्वरों को मुखर करते है रचनाकार की सृजन की व्यापकता, अनुभव और अनुभूतियां पाठक के ह्रदय को छूने को मजबूर करती है ।

सर्वप्रथम ईश वंदना गीत में गणपति स्तुति में बुद्धि के देव को नमन कर संवर लेते है। लेखक आगे बढ़ते हुए 'आज का गांव' में भूतकाल और वर्तमान यानी, आज के गांव में समय के साथ हुए परिवर्तन व विलुप्त होती लोक संस्कृति की चिंता दर्शाते हैं। पोथी कार कहता है-

पेज. 8

अब धूनी चौपाल नहीं है,
गाय और गोपाल नहीं है।
मक्की की रेशमी लट को,
गूंथें ना कोई बाला ।।
ग्रामवासियों ने दे डाला
गांव को देश निकाला।।

पेज न. 10

'ले कुछ करूं'

आ बिवाई पर तेरे
मर्म धरूं।
और कुछ दिन जी सके
ले कुछ करूँ।।

इस कविता में रचनाकार अपनी सामर्थ्य से अधिक अपने परायो के दर्द बांट लेना चाहते है। वहीं 'दिन हो गये फकीर' में लेखक धरा पर पानी के अपव्यय के कारण होती किल्लत की ओर सभी पाठकों का ध्यान चाहते है और कहते हैं कि पानी बचाओ वर्ना सारी दुनिया रेगिस्तान में तबदिल हो जायेगी । संदेश पहुंचा कर रचनाकर्म धर्म निभाने का प्रयास करता है।

'खेल मेरी गुड़िया' गीत में बेटियों के मर्म को छूती रचना है जो पाठक के हृदय में गहरे से उतर जाती है लेखक गुड़िया के संदर्भ से पूरी नारी जाति की पीड़ा को कम शब्दों में बांध कर भी विस्तार से पाठक के सम्मुख रख देते है। जैसे- 25

धूप छांव आंख मिचौली
झेल मेरी गुड़िया
कंकड़, धूल खिलौने तेरे
खेल मेरी गुड़िया,

कुछ पंक्तियां और जैसे

ठंडा- बासी जो मिल जाये
खाकर फूलों रानी
मां की पीठ बंधे झूले पर
मन भर झूलो रानी
कई दिनों से कुछ पकने को
ताक रही हैं हंडिया .. रानी।

'देश जल रहा' क्या खोया क्या पाया, देश बचाना है,

में मानव जीवन को शर्मसार करते युद्ध और आधिपत्य तथा अधिकारों ने देश की आत्मा को जलाकर राख सा कर दिया है।लेखक अब भी आगाह करना चाहते है कि देश वासियों को युद्ध की विभीषिका से मानव मात्र के विनाश के सिवा कुछ नहीं हाथ लगना और युद्ध और

अपव्यय प्रकृति के विनाश का आव्हान हैं ।
'पी कर देख' रचना में लेखक कहता है
पेज न.-41
अपने लिए सभी जीते हैं
परहित में जीकर देख।
द्वेष दंभ की हाला तज कर
प्रेम का प्याला पीकर देख।।
कि खुद के सुख लिए सभी जीते अगर तुम इन्सान हो और तुममें संवेदना बाकी है तो परहित में अपने जीवन के कुछ अनमोल समय को दूसरों की खुशी में लगाकर देखो। तुम्हें इसी धरती पर स्वर्ग का अनुभव होगा।
पुस्तक यात्रा में 'शिक्षक' के महत्व को बताते हुए लेखक कहते है
पेज.45
स्वयं जलकर जो प्रकाशित कर रहा जग को।
बीन कंटक कर रहा, प्रशस्त हर मग को।।
की जीवन का सर्वस्व लुटा कर भी शिक्षक, शिष्य को मनुष्यता में ढालना चाहता है।
अपने गीतों का विषय परिवर्तन कर लेखक पाठक को प्रेम से जोड़ते है जिसमें - अब न तुम! पेज न.47
अब न तुम यूं याद आओ
अर्द्ध-चेतन मृण्स्मृती को-
अब न छेड़ो ना जगाओं,
अब न तुम यूं याद आओ ।।
''सावन आया", ''गीत प्रीत के"
''तुमको शायद", और
''रूप का दर्प,"
में नायिका से कहता है-रूप यौवन पानी सा बुलबुला हैं। वक्त के साथ ढल जाऐगा। लेखक मनुष्य तन की सच्चाई से रूबरू कराना चाहता है।
पेज न.55
रूप का दर्प इतना न कीजे प्रिय
यह तो पारा हैं छिन में बिखर जाऐगा
उड़ रहा मन का पंछी गगन में अभी
एक दिन वो धरा पर उतर आयेगा।
''इतना हक तो दे दो", ''सपनों के दौर", ''प्रिय बिन जीना", ''प्रियतम कैसे", फागुन आया,
''याद तुम्हारी आई"-
सारे द्वारे बंद कर डाले
रोशनदान हटाए मैंने
तन मंदिर के पांचों द्वारे
पहरेदार बिठाए मैंने
पर इक सूरत चिरपरिचित सी
आंगन बीच खड़ी दिखती हैं
मैं चुपचाप निहारा करता
वह कुछ शब्द चित्र लिखती है
ज्यों ही छूने को बढ़ता हूँ
होती पल भर में दूर पराई
जब जब याद तुम्हारी आई।
लेखक प्रेम के सभी आयामों को खुद में भरता है। पाठक पढ़ते समय अपने प्रेम के मर्म स्पर्शी विरह और मखमल से नाजुक अहसांसो को हृदय में उतार कर जिवतंता अनुभव करते हुए पुस्तक हाथ में लिए स्वयं के प्रेम की मन ही मन यात्रा कर आता हैं।
'विदाई गीत' में विदाई के कठिन पलों को अनुभव करता पढ़ते-पढ़ते ही पाठक का गला रूंध कर देता है। विदाई किसी की भी हो बिछूढ़न के पल किसी भी सजीव के लिए कठिन क्षण होते हैं। वहीं सभी कविताओं और गीतों में सह-संबंध बनाती हुई संवेदनाओं की व्यापक अनुभूति कराती कृति अपने प्रवाह में बहती आगे बढ़ती है।
'जिस घर में होती गौ सेवा' गीत में रचनाकार ने गौ वंश के उजड़ने की चिंता तो करते ही है पूरे गीत में गौ वंश को बचाने वाले विभिन्न लोक देवताओं के बलिदान की चर्चा करते हुए संपूर्ण भारत में गौ वंश की दुर्दशा को सम्मुख रखकर सभी से गौ रक्षा का प्रयास करने की अपील करते है
आगे 'इक्कीसवीं सदी ', मजहब के खातिर,राम सेतु, अभी-अभी तो, में सामाजिक दर्शन को उभारती कृति हैं। संवेदनाओं के बंद दरवाजे खोलती हुई काव्य संदर्भ से जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों के किनारे बांधे तरंगनी सी पाठक के हृदय में कई दशक तक बहती रहेगी।
कवि आदरणीय मुकुट मणिराज जी के इस काव्य संग्रह में 56 रचनाएं हैं । जिनमें भावनाओं के विभिन्न रंग बिखेरते 28 मुक्तक, सवैया, प्रेम-विरह का मर्म स्पर्श करती प्रेम के उच्च सोपानों का रस पाठक के हृदय में उड़ेल देती है। पुस्तक कृतिकार के मन, विचार विश्लेषण और समाज के विविध परिवेश पहलू को उद्घाटित करती है। संवेदना समरसता की समीर बहा विचार बंध खोलने का प्रयास करती है। लेखक ने अपने आस-पास के परिवेश, वातावरण व समाज को देखकर, समझकर अपने भीतर जो भाव अंकुरित किए है धीरे -धीरे ये ही सब भाव पल्लवित और पुष्पित हो संवेदनाएं बन कलम की सहायता से कागज पर उकेरे है और सृजनकर्ता दिल के महीन भावों को पाठक के सामने खोल देता है। शब्द और विचार तो प्रत्येक व्यक्ति के पास है पर लेखक अपने लिखने की कला और संवेदना से पाठक को अपने साथ-साथ सामाजिक , मानविकी व्यापक दृष्टिकोण की ओर ले जाते है।

नारी की दृष्टि में नारी

माधुरी भट्ट

नारी की दृष्टि में नारी आज भी वह मुकाम हासिल नहीं कर पाई है जो उसे मिलना चाहिए था ।मुट्ठी भर संख्या को छोड़करआज भी वह पिछड़ी हुई है या दोयम दर्जे पर ही अपना अस्तित्व बनाए हुए है। इसका श्रेय भी स्वयं उसे ही जाता है क्योंकि सही मायने में उसने स्वयं को जाना ही नहीं है ।जितने भी जघन्य अपराध उसके साथ होते हैं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उसकी भूमिका न हो ऐसा सम्भव ही नहीं है। वह चाहे तो समाज में व्याप्त सभी बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने में अपनी अहम भूमिका निभा सकती है ।आज जो भी अपराध पुरुषों द्वारा उसके साथ घटित हो रहे हैं,उसके मूल में भी उसकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है क्योंकि अपराध करने वाला पुरुष भी उसी का पैदा किया हुआ है। जब घर में बेटा बहू पर गुस्सा दिखाता है या हाथ उठाता है तब माँ यह कहकर अपने बेटे का पक्ष लेने में कोई कसर नहीं छोड़ती कि निश्चित तौर बहू में ही कोई कमी होगी , भले ही बहू निरपराध ही क्यों न हो ।बेटा शराब पीकर उल्टी-सीधी हरकतें करे तब भी बहू को ही दोष देने से नहीं चूकती सास,यह कहकर कि बहू में ही कुछ खोट है नहीं तो बेटा शराब की लत ही क्यों पकड़ता ।यदि घर में कुछ अप्रिय घटना घट जाए तो बहू के पैर शुभ नहीं है, बहू को मनहूस कहने की अहम भूमिका भी स्वयं नारियाँ ही निभाती हैं। किसी शुभ कार्य में यदि कोई विधवा महिला अपनी सक्रिय भूमिका निभाना चाहे तो स्वयं महिलाएँ ही कानाफूसी कर "अपशकुन हो जाएगा " कह कर उस विधवा पर उंगली उठाती हैं। बहू यदि एक के बाद दूसरी बेटी जन्म देती है तो यह जानते हुए भी कि बेटा या बेटी पैदा होने में पुरुष के ही ग या ल शूक्राणुओं पर निर्भर करता है, नारी के पास तो हर हाल में ग ही है , प्रताड़ित नारी को नारी ही करती है।

नारी किसी भी राष्ट्र , समाज या परिवार की आधारशिला होती है। सामाजिक परिवेश में जो कुछ भी घटित होता है उसका सीधा प्रभाव हर प्राणी पर होना स्वाभाविक ही है। विशेष तौर पर नारी पर तो स्वभाव से ही संवेदनशील है ।उसके आसपास जो भी घटित होता है, उसके मानस पटल पर अपनी विशिष्ट छवि रच लेता है। यही कारण है कि नारी वैदिक काल की अपनी भूमिका को तो न जाने इतिहास के पन्नों में कहाँ दफ़्न कर दी और याद रहा तो मध्यकाल का इतिहास जिसमें उसकी भूमिका मात्र एक उपयोग की जाने वाली वस्तु बन गई ।जहाँ उसकी अपनी स्वतंत्रा, अपनी इच्छा के लिए कोई विकल्प ही नहीं था ।वह पुरुष के हाथ की कठपुतली बन कर मात्र भोग की वस्तु बनकर रह गई ।लेकिन जिस तरह से राख की ढेरी के नीचे चिनगारी दबी हुई रहती है और एक तेज़ हवा का झोंका आने पर राख की परतें हटती हैं और ऋचगारी सुलग उठती है उसी तरह आज की नारी जागृत नारी है ।शहर हो या गाँव हर जगह बदलाव आया है ।पहले जहाँ एक हाथ लम्बा घूँघट निकाले रखना उसकी मजबूरी थी,अब कुछ विशिष्ट स्थानों और अवसरों पर ही वह स्वेच्छा से सिर ढकती है। कुछ वर्षो पूर्व यदि किसी कारणवश बहू के सिर पर से पल्ला खिसक जाता था तो उसके चरित्र पर ही लाँछन लगाने में सास, जेठानी, ननद कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। आस -पड़ोस में यदि किसी ने देख लिया तब तो न जाने कितनी कहानियाँ गढ़ ली जाती थी ।आज उन सब स्थितियों के बारे में सोचकर भी रूह काँप जाती है। इस तरह के प्रकरण में महिलाओं की ही अहम भूमिका रही है ।कारण है उनके अपने पूर्वाग्रहों से ग्रसित होना। उन्हें लगता रहा कि उनके साथ तो यही सब कुछ हुआ है तो फिर अब तो शासन -सत्ता उनके कब्ज़े में हैं तो उन्हें भी तो उसी मर्यादा का पालन करना होगा। परिवार जनों के बीच बैठने और विचार-विमर्श करने का अधिकार केवल घर की बुजुर्ग महिलाओं को ही मिलता रहा। पूरा परिवार जब भोजन कर ले उसके बाद ही बहुओं को खाना नसीब होता , भले ही बहू का उस समय भोजन करना निहायत मजबूरी ही क्यों न हो !परिवार में उनके साथ जितने भी अमानवीय व्यवहार किए गए, वही सब, वे आने वाली पीढ़ी पर लागू करती रहीं और यह सिलसिला अनवरत चलता रहा। नारी ही नारी की दुश्मन बन बैठी। घर में लड़की के पैदा होने पर पुरुष ने शायद ही इतनी उदासीनता दिखाई हो जितनी नारी होकर उसने दिखाई ।यदि घर में लगातार तीन बेटियों का जन्म हो गया तो बेटे की दूसरी शादी की सलाह देने में भी वह पीछे नहीं रही ।घर में बेटा-बेटी में भेदभाव करना पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर उसकी नारी सुलभ आदतों में शुमार होता गया। बेटियों का अधिक बोलना,

खिलखिलाकर हँसना ,इन सब नैसलगक आदतों पर भी नारी के द्वारा ही अधिक कुठाराघात किया जाता रहा। निश्छल भाव से भी यदि कोई स्त्री किसी पुरुष से दोस्ती कर ले तो उसे चरित्रहीन की संज्ञा देने में नारी ही सबसे आगे रही है। किस की बहू कितना दहेज लेकर आई है, कितने गहनों से लदी है , बहू के मायके वालों ने दहेज देने में कहाँ कसर छोड़ दी है , नित तानों की बौछार तले अपनी ही जाति को भिगोकर तृप्ति महसूस करना , बहू को प्रताड़ित करने के लिए बेटे के कान भरना , इन सब आयामों में भी सदा उसका ही पलड़ा भारी रहा।

लेकिन समय के साथ बदलाव आया और उन्हीं के मध्य से कुछ ऐसी महिलाओं का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने क्रान्ति की अलख जगाई। इन मुठ्ठी भर नारियों ने ज्ञान की ऐसी वर्तिका जलाई जिससे उन्हें तो रोशनी मिली ही साथ ही उस रोशनी की चमक से उन पूर्वग्रहों से ग्रसित बहनों में भी अपनी सोई हुई शक्ति को पहचानने के लिए नव चेतना जागृत होने लगी। आज की जागृत नारी बेटे की माँ और बेटी की माँ को समभाव से देखने लगी है जहाँ पहले बेटे की माँ का पलड़ा भारी और बेटी की माँ का पलड़ा झुका हुआ नज़र आता था। अब नारियाँ ही नारियों के अधिकारों के लिए घर से लेकर बाहर तक सजग हो रही हैं। किसी भी क्षेत्र में वह पीछे नहीं रहना चाहती हैं।अब उन्हें अपनी छिपी हुई शक्ति का एहसास है जो संगठित होकर ही समाज को नई दिशा दे सकता हैं।हालाँकि अभी भी अधिकांश पढ़े-लिखे घरों में अभी भी महिलाएँ महिलाओं के कारण ही अपना अधिकार प्राप्त करने में वंचित रह जा रही हैं।बेटे के प्रति मोहग्रस्त होने के कारण स्वयं की बेटी के साथ भी न्याय नहीं कर पाती हैं। लेकिन अब वह दिन दूर नहीं जब हर महिला पूर्वाग्रहों की केंचुली को उतार फेंक नवचेतना का एहसास करेगी।एक महिला जिसे आगे बढ़ने का मौका मिला वह अपने आसपास की महिलाओं को जागरूक कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगी। तब सही मायने में हमारा समाज विकसित समाज बन एक सशक्त राष्ट्र बनने में सक्षम हो पाएगा।

आप कितने स्वस्थ हैं?

देखने में हृष्टपुष्ट, सुन्दर सुडौल काया एवं निरोगी किन्तु मानसिक तनाव से ग्रस्त , ना कोई जीविविषा, क्या इसे सेहतमंद कहा जा सकता है ?बिल्कुल नहीं - । या फिर एक अंतर्रमुखी जो अन्य लोगों के साथ संवाद करने के बजाय अपने स्वयं के विचारों और भावनाओं पर ही ध्यान केंद्रित करता है ?शायद ये भी पूर्णतः स्वस्थ नहीं कहा जा सकता।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सन् 1948 में स्वास्थ्य या आरोग्य की निम्नलिखित परिभाषा दी गई है।

1 दैहिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ होना ही स्वास्थ्य है। या,

2 किसी व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रुप से अच्छे होने की स्थिति को स्वास्थ्य कहते हैं।। स्वास्थ्य सिर्फ बीमारियों की अनुपस्थिति का नाम नहीं है बल्कि ये वह स्थिति होती है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहे।

दर असल यह सब हमारी जीवनशैली का क़िस्सा है ।

जैसा अन्न वैसा मन ! प्रकृति ने हमे अनेक ख़ज़ानों से नवाज़ा है जिसका हमको आदर करना चाहिए। यही एकमात्र स्रोत है पोषण का । अब सवाल सिर्फ़ सही चयन व प्रचलन का है । इसके लिए सही विवेक व जानकारी की ज़रूरत है ।

आज के दौर में तेज़ गति की महत्ता बहुत बढ़ती जा रही है , फिर चाहे वह ख़ाना हो, पकाना या उगाना । सभी तत्काल । धीमी आँच पर पके खाने का स्वाद ही और है । सब्ज़ियों को कृत्रिम तारिकों से उगाने के फलस्वरूप कई दीर्घकालीन रोगों से ग्रसित हो रही है जनता और फल फूल रहा है दवाइयों का कारोबार । भारतीय पाक कला का मुकाबला नहीं है किंतु फ़ैशनेबल दिखने के लिए फ़ास्ट फ़ूड को अपना रहें है बहुत से लोग । अन्ततः अस्वस्थ हो रहे हैं बच्चे- व्यस्क एक समान।

एक चम्मच चीनी में लगभग ५० कैलरी होती है और दूध वाली चाय में १०२ कैलरी , बिना दूध तथा चीनी की चाय में मात्र २३ कैलरी !!

क्या ऐसे मिलते जुलते तथ्यों की जानकारी से , आपको सही चयन करने में मदद मिलेगी?

यदि हाँ , तो इस पत्रिका के अगले अंकों में और जानकारी पायें व स्वस्थ रहें ।

सुनीता चाँदला
स्वास्थ व फ़िटनेस कोच

धारावाहिक तलाश अस्तित्व की
अध्याय -1
टन टन टन...

अजय शर्मा

घड़ी ने रात के 3:00 बजाए लेकिन यश की आंखों से नींद कोसों दूर थी। बेंगलुरु के अपने अपार्टमेंट में आराम कुर्सी पर पसरा हुआ सॉफ्टवेयर इंजीनियर यश अपनी मल्टीनेशनल कंपनी के रूटीन और अपनी निजी जिंदगी के बीच चल रही कशमकश के गहन मंथन में डूबा हुआ था।

एक मध्यमवर्गीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता था यश। क्या-क्या सपने नहीं देखे थे, उसके माता-पिता ने और बहन मेधा ने। आईआईटी की परीक्षा में उच्चतम रैंक के साथ उत्तीर्ण हो जाने के बाद लगभग चार-पांच सालों का एक कठिन दौर और जद्दोजहद भरा हुआ सफर। बीटेक के बाद आई आई एम अहमदाबाद से एमबीए किया। पढ़ाई ,पढ़ाई और केवल पढ़ाई। बीच-बीच में यदि कुछ था तो अपने दूर गांव में साधारण ढंग से गुजर बसर कर रहे माता पिता और स्कूल में पढ़ रही छोटी बहन मेधा की यादें। आंखों से आंसू बहता यश अपने दोस्त को पूरा करने में लगा रहता। सलदयों के हड्डियों को जमा देने वाले मौसम में चुपचाप निकलने वाली गुनगुनी धूप की तरह उसकी जिंदगी में याशिका आई। कुछ दिनों का साथ भी रहा लेकिन उच्च वर्ग के मानदंडों के बीच रहकर पली-बढ़ी याशिका और मध्यमवर्गीय मूल्यों का पैरोकार रहा यश ज्यादा समय तक साथ नहीं चल पाए। नतीजा वही हुआ जिसका डर था ,दोनों के रास्ते अलग-अलग हो गए। एक अमीर बिजनेस टायकून का हाथ पकड़कर याशिका उसके साथ अपनी मंजिल की ओर चली गई और रह गया तो केवल अकेला यश, अपने टूटे दिल ,बिखरी यादों और मासूम सवालों के साथ.....

बीटेक और एमबीए का लंबा सफर भी आखिरकार पूरा हुआ। और वो दिन भी आया जब यश के हाथों में डिग्री थी। केंपस इंटरव्यू चुके थे और ना चाहते हुए भी अपने पारिवारिक मजबूरियों के दबाव में यश को जॉब ज्वाइन करनी ही पड़ी। हालांकि यश चाहता था कि यूपीएससी क्लियर करके आईएएस बने और जिला कलेक्टर बनकर देश और समाज के नव निर्माण का संकल्प लें, व्यवस्था के सुधार का सूत्रपात करें,

जनसाधारण के जीवन स्तर के उन्नयन का प्रयास करें, लेकिन यह सब बातें एक दिवास्वप्न बन कर रह गई और माता-पिता के अघोषित दबाव के सामने आत्मसमर्पण करके ना चाहते हुए भी उसको नौकरी ज्वाइन करनी पड़ी। वैसे उसमें कोई बुराई नहीं थी। यश एक मेधावी विद्यार्थी था। संपूर्ण शैक्षणिक अवधि के हर स्तर पर उसने शानदार अकादमिक सफलताएं प्राप्त की थी। एक शानदार बहुराष्ट्रीय कंपनी ने उसको अच्छे वेतन पैकेज पर चयनित किया था। लेकिन अपने मन को मार कर एक यांत्रिक जीवन जीते चले जाना, यह यश को मंजूर नहीं था। विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनी जिसको केवल अपने टारगेट्स से ही मतलब था। अपने उत्पादित किए गए माल को विश्व स्तर पर खपाना ही जिसका एकमात्र धर्म था। निजी लाभ के लिए मार्केट बनाना , प्रचार तंत्र का सहारा लेना, ग्राहकों के मन में अपने उत्पाद के लिए पैठ बनाते जाना, यही कंपनी की रणनीति में शामिल था। 'हायर एंड फायर ', कर्मचारियों के निजी विश्वास, जीवन ,भावनाओं , सुख दुख से कोई सरोकार नहीं। सुबह दफ्तर पहुंचने का टाइम सुनिश्चित था लेकिन शाम को वापस आने का कोई टाइम नहीं था। मीडिया सर्कुलर, ईमेल ,प्रेजेंटेशन, देशव्यापी और विश्व व्यापी भ्रमण, फाइव स्टार होटल में लंच और डिनर, एयरलाइंस , सिगरेट, कॉफी ,फास्ट फूड, यहां तक कि कॉकटेल भी। अब यही सब उसकी ऋजदगी का पार्ट एंड पार्सल बनता जा रहा था। उत्तर भारत के एक राज्य राजस्थान के एक छोटे से ग्रामीण कस्बे के साधारण सरकारी स्कूलों से निकला यश मूलतः एक धालमक और आध्यात्मिक स्वभाव का व्यक्ति था। परिवार में पूजा ,पाठ, व्रत, भजन, त्योहार, इन्हीं का जोर रहता था। माता-पिता दोनों ही भगवान की सत्ता में विश्वास रखने वाले और ईश्वरीय विधान को

स्वीकार करने वाले थे। किंतु अब यश की जिंदगी का आधार उपभोक्तावाद ,भौतिकवाद और बाजारवाद हो गया था ।समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर किस तरह से इस जीवनशैली के परिवर्तन को आत्मसात करे ।और एक नई सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में डालने का स्वयं को अभ्यस्त बनाएं।

एक भीषण द्वंद्वमानसिक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर लड़ रहा था-यश भारद्वाज। एक और धरातल बना था द्वंद्वका- नैतिकता का धरातल, यश की कंपनी के चेयरमैन और सीईओ मि. थॉमसन एक नया सॉफ्ट ड्रिंक इंडिया में लॉन्च करने जा रहे थे। यश को पता था कि ओवरसीज टेरिटरी में यह प्रोडक्ट गुणवत्ता के मानदंडों पर खरा नहीं उतरा था। यूरोप के कई देशों ने अपने बाजार इसके लिए बंद कर दिए थे। लेकिन बाहर हुए नुकसान की भरपाई मि. थॉमसन इंडिया में पूरा करना चाहते थे ।यश इस कैंपेन के खिलाफ था ,लेकिन दुर्भाग्य से यश की प्रतिभा से परिचित मिस्टर थॉमसन ने यश को इस कैंपेन का हेड बनाया था और प्रमोशन और सैलरी इंक्रीमेंट देकर बेंगलुरु हेड ऑफिस में काफी सीनियर और टॉप रिस्पांसिबल पोस्ट पर बिठा दिया था ।च ाहकर भी मना नहीं कर पाया था यश, आखिर मना करता भी तो कैसे ?हां जी की नौकरी और ना जी का घर, सालों की कठिन तपस्या के बाद आज इस कंपनी में इतने महत्वपूर्ण जगह पर काबिज होकर मैनेजमेंट का विश्वास जीत पाया है ।एक तरफ उसको मिलने वाले पे एंड पर्क्स और दूसरी तरफ देश के नागरिकों के स्वास्थ्य से खिलवाड़। आखिर क्या करें और कहां जाएं कुछ समझ नहीं आता, कभी मन कहता कि भाड़ में जाए ऐसी नैतिकता, अपना काम बनता और भाड़ में जाए जनता। तो कभी अंतरात्मा बोल उठती थी कि, नहीं यश, तुम्हें कोई हक नहीं है मासूम जानों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने का, और देश की युवा पीढ़ी को फैशन के नाम पर धीमा जहर पिलाने का। मत करो ऐसा जघन्य पाप और छोड़ दो इस काम को। लेकिन तभी उसके सामने दूर राजस्थान में रह रहा अपना परिवार आ जाता ,बूढ़े मां- बाप, स्कूल में पढ़ रही प्यारी और चुलबुली पहन मेधा , और उसकी खुद की जिंदगी का क्या ?और क्या कर पाएगा वह? निजी क्षेत्र की चक्की बड़ी भारी चलती है और पीसती भी बहुत महीन है। और सरकारी क्षेत्र में तो उम्मीद ही करना बेकार है। sc-st-obc, एसबीसी, एमबीसी, जनरल, ना जाने कितने अवरोध हैं? कहां एडजस्ट कर पाएगा वह स्वयं को? और निजी क्षेत्र का तो नाम ही प्रॉफिट मेकिंग है। वहां तो केवल निजी लाभ के लिए उपलब्ध समस्त संसाधनों के दोहन का दर्शन ही काम करता है

पिछले सप्ताह की घटना को याद करके सिहर गया यश। अपने बॉस मिस्टर थॉमसन की जबरदस्त बहस हुई थी उससे। स्पष्ट शब्दों में कहा था उससे मिस्टर थॉमसन ने, I don*t want to listen anything regarding this matter- Put yourself hurt and soul in order to make it a successful campaign. उनकी हां में हां मिलाते हुए कंट्री हेड रामानुजन ने भी कहा था," अइयो यश जी ,याद करो अपनी स्कूली समय की बात। महत्वाकांक्षा का मोती कठोरता की सीपी में पलता है। तो थोड़ा कठोर बनो जी। घोड़ा अगर घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?और बात आज स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओं की ही की जाए तो सिगरेट, शराब , फास्ट फूड, जाने कितने उत्पाद हैं जो मानव स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हैं, लेकिन फिर भी देश में धड़ल्ले से बिक रहे हैं या नहीं?कितने ही थ्व्व्, ।हउंता, ेच्,थ्ेप है लेकिन किस को फर्क पड़ रहा है?अरे स्वदेशी उत्पादों के नाम पर देश में अपने विपणन तंत्र का जाल बिछाए बैठे लोगों के उत्पाद ही मानकों पर खरे उतरे नहीं उतरते, फिर हम ही क्यों परेशान हैं?" लाचार और मूक हो गया था यश ।अब उसे याद आ रही थीं अपने मैनेजमेंट टीचर्स की मजाक में कही गई बातें- ways remember that bosses are always right- You do not have any right for argument-

रात के 3:30 बज गए थे। सिगरेट का आखिरी कश और काफी का आखिरी घूंट खत्म करके आखिरकार यश अपने बिस्तर पर लेट गया। नींद आंखों से रूठ कर जाने कहां चली गई थी?हालांकि कल रविवार था, छुट्टी का दिन। लेकिन शरीर और मन को आराम तो देना ही था ।ताकि अगले दिन और जीने के लिए की जाने वाली लड़ाइयों के लिए अपने आपको तैयार कर सके। आखिरकार उसकी पलकें नींद से बोझिल होने लगी और वह गहरी निद्रा के आगोश में चला गया।

माँ गंगा

उषा गुप्ता
इंदौर

सदियों से पावन करती आई
शिव जटा से धरती पर आई
गंगोत्री हिमनद से यह निकलती
पंच प्रयागों का सफर तय करती
गंगोत्रि से निकलकर
उत्तरांचल से चलकर
सुंदरवन तक को सींचती
बड़े भूभाग को इस ने घेरा
दुर्लभ प्रजातियों का इसमें डेरा
जो कर ले इसमें स्नान
कट जाएं पाप,मिला वरदान
गंगा इस का प्यारा नाम
तीर्थ बनें, बसे कई धाम
पावनता का यह श्रृंगार
धालमकता का मिला संस्कार
कष्ट दोष पाप करती समाहित
बिजली-पानी कृषि के करती हित
जो भी करो इसमें प्रवाहित
सब लेती अपने में समाहित
बड़े-बड़े दुष्टों को संहारा
सगर पुत्रें को पाताल से तारा
भावनात्मक आस्था का यह आधार
प्राकृतिक संपदा भरी इसमें अपार
मां और देवी रूपों में होती उपासना
सौंदर्य की मूरत सभी करें आराधना का
केवल नदी नहीं, यह है संस्कार
भारतीय संस्कृति का श्रंगार
गंगा ही पावन जलधार
कर देती सबका उद्धार
माँ है तो माँ ही रहने दो
कलुषित कर संकट में मत पड़ने दो
देश का गहना है गंगा
भारत भाल तिलक है गंगा

हुआ प्रभु मौन है

मौन हैं सब पूंछते पर , मौन क्यों तू सत्य है ?
क्यों है डरता जो हठीली कौम के ये कृत्य हैं ?
जिंदगी ऊपर है सारे धर्म से ,
होगी बस पहचान तेरे कर्म से ।

क्या है ईश्वर , क्या है नानक , क्या ईशु है , क्या है अल्ला ?
वो तो बस एक शक्ति है , सर्वज्ञ है एक पुंज उजला ।
क्यों उसी के नाम पर हर कौम मुखरित है सदा ,
कर रहे इंसान को इंसान से हर पल जुदा ।

देख कर इंसान की फितरत हुआ प्रभु मौन है ।
हो रहा अचरज उसे , उसकी कृति यह कौन है ।
शोर ही बस शोर है , सर्वत्र है हुंकारता ,
गोलियों , नारों में वो तो नाग सा फुफकारता ।

मौन सच के संग में भयभीत हो कोने खड़ा ,
बंद हो यह क्रूरता , आऊंगा तभी वो है अड़ा।
मौन रहकर पल दो पल , अन्तस की भाषा गर सुने ,
मौन सा शिक्षक न कोई, मौन में ही प्रभु मिलें ।

मंजु श्रीवास्तव 'मन'
वर्जीनिया,अमेरिका

नन्दनी

बचपन में एक बेज़ुबान से,
प्यार हो गया था मुझे,
ख़रीदा था बाबू जी ने,
लाल मणि चाचा से,
एक गाय और बछड़ा !

बांधा गया लॉन में लाकर,
तुरंत नामकरण हो गया,
नंदनी और रामू !

अपने बच्चे के बचाव में वह,
सींग चलाती थी,
शायद सीखा था उसने,
दूसरों से बचना !

नंदनी के आने से,
घर बड़ा बदला सा था,
जैसे लगा घर के बाहर,
कोई इंतज़ार करता था !

तुरंत एक लगाव हो गया,
वह एक तरफ़ा नहीं था,
वह दिन भर,
कछार पर चरती,
आवाज़ देने पर,
घर आ जाती थी !

रास्ता भटक गयी एक दिन,
वह नहीं आयी,
खोज चालू हुई उसकी,
दूर दूर तक कोई पता नहीं,
मैंने भी खाना तक छोड़ दिया,
सब इधर उधर खोजते रहते !

श्रीराम शलाका प्रश्नावली से लेकर
तोता जो कचहरी के सामने
भविष्य बताता था
नव दस साल की उम्र में
सब का चक्कर लगा लिया था

उसका खोना जैसे,
एक बड़ा हिस्सा खो जाना था,
एक दिन एकाएक,
चार पाँच किलोमीटर दूर,
करौंदिया मोहल्ले में,
भाई साहब ने उसे देखा !

मिलने की उम्मीद क्या होती है,
आज समझ आया,

लेकिन बाबू जी को,
अंदर से खलता रहा,
उन्होंने दान के तौर पर,
नंदनी को बुआ के घर,
देने का निर्णय लिया !

मुझे भी लगा की वह रहेगी,
लहलहाते खेतों के बीच,
देखने वाले भी होंगे,
शहर की तरह खूँटे से,
नहीं बंधी होगी दिनभर,
छूटने का दर्द तो बहुत था,

पर उससे कहीं ज़्यादा था,
फिर से ना खोने की ख़ुशी !

आज एक मज़दूर उसे लेने आया,
नंदनी को मैंने बड़ी तन्मयता से देखा,
आँखे भर आयी,
मैंने बार बार अकारण,
नंदनी के नाम से बुलाया !

गली के आख़री मोड़ पर,
नंदनी को जब अंतिम बार बुलाया,
उसने पीछे नहीं देखा,
शायद उसे एहसास था,
अगर उसने फिर देखा तो,
मुझे बहुत याद आयेगी !

कौन कहता है कि बेज़ुबान,
को प्यार नहीं होता,
इंसान से कहीं ज़्यादा उसको,
अपनेपन का एहसास होता है !

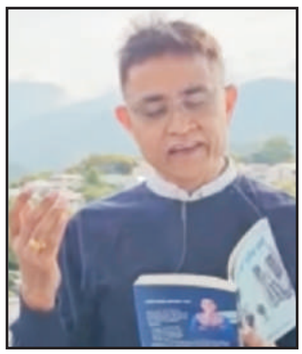

शान्ति प्रकाश (शान)
सिंगापुर

मील का पत्थर

मैं
मील का पत्थर नहीं हूँ
सिमट जाऊँगा
जो राहों में,
मैं एक मुसाफिर हूँ
जो आगे बढ़ता जाऊँगा
छोड़ कर अपने निशां
उन पत्थरों की छावँ में।
मै तलाशता हूँ मंजिलें
जहाँ प्यार मिलता है
आप जैसा को
शिल्पकार मिलता है
तराश कर मुझको जो
नायाब बुत बना दे
अपने हुनर से
बुत को भी बस
इंसान बना दे।

जो कहते हैं चरखे से ही आजादी आयी थी,
नेहरू गाँधी ने अंग्रेजों को आँख दिखायी थी।
वो देखें कैसे कैसे कष्ट उठाये थे दिवानों ने,
दी खुद की कुर्बानी, तब आजादी पायी थी।

निकल पड़े थे सड़कों पर, निज घर को छोडा,
अंग्रेजों ने लाठी मारी, लालाजी का सिर फोडा।
सजा मिली थी काला पानी, दो जन्मों तक की,
किया समन्दर पार तैर, सावरकर ने कारा तोड़ा।

जाने कितने वीरों ने कुर्बानी दी थी,
भगत सिंह- आजाद, जवानी दी थी।
लडता रहा सुभाष, देश की खातिर,
तब भारत को, नयी कहानी दी थी।

जाने कितनी माँओं ने अपने बेटे खोये थे,
कितनी ललनाओं ने, अपने सुहाग खोये थे?
कितने बूढ़े कन्धों ने, बेटों की अथहृ ढोयी थी,
जाने कितनी बहनों ने, अपने भाई खोये थे?

लक्ष्मी ने कुर्बानी दी, तब आजादी आई थी,
आजाद मरे थे गोली से, तब सत्ता घबराई थी।
जाने कितने गुमनामी में, फाँसी फंदा चूम गये,
जब लहू बहा सड़कों पर, तब आजादी पाई थी।

डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन

आज भी..
देखा मैंने उसे
पानी में खालिश
नमक डाल कर
उसने मिटाई
अपनी भूख

आज भी--
खाता है वह
सिर्फ रात में ही
कभी- कभी तो
वह भी उसे
होता नहीं नसीब

आज भी--
उसने जम के
पसीने बहाए
ढेर सारे और
दिन भर की है
ईमानदारी से मजूरी

आज भी--
मिलते हैं
उसके बच्चे को
पोषाहार और
पोशाक के पैसे
सरकारी स्कूल से

आज भी--
उन पैसों से
खरीदता है वह
कुछ बकरियाँ
देता है बटईए पर
मुनाफे के लिए

आज भी--
टूटे छप्पर के
चंद दिनों की
मरम्मती के लिए
लिए हैं कुछ
पैसे सूद पर

आज भी..
उसकी घरवाली
चौका- बरतन के लिए
गई है लोलुप भेड़ियों के
अंधेरे माँद में बेखौफ
सब कुछ जानते हुए

आज भी--
कहने को
आजाद देश में
वह सो नहीं पाता
सुकून- चैन की
मुकम्मल नींद

और..

आज फिर--
मेरी पोटली में
नहीं हैं चंद अल्फ़ाज़
उसकी दबी हुई
आवाज को
दूर- दूर तक
पहुँचाने के लिए..

डॉ. शिप्रा मिश्रा

भटकी सी नदिया

मैं हूं एक भटकी सी नदिया गुरुवर
कैसे बहूं जो मिले मुझको सागर

अनजानी राहों पर मैं बहे जाती
झूठी कहानी मैं कहे जाती
अपनी वो राह क्यों ना बनाती
घर अपने पहुंचु मैं जिस पर चलकर।
मैं हूं एक भटकी सी

भावों की लहरों से मैं खेलती हूं
कितने ही रंगों को मैं घोलती हूं
लक्ष्य से अपने फिर डोलती हूं
युक्ति बता दो वो रहूं मैं संभल कर
मैं हूं एक भटकी सी

पथरीली राहों पर मैं बहे जाऊं
ज्ञान और भक्ति के फूल खिलाऊ
चित्त की शक्ति अपनी जगाऊं
कृपा करो गुरु विनती को सुनकर।
मैं हूं एक भटकी सी नदिया गुरुवर
कैसे बहूं जो मिले मुझको सागर।

पूनम गौतम

मैं किताब होना चाहती हूं

जिन रास्तों से गुजरूं
उन रास्तों से मैं
क़दमों के निशान मिटाना चाहती हूं,

मैं कुछ बातों को याद तो करती हूं मगर
दिल से........,,
उन यादों के निशान मिटाना चाहती हूं।।

सुना है कि 'नेकी कर दरिया में डाल'
हाँ !मैं नेकियां कर
उनको भूल जाना चाहती हूं।

मैं कुछ बातों को याद तो करती हूं मगर
दिल से........,,
यादों के निशान मिटाना चाहती हूं ।।

गीत, ग़ज़ल कविताओं में लिखकर खुद को
ना होकर भी.......,,मेरे बाद
.........मैं होना चाहती हूँ।

मैं कुछ बातों को याद तो करती हूं
मगर दिल से........,,
यादों के निशान मिटाना चाहती हूं।।

विरह में उदास बादल बरसतें हैं, धरती के लिए
ये बिछोड़े का दर्द ना सहे कोई,
मैं ऐसी एक....दुआ चाहती हूं,

और कोई पढ़ें बार-बार जिसे
सब फ़िक्र छोड़कर ....,,
मैं ऐसी एक.......,,'किताब' होना चाहती हूं ।

मैं कुछ बातों को याद तो करती हूं मगर
दिल से........,,
यादों के निशान मिटाना चाहती हूं।

जिन रास्तों से गुजरूं
उन रास्तों से मैं
क़दमों के निशान मिटाना चाहती हूं ।।

अनुराधा अछवान

हिन्दी....मेरा गौरव

सुगम सरल सहज है हिन्दी,
शब्दों का संसार है हिन्दी,
हमको परिभाषित है करती,
भावों का भंडार है हिन्दी ।

कुछ लिखना हो या पढ़ना,
कुछ सुनना हो या कहना,
हमारा आत्मविश्वास बढ़ाती,
दृढ़ता की भाषा है हिन्दी ।

मन की बातें हो लिखनी,
या फिर संदेशा प्रेम का हो,
मृदुल कोमल प्रतीति वाली,
मनुहार की भाषा है हिन्दी ।

डॉ. अलका यादव
छत्तीसगढ़

वन गमन

शशि महाजन
नाइजीरिया

इससे पहले कि राम कैकेयी के कक्ष से बाहर निकलते , समाचार हर ओर फैल गया, दशरथ पिता और राजा, दोनों रूपों में प्रजा के समक्ष दोषी घोषित कर दिए गए थे।

राम के निकलते ही सेवक ने सूचना दी,

''सभी आपकी मुख्य कक्ष में प्रतीक्षा कर रहे हैं ।''

राम बिना कोई प्रश्न किये मुख्य कक्ष की ओर मुड़ गए ।

द्वार पर पहुँचते ही लक्ष्मण उनसे लिपट गए,

''आप चिंता न करें भईया, पूरा जन समूह और माताओं का आशीर्वाद आपके साथ है।''

राम शांत मन से कौशल्या के सामने खड़े हो गए,

''मेरी माता की क्या आज्ञा है ?'' राम ने कहा।

''आज्ञा नहीं है, विश्वास है, तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे, जिससे निर्दोष मारे जायें।'' कौशल्या ने द्रवित होते हुए कहा।

''और छोटी माँ आप क्या चाहती हैं?" राम ने सुमित्रा के समक्ष खड़े होकर कहा।

''राम, मैं न्याय चाहती हूँ।'' सुमित्रा ने दृढ़ता से कहा।

''और न्याय क्या है ?'' राम ने कहीं दूर देखते हुए कहा ।

''अपने अधिकार की रक्षा करना न्याय है।" सुमित्रा के स्वर में नियंत्रित क्रोध था ।

''और अधिकार क्या है ?'' राम ने सुमित्रा की ओर अपनी गहरी आंखें से देखते हुए कहा ।

''अपनी जिजीविषा के लिए संघर्ष करना प्राकृतिक अधिकार है।'' सुमित्रा के स्वर में चुनौती थी ।

''तो मेरे वन गमन से उसका हनन कैसे होगा, जिजीविषा तो वन में भी पर्याप्त है।'' राम ने सरलता पूर्वक पूछा ।

''परन्तु राजा बनना तुम्हारा अधिकार है ।'' सुमित्रा ने ज़ोर देते हुए कहा।

''और यदि इसे मैं अपना कर्तव्य मान लूँ तो ?'' राम ने स्नेह पूर्वक सुमित्रा के समक्ष हाथ जोड़ते हुए कहा ।

''सीता, तुम क्या कहती हो?''

राम ने सीता के समक्ष आकर कहा ।

''पिता और राजा दोनों के आदेश का उल्लंघन मात्र तभी हो, जब जन साधारण का अहित होने का भय हो, अपने व्यक्तिगत हितों को न्याय मानकर, राज्य में अराजकता फैलाना, मानवता के लिए हानिकारक है।" सीता ने राम की आँखों में देखते हुए कहा ।

''और तुम लक्ष्मण क्या कहना चाहते हो?" राम ने लक्ष्मण के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा ।

''वचन का निरादर सभ्यता का निरादर है, पिता की वचन पूर्ति पुत्र को करनी ही चाहिए, वह यदि पिता की संपत्ति तथा यश का उत्तराधिकारी है तो, वचन का भी है।।'' लक्ष्मण ने विनम्रतापूर्वक कहा। राम मुस्करा दिये और मुख्य द्वार की ओर मुड़े, सीता, लक्ष्मण और मातायें भी उनके साथ चलीं । द्वार के बाहर पूरा नगर उमड़ा खड़ा था, सब ज़ोर ज़ोर से कह रहे थे,

''राम हमारा राजा है।''

द्वार पर बने एक छोटे मंच पर राम खड़े हो गए, राम ने हाथ जोड़ते हुए कहा,

''राम अपनी प्रजा को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि पूरा राजपरिवार यह मानता है कि, इन स्थितियों में वन गमन एक उचित निर्णय है, मेरा राजद्रोह आप सबको युद्ध, अर्थात् विनाश की ओर ले जायेगा, मेरा कर्तव्य आपकी युद्धों से रक्षा करना है, न कि उस ओर झोंकना। जिस राजा ने जीवन भर आपकी सेवा की है, इस आवश्यकता की घड़ी में आप उन्हें मित्र की तरह वचन पूर्ति में सहायता दें, और भरत के आने पर उसे वहीं स्नेह दें , जिस पर उसका अधिकार है।''

जनसामान्य शांत हो गया तो राम ने फिर कहा,

''जाने से पहले मैं चाहता था, मेरा परिवार और प्रजा मेरे निर्णय से सहमत हों , ताकि आने वाले कठिन समय में हम सबका आत्मबल बना रहे , और हम सब याद रखें कि व्यक्ति कोई भी हो, समाज के हित के समक्ष उसके हित तुच्छ होते हैं।"

जनता राम के वचन सुनकर भाव विभोर हो उठी, आर्य सुमंत ने आगे बढ़कर कहा, ''राम, इस नई यात्रा के लिए शुभकामनाएँ, आज तुमने बहुत कुछ व्याख्यायित किया है, जाते जाते तुम राजा भी हो उठे हो, क्योंकि राजा प्रजा का दार्शनिक भी होता है, उनके विचारों को दिशा देना और उसमें उनका विश्वास बनाए रखना, उसका मुख्य काम होता है, जो तुमने आज कर दिखाया है।''

दुख की इस बेला में भी सबके मन परम संतोष से भर उठे ।

इस धरती के सारे उत्सव

इस धरती के
सारे उत्सव
सिर्फ़ तुम्हारे
आँचल में थे
वो आँचल
जिसको छू लो तो
उड़ने लगता
था लहराकर
कितने मौसम
सिर्फ़ तुम्हारी
आँखो में
उत्तर करते थे
फूलों सा खिलना
सीखा था
राहों पर चलना
समझकर ।
उन आँखो की
झीलों में भी
देखे मेने चन्द्र
दिवाकर ।
जीवन साथी
बनकर तुमने
इस दुनिया में
रंग बिखेरे
मेरे मन में
अपने मन के
रसभिने से
भाव उकेरे
साथ तुम्हारे
चलकर मेने
आशाओं को
जीत लिया था
जाने कितनी
रातें बीती
जाने कितने
उगे सवेरे ।
रोज़ नई इक
आशा बनकर
खिल जाती थीं
तुम मुसकाकर ।
यह दुनिया भी
जीने लायक़
सिर्फ़ तुम्हारे
ही कारण थी
वरना तो इस
दुनिया की हर
गति पहले से
निर्धारित थी
पास तुम्हारा
होना शायद
मुझमें जीवन
का होना था
वर्ना तो मेरी
ख़ुशियों की
हर कथा - कहानी
दारुण थी ।
पाँव रखे थे
जिस दिन तुमने
मेरे घर आँगन
में आकर ।

सुरेश पांडेय
स्वीडन

हरी चूनर

इंदु नांदल जर्मनी
विश्व रिकॉर्ड होल्डर
जर्मनी

काट-काट कर जंगल,
मानव कर रहा अमंगल।

चकाचौंध के चलते ,
किसान बेच रहे हैं खेत,
कोई उनसे पूछे,
खाओगे क्या रेत?
नदियाँ लगी सिकुड़ने,
जानवर लगे घरों से बिछड़ने।

घटती पेड़ों की क़तारें,
बढ़ती-दौड़ती असंख्य कारें ।
ग़र बचाया नहीं सूखती नदियों को,
चुल्लू भर पानी ही रह जाएगा उनमें डूबने को।

किसका है ये दोष?
लालच में नहीं होश,
प्रकृति का अब झेल रहे सब रोष।
स्वच्छ हवा और शुद्ध पानी नहीं मिलेंगे म०लों में,
ऑक्सीजन और सुगंध नहीं मिलेंगे मेड इन चाइना फूलों में।

कटते वृक्ष , सूखती नदियाँ,
देख रही अपने घर कटते गिलहरियाँ।
बागों से लुप्त होती कलियाँ,
नदियों में दम तोड़ती मछलियाँ,
असहनीय हो रही अब प्र ति की सिसकियाँ।

ग़र जीना है तो पर्यावरण को बचाना होगा,
अपनी चाहतों पर अंकुश लगाना होगा,
वरना आधी ही ज़िन्दगी जी कर ऊपर जाना होगा।

आओ, धरती माँ की चूनर रंग दें ,
फिर से उसमें हरा रंग भर दें ,
वृक्षों की उसे सौग़ात दे दें ,
पाला है जिसने उसे न मिटने दें ,
बचा उसको ,ख़ुदको जीवन दान दे दें ,
बचा उसको , ख़ुदको जीवन दान दे दें ।।

हम तुम्हें मतदान करना चाहते हैं
पर बताओ जीत कर तुम क्या करोगे ?
क्या अभावों से भरे दिन दूर होंगे ?
क्या हमारे जख्म पर मरहम रखोगे ?

आ गए हो तुम हमारे द्वार पर तो
अब तुम्हें इंकार कर सकते नहीं हम
पर हमारा दर्द भी सुनना पड़ेगा
भूख में जयकार कर सकते नहीं हम

आज हम श्रमदान करना चाहते हैं
एक अदद क्या नौकरी तुम दे सकोगे ?
क्या अभावों से भरे दिन दूर होंगे ?
क्या हमारे जख्म पर मरहम रखोगे ?

मिट्टियों में हम सदा पाए गये हैं
कंक्रीटों को कभी देखा नहीं है
अस्पतालों में गए तो भाग आये
रोग है भारी, मगर पैसा नहीं है

फिर भी हम सम्मान करना चाहते हैं
क्या हमारे आँसुओं को रोक लोगे ?
क्या अभावों से भरे दिन दूर होंगे ?
क्या हमारे जख्म पर मरहम रखोगे ?

कर सकोगे जल, हवा के वास्ते कुछ
क्यों जहर पीने लगे हैं आजकल हम
मजहबी सद्भाव पर भी सोचियेगा
खौफ में जीने लगे क्यों आजकल हम

राष्ट्र का गुणगान करना चाहते हैं
इस अँधेरे का कहो दीपक बनोगे
क्या अभावों से भरे दिन दूर होंगे ?
क्या हमारे जख्म पर मरहम रखोगे ?

आसमाँ की है नहीं उम्मीद तुमसे
है निवेदन पंख हमारे खोल दो बस
हम कोई वादा नहीं अब चाहते हैं
आँख तुम हमसे मिलाकर बोल दो बस

हम नहीं अपमान करना चाहते हैं
क्या हवाएँ तुम हमें मकबूल दोगे ?
क्या अभावों से भरे दिन दूर होंगे ?
क्या हमारे जख्म पर मरहम रखोगे ?

विनोद पांडेय
गाजियाबाद

वह चुप हो जाती है और
तुम समझते हो वो हार गई
वह नजरअंदाज करती है और
तुम समझते हो वो मान गई
वह रोती नहीं दिखती,
नहीं दिखाती मन के वो छाले
जो रिसते रहते हैं अंदर ही कहीं
और बनाते रहते हैं मवाद
वह फिर भी ओढ़े रहती है मुस्कान
और तुम समझते हो सब ठीक है।
वह करती रहती है समर्पण,
निभाती रहती है फ़र्ज़
और तुम समझते हो
तुमने उसे खुश कर दिया है।
थाम ली है उसकी लगाम
और काबू में कर लिया है।
एक बात जो तुम नहीं समझते
या समझना ही नहीं चाहते
जिस दिन टीस मारेंगे उसके घाव,
बह निकलेगा त्वचा फाड़ कर मवाद
उस दिन भी बहेंगीं नहीं उसकी आंखें
पर तप रही होंगी अंगारों से
होठ किसी मुस्कान से नहीं,
फैल रहे होंगे किसी वक्रोक्ति से।
बस उस दिन वह तोड़ देगी सारे बंधन
और हो जाएगी मुक्त
वह तब नहीं होगी मौन,
खिलखिलायेगी शान से.
तुम तब भी नहीं समझोगे कि
अब वह आजाद है और खुश है
बहुत खुश...

शिखा वार्ष्णेय
लंदन

थाईलैंड में हिंदी

गूंजे हिंदी विश्व में स्वप्न हो साकार ,थाई देश की धरा से हिंदी की जय-जय कार
हिंदी भाषा का जयघोष है सात समुंदर पार, हिंदी बने विश्व भाषा दिल करे पुकार।

वैश्वीकरण के इस युग में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया अति सहज स्वाभाविक आवश्यक और महत्वपूर्ण हो गई है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम भाषा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी भी भाषा है। सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ और घनिष्ठतम बनाने में भाषा की भूमिका सर्वदा सार्थक और सकारात्मक रही है। भाषा मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली साधन है। मानव के संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति का प्रमुख आधार भाषा ही है। जो भाषा जितनी खुली होती है वह उतनी ही विकसित होती है। स्वच्छंद सी आकाश रूपी विश्व में चांद रूपी हिंदी विचरण करती है तो उसके विकसित होने का आभास स्वतः ही हो जाता है। खुले आकाश में चमकते सितारों के मध्य चांद को देखना एक अलग अनुभव देता है। विभिन्न सितारों के मध्य चांद की आभा विलक्षण होती है। ठीक उसी प्रकार विश्व रूपी आकाश में चांद रूपी हमारी हिंदी सुशोभित है जो विभिन्न भाषाओं रूपी सितारों के मध्य अपनी आभा फैला रही है। हमारी मातृभाषा हमारी और हमारे देश की पहचान है। आन- बान और शान है। हिंदी के बढ़ते हुए अंतरराष्ट्रीय वर्चस्व को देखते हुए हम कह सकते हैं कि विश्व फलक पर हिंदी रूपी पुष्प अपनी सुगंध चहूँ और फैला रहा है।

वर्तमान में विश्व फलक पर हिंदी भाषा का प्रचार- प्रसार बहुत तेजी से होने लगा है। यह मधुर भाषा विश्व भाषा के रूप में अग्रसर होती जा रही है। अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि दक्षिण पूर्व एशिया के सुंदर देश थाईलैंड में हिंदी भाषा का सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर विकास हो रहा है। थाईलैंड में रहने वाले भारतीय और थाई लोग देश की सभ्यता और संस्कृति के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति भी सजग हो रहे हैं।इस संदर्भ में हिंदी चलचित्र, हिंदी सीरियलों की महत्ती भूमिका है। यहां के लोगों में खासतौर से युवा पीढ़ी में हिंदी चल- चित्रों के प्रभाव से हिंदी के प्रति लगाव और श्रद्धा दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बॉलीवुड सिनेमा उसके गाने नृत्य के प्रति दीवानगी चरम सीमा पर है। घर -घर में थाई लोग हिंदी चलचित्र बड़े शौक से देखते हैं जैसे अशोका, चंद्रगुप्त, नागिन, महाभारत और रामायण सीरियल बड़े प्रसिद्ध है। इसी तरह भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं रीति-रिवाजों, देवी-देवताओं, मेहंदी, कुमकुम, आरती और प्रसाद आदि के बारे में उनकी जिज्ञासा पूर्ण प्रश्न बड़ी खुशी और आत्मीयता से पूछे जाते हैं। जिसका उत्तर पाकर उसमें निहित सुंदर भावों को सुनकर हिंदी भाषा के अध्ययन के प्रति उनका रुझान बढ़ जाता है।

इसी का परिणाम है कि थाईलैंड में कई विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है जैसे सिलपाकॉर्न विश्वविद्यालय, महाचुलालोंगकोर्न राज विद्यालय बौद्ध भिक्षु विश्वविद्यालय, प्रिदीपानो मान्ग धमासास्त्र विश्वविद्यालय, चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय, कसासास्त्र विश्वविद्यालय और चियांगमाई विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि लेने के बाद वे स्नातकोत्तर और पीएचडी करने के लिए भारत जाते हैं। हर वर्ष भारतीय दूतावास की सहायता से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, नॉर्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय शिलांग ओर सेंट्रल इंस्टीट्यूट हिंदी आगरा आदि संस्थानो में छात्र अध्ययन के लिए जाते हैं।

थाई भारत कल्चरल लॉज ऐसा संस्थान है जो हिंदी को विश्वव्यापी बनाने की यात्रा में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर रहा है। 'हिंदी बने विश्व भाषा मूल मंत्र' का पालन करते हुए गत 12 वर्षों से मैं भी इस अभियान से जुड़ी हुई हूं। इसमें श्री राज माता जी का अभूतपूर्व योगदान है। उनकी पूर्ण निष्ठा से आज विद्यार्थी ना केवल हिंदी सीखते हैं बल्कि भाषा के कौशलो में दक्ष भी बनते हैं। यह संस्था हिंदी भाषा के माध्यम से भारत और थाईलैंड के सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने में सेतु का काम कर रही है। यहां हिंदी भाषा की कक्षा के साथ-साथ अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। उन समारोह के माध्यम से भारत की संस्कृति को मजबूत बनाने का प्रयास किया जाता है। कवि सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ और नाटक आदि समय-समय पर आयोजित होते हैं। हिंदी को घर-घर तक पहुंचाना ही मुख्य ध्येय हैं। इसमें थाई युवा वर्ग बढ़-चढ़कर भाग लेता है। जिससे हिंदी के प्रति प्रेम जागृत होता है। विदेशी धरा पर थाई लोगों को हिंदी

बोलते, पढ़ते देख मन बहुत प्रसन्न होता है।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, बैंकॉक में विभिन्न राष्ट्रीयता प्राप्त विद्यार्थी हिंदी भाषा सीख रहे हैं। हिंदी के प्रति सकारात्मक रवैया मेरे लिए सुखद अनुभव है । उन लोगों की जुबान से हिंदी सुन मैं मंत्रमुग्ध रह जाती हूं। विद्यार्थियों के साथ केवल हिंदी में बात करती हूं। हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता मधुरता व स्पष्टता के कारण हिंदी भाषा छात्रों के लिए सरल हो जाती है। कई भाषाई पृष्ठभूमियों के छात्रों को हिंदी सीखने में सर्वाधिक सहायक हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता है।जैसे उच्चारण और लेखन की एकरूपता। जैसा बोलते हैं वैसा लिखते हैं। स्वर और व्यंजनों के क्रमिक उच्चारण स्थान एक वर्ण के लिए एक ही ध्वनि और मात्राओं का तर्कसंगत प्रयोग।

भारत सरकार द्वारा हिंदी भाषा के अध्ययन के लिए भेजी गई पुस्तके सुगम और आकर्षक है। जो हिंदी भाषा को सरलता से सिखाने में महत्वपूर्ण है। चित्र के साथ शब्द का अर्थ लिखा है जो छात्रों की शब्द संपदा बढ़ाने में सहायक है। वे हिंदी भाषा बोलने, लिखने, समझने और सामान्य वार्तालाप में सक्षम हो जाते हैं। संस्थान समय-समय पर कई प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। जिसमें छात्र बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं । विद्यार्थियों को भाषा कौशल दिखाने के लिए कई अवसर मिलते हैं। यह केंद्र थाई -भारत मैत्री को मजबूत करने की अटूट कड़ी है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक पताका को विश्व पटल पर फहराने के लिए दृढ़ संकल्प है। छात्र भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित योग, नृत्य और वादन में रुचि रखते हैं। रंग बिरंगी होली, प्रकाश पर्व दीपावली को हमारे साथ प्रसन्नता से मनाते है।

हिंदी दिवस तथा विश्व हिंदी दिवस क्रमशः 14 सितंबर को 10 जनवरी को मनाते हैं। यह समारोह भारतीय दूतावास द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हिंदी के विभिन्न कार्यक्रम किए जाते हैं। विद्यार्थी इसमें बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। भारतीय दूतावास के द्वारा उनके उत्साहवर्धन के लिए प्रशंसा पत्र दिए जाते हैं।

थाईलैंड में विद्यालय स्तर पर कई विद्यालयों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है। उनमें मुख्यत सीबीएसई पाठ्यक्रम का विद्यालय ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल, पायोनीर इंटरनेशनल स्कूल, थाई सिक्ख इंटरनेशनल स्कूल आदि । यहां छात्र पूरे मनोयोग से हिंदी सीखते हैं।

थाईलैंड के लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति जिज्ञासा और आकर्षण अत्यधिक है । वर्तमान में डिजिटल क्रांति के कारण अपने देश में रहते हुए भी यहां के निवासी भारतीय संस्‍ ति के सुंदर व गरिमा पहलुओं को देखते हैं।जिससे भारत दर्शन की उनकी लालसा और प्रबल हो जाती है। हिंदी भाषा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने तथा पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही संस्कृति की संवाहिका भाषा का श्रेष्ठतम पक्ष तथा महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

मैं उन स्वपन दर्शियों में से एक हूं जो अक्सर सपने देखते हैं। उनके साकार होने तक उन में खोए रहते हैं। मेरा सपना था कि मैं राष्ट्र की सेवा करूं। यह सपना साकार हुआ थाईलैंड में आकर। मेरे लिए बड़े गौरव की बात है कि हिंदी भाषा का प्रसार थाईलैंड में हो रहा है। थाईलैंड और भारत में सांस्‍ तिक समानताएं हैं । जिस वजह से हिंदी भाषा को सीखने की ललक युवाओं में अधिक है । थाईलैंड में हिंदी समृद्ध है। युवाओं के लिए रोजगार का माध्यम है। पर्यटन के लिहाज से प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक थाईलैंड से भारत और भारत से थाईलैंड आते हैं। इस दौरान एक-दूसरे के संवाद बनाने और संस्कृति को समझने के लिए हिंदी अहम भूमिका निभाती है।

थाईलैंड में हिंदी अध्यापन करते हुए मैंने महसूस किया है कि विश्व स्तर पर विस्तृत होती हिंदी के सकारात्मक और सही विस्तार के लिए हम हिंदुस्तानियों की जिम्मेदारी है कि हम अपनी हिंदी का मान और सम्मान करें क्योंकि हिंदी केवल भाषा नहीं संस्कृति की वाहिका है।

हिंदी हमारी अस्मिता है
हिंदी हमारा मान।
हिंदी से ही होती है
हम सब की पहचान।

श्रीमती शिखा रस्तोगी
थाईलैंड

मुंह न मोड़ें

परिस्थिति षम हो या परिस्थिति विषम हो, कलम चलती है। कलम मुंह नहीं मोड़ती है। कलम अपना काम करती है। कलम अपना दायित्व निभाती है। कलम की अपनी पांख होती हैं। कलम की अपनी आँख भी होती है। पांख और आँख का मेल ही कलम का जीवन है। वही कलम का मन है। इसी मेल से लेखन को जीवन मिलता है। पाठक के लिए, लिखे काले अक्षर, फिल्म समान हैं। वह इसी कलम के सहारे लेखक के अनुभवों से जुड़ने के लिए पहुंच बनाता है। लेखन एक पुल का काम करता है।

लेखन चाहे सदियों पुराना हो। लेखन, चाहे हजारों हजारों कोस दूर बैठ कर, लिखा गया हो। यही लेखन दृश्य और पठन की कड़ी है। यही लेखन काल के विस्तार और दूरस्थ स्थान के बीच बना पुल है। लेखन, समय से परे, समझ की पकड़ है।

काल और परिस्थितियां, ये दो घटक जीवन को तराशने, जोड़ने, तोड़ने और मरोड़ने की प्रक्रिया का नाम हैं। यह प्रक्रिया सदा जारी रहती है। काल के घेरे और परिस्थिति की जड़ में बसती हैं चुनौतियां। इन चुनौतियों के भी अपने चेहरे हैं।
चुनौतियां केवल एक ही मांग करती हैं। पूर्ण सजगता की मांग करती हैं। साहित्यिक लेखन सदा से सजग जीवन की चाह को लेकर काल और परिस्थितियों को सृजनात्मकता में ढ़ालता रहा है।

विश्व भर में, 21वीं शताब्दी का स्वागत, फूलझड़ियों और पटाखों से हुआ था। यह सब इस आशा के साथ हुआ था कि इक्कीसवीं सदी विश्व में शांति की सदी होगी। इस सदी के आरंभ में, यह सोच बनी थी कि मानवता ने पिछले दो विश्व युद्धों से बहुत कुछ सीख लिया है। मानव मानव के प्रति समझदार हो गया है। मानव जीवन के प्रति सजग हो गया है। मानव ने मानव के प्रति, सजगता के साथ, आदर की राह पकड़ ली है। इक्कीसवीं शती के आगमन पर, एक नयी सदी के शुरुआत के समय, कुछ ऐसा ही प्रतीत हुआ था।

एक बरस भी नहीं बीता था कि 9/11 के ट्विन टावर के धराशाही होने के साथ, यह सब, शांति का सपना भी तहस नहस हो गया। पिछले इक्कीस बाईस वर्षों में एक भी वर्ष शांति का नहीं रहा है। विश्व में शांति का जिकरा, पिछली सदी में भी पहले विश्वयुद्घ और दूसरे विश्वयुद्ध में परमाणु बम की तबाही से लेकर आज तक दुनियां भर में होता रहा है। प्रत्येक देश का नेता, स्वतंत्र्ता दिवस पर या राष्ट्रीय महत्व के दिवस पर, सेना के दलबल और परमाणु जखीरों के साथ शांति की बात जरूर, गुरूर के साथ करता है। अपने निकटतम व्यवसायी को अपने देश के सैन्यबल को सशक्त करने के लिए हथियार उद्योग में, भारी पूंजी लगाने को जीभर कर, सिरजोड़ और सहयोग करता है।

सीमा की सुरक्षा के नाम पर, शांति के नाम पर, हथियार निर्माण के नाम पर, आलथक विकास के नाम पर, जनता को रोजगार की घूंटी दी जाती रही है। जो हथियार बने हैं या जो हथियार बनेंगे। वे कहीं न कहीं काम में लिए जायेंगे। हथियार लड़ने के लिए बने हैं। वे विध्वंस ही करेंगे।

हथियार निर्माण के बाद बाजार तलाश की दौड़ शुरू हो जाती है। विश्व में हथियार बेचने के लिए मेले लगते हैं। एक ओर ऐसे हथियार बिक्री के मेले लगते हैं और दूसरी ओर सभी धर्मों के गुरू विश्व शांति सम्मेलन कर रहे होते हैं। इस शांति सम्मेलन का आयोजक हथियार निर्माण कर्ता हो सकता है। शांति सम्मेलन का आयोजन वे व्यवसायी लोग भी करते हैं जिन्होंने अकूत पूंजी हथियारों के उत्पादन में लगाई होती है। इस शांति सम्मेलन के खर्च का उन्हें, उनकी आमदनी की कर कटौती में, पूरा आर्थिक लाभ मिलता है।

यह बड़ी विडम्बना है। इस दुमुंहे संसार में कभी शांति हो सकेगी ?इस बात की कल्पना करना मुझे विचित्र बात लगती है। आज वैश्विक नेतृत्व अपनी ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति की कब्र खोदने में लगा हुआ है।

मैं कुछ और कहूं उससे पहले एक सुनी हुई लघुकथा आपसे कहता हूँ।

एक तानाशाह था। उसका बहुत बड़ा साम्राज्य था। उसका साम्राज्य चारों दिशाओं में फैला हुआ था। एक संत उस तानाशाह का मित्र भी था। यह संत जंगल में, एक बड़े पेड़ के नीचे एक कुटिया बनाकर, रहता था। तानाशाह और संत दोनों की दोस्ती बहुत गहरी थी। इस दोस्ती की मिसाल का आमजन को पता था। तानाशाह ने जंगल के पास ही एक बड़ा आलीशान महल बनवाया।

एक दिन इन दोनों मित्रों की भेंट हुई तो तानाशाह ने कहा ‘‘मित्र! मैंने एक नया महल बनवाया है।”

फिर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए, संत मित्र के सामने एक

प्रस्ताव रखते हुए बोला ''आप भी एक कमरा लेकर उसमें रहने लगो।''

संत ने विनम्र भाव से कहा ''राजन क्षमा करें।''

''आप मुझे क्षमा करें।''

''मैं अपनी कुटिया में बहुत खुश हूं।''

संत के बोल यहीं पर न रुके। उसने तानाशाह से विनम्र भाव भरे शब्दों में कहा ''मुझे इससे अधिक की जरूरत नहीं है। मैं महल में ना रह पाऊंगा। मैं जीते जी मर जाऊंगा। मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा।'' इतना कहकर उसने अपनी टूटती सांस को सम्हाला।

राजा ने मित्र की बात सुन अधिक दबाव देना उचित न समझा। उसने कहा ''कम से कम मेरे महल को देखने के लिए ही जाओ।''

संत ने कहा ''ठीक है।''

ऐसा कहकर संत ने हामी भर दी।

एक दिन ऐसा भी आया जब संत राजा के साथ नये महल को देखने गया। महल के चारों ओर सैनिकों का जाल बिछा था। इस स्थान पर कोई परिंदा भी अपनी मर्जी से अपने पंख नहीं फड़फड़ा सकता था। महल को सजाने संवारने में कोई कसर न छोड़ी गई थी। शौचालय की टोंटी भी सोने की बनी थी। सब जगह हीरे मोतियों की चमक थी। सब जनता का था। जनता का सब माल महल की रौनक में लगा था।

नये महल में, संत मित्र के आने से तानाशाह बहुत खुश था। उसने अपने मित्र को महल का कौना कौना दिखाया। उसे खूब घुमा घुमाकर दिखाया। तानाशाह के अपने ही शब्दों में ''दुनिया में ऐसा महल अब तक नहीं बना है। किसी के पास नहीं है। सब कुछ संगमरमर का है। मैंने इस महल को बढ़िया और सुंदर बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है।''

राजा ने बड़े शौर्य और दृढ़ता का भाव चेहरे पर लाकर कहा ''यह बहुत सुरक्षित जगह है।''

सुरक्षा का ख्याल रखते हुए मैंने इसमें कोई दरवाजे खिड़कियां नहीं रखी हैं। महल में प्रवेश के लिए केवल एक ही मुख्य दरवाजा है।

यह सुनकर संत अचानक सकपकाया सा चलते चलते एकदम ठहर गया। उसका शरीर एकदम स्थिर हो गया। चलते हुए उसके दोनों कदमों के बीच की दूरी, दूरी ही बनी रही।

उससे कहते रहा न गया। उसने कहा ''राजा मुझे तो यहां सांस लेने में कठिनाई आ रही है।''

विस्मित स्वर में राजा ने कहा ''ऐसा क्यों ?''

''यह तो बहुत सुरक्षित जगह है।''

बहुत सम्भल और सहज हो संत होले होले बोला, ''हां, सुरक्षित तो है लेकिन यदि तुम इस मुख्य दरवाजे को भी बंद कर दोगे तो यह तुम्हारा मकबरा भी बन जाएगा।''

आज हम शस्त्रों की होड़ में अपने ही बनाये बमों पर खड़े हैं। अपने ही मकबरे की तैयारी की अनदेखी कर रहे हैं।

अमेरिका ने रासायनिक हथियारों के नाम पर, ईराक पर युद्ध थोप दिया था। वहां की सारी सामाजिक व्यवस्था को मटियामेट कर, आइसिस के लिए सब हथियारों का जखीरा छोड़ भागा।

बाद में तालिबान पर युद्ध थोप कर, अपने दांत खट्टे करवा कर, अफगानिस्तान से दुम दबाकर भाग निकला। सीरिया और आइसिस की बाल सिसकी भर आहें, आज भी बंदी महिलाओं के शिविर में सुनाई पड़ती हैं।

युद्ध से पारिस्थितिकीय और पर्यावरणीय नुकसान भी बहुत होता है। जिस स्थान पर बम गिरकर फटता है, उस स्थान की मिट्टी की जैविक मौत में, करोड़ों अरबों जीवाश्म बलि हो जाते हैं। ये वे जीवाश्म हैं जो धरती पर विभिन्न रूपों में जीवन का पोषण करते हैं। जो धरती पर मानव के अस्तित्व का कारक हैं। जिनकी उपस्थिति मनुष्य से लाखों अरबों बरस पहले की है।

द्वितीय विश्व युद्ध में नागासाकी और हिरोशिमा पर बरसाये गये बमों वाले स्थल पर आज भी घास नहीं उगती है। यह सब जानते हुए भी पारिस्थितिकीय नुकसान की भरपाई की बात किसी भी वैश्विक नेतृत्व के मुंह से नहीं उगलते बनती। उगलते इसलिए भी नहीं बनती क्योंकि पारिस्थितिकी की किसे परवाह है। सब आलथक विकास की आड़ में चुप हैं।

पुतिन ने यूक्रेन पर 'विशेष अभियान' के बहाने युद्ध थोंपकर, शहरों को मटियामेट कर दिया। इस घिनौनी हरकत से उपजी कड़वाहट भरी खटास अब उससे न निगलते बन रही है न उगलते।

इस सबसे यह तो स्पष्ट है कि आग लगाना आसान है और उसे बुझाना बहुत टेढ़ी और करेले की कड़ी खीर है।

साहित्य और कला सब शांति काल में ही सम्भव है। इस कारण जो साहित्यकार शोषण, संत्रास, घरेलू पीड़ा और युद्ध ग्रस्त क्षेत्र की चीख पुकार को सुन रहे हैं। उनके कन्धों पर, युद्ध स्थिति और काल में हस्तक्षेप कर, लेखन का बहुत बड़ा दायित्व है।

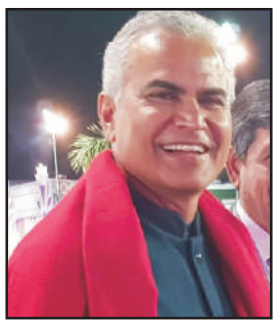

रामा तक्षक
नीदरलैंड्स

पहनी

रचना श्रीवास्तव
केलिफोर्निया

मोची से सिलवाई चप्पल के दे सके
तेरे पैरों को जूते का आराम
फटी कमीज़ तो चकती लगा ली
ताकि शर्ट तुम्हारी सिल सके
पंचर जुड़ी साईकिल पर चलता रहा
पंचर साईकिल के जुड़वाता रहा
टूटी गद्दी पर बांध कपडा काम चलता रहा
ताकि खरीद सके
वो पुरानी मोटर साईकिल तुम्हारे लिए
तागी थी जिस धागे से रजाई
उनकी उम्र पूरी हुई
रुई भी खिसक के किनारे हुयी
ठंडी रजाई में सिकुड़ता रहा
के गर्मी तुझ तक पहुँचती रहे
जब भी जला चूल्हा
तेरी ही ख्वाहिशें पकी
उसने खाया तो बस जीने के लिए
जीवन भर की जमा पूंजी
और कमाई नेक नियमति अर्पित कर
तुझ को समाज में एक जगह दिलाई
पंख लगे और तू उड़ने लगा
ऊँचा उठा तो पर ये न देखा
के तेरे पैर उन के कन्धों पर है
उन के चाल की सीवन उधड गई
तेरी रफ़्तार बढती रही
सहारे को हाथ बढाया
तुमने लाठी पकड़ा दी
उनकी धुंधली आँखों से
ओझल हो गया वो घोली खटिया पर लेटे
धागे से बंधी ऐनक सँभालते
तेरे लौटने की राह देखते रहे
अंतिम यात्रा तक आँखों में अटका था
बस एक ही सपना
साबुत चप्पल , नई कमीज़ और एक साईकिल ,

बदनियत

बर्षात का मौसम था हम दोनो बहुत दूर घुमने चले गये सुंदर नगरी गोवा जो भारतका सब से छोटा राज्य है ।

पूरी दुनिया में गोवा अपने खूबसुरत सामुंद्रीक तटों और मशहूर स्थापत्य के लिये लोक प्रिय है । मनमोहक पहाडों को साजाती सवारती प्राकृतिक छटा समुंदर किनारे बाह फैलाए हरवक्त पर्यटको को आकलषत करती रहती हैं। हम भी उनसे कुछ देर प्रीत लगाने चले आए । शहर के कुछ ही दूरी में था एक बिच जिसके सामने खडी स्टार बीच रिसोर्ट, जहाँ बैठकर हम विता रहे थें कुछ यादगार लम्हें ।

‘चलो माही कुछ देर बाहर टहलें’

‘सोने दो न वीर नीद आ रही है’,

‘कितना सोती हो तुम भी न, घुमने आई हो या सोने ?

चलो जल्दी उठो नही तो मै अकले ही चला जाता हुँ’,

अहो! रुको मैं भी चलती हूं। तयार होकर हम लोग नीचे रिसेप्शन मे उतरे। वहाँ कुछ गरमा गर्मी चल रही थी। खाने की टेबल पर बरतन इधर उधर बिखरे पडे थे। एक लडके से पुछा तो पता चला की खाने में कुछ पडने की वजह से खलबलि मचि हुई है १०, १२ लोग हैं सब चिल्ला रहे हैं एसा भी कोई करता है क्या?दुसरा जोर जोर से माहोल को और गरम करते हुए कह रहा है ‘सावन का महिना है शिव जी की पूजा चलरही है, इक माह तक हम लोग मास को हाथ भी नही लगाते। छि छि छि सब अपसगुन करदिया सालों ने कौन है यहाँ का मेनेजर?जल्दी बताओ, नही तो’....

यैसे ही जो मुह में आया वही, अनाबसनाब बक रहे थे सब । रिसोर्ट वाले डरावनी सी मुँह लिए सॉरी सॉरी बोल रहे थे ।

मैने कहा चलो वीर यहाँ से, इस झमेले ने सारा मुड खराब कर दिया । हम लोग निकल ही रहे थे कि वे लोग भी चिल्लाते हुए वहाँ से निकले। हम दोनो गेट पर खडे उन लोगों को देखते रहगए । वे लोग जब बाहर निकल रहे थे तो जाते जाते एक ने कहा की अरे भाइ क्या तीर मारा निशाने पर लगा दुसरा हसते हुए कहता है - कल रात पकडी हुइ कक्रोज काम आइ नही तो कैसे भरते फोकट में पेट?

उषा तिवारी

अफवाह

रश्मि सिन्हा

अपने वैनिटी वैन में आराम फरमाते, अरुण को बुलाने सेट से कोई आया था, सर, शॉट रेडी है चलिए। कंचन जी आ गई क्या ?अरुण ने उठते-उठते पूछा

चलो आता हूँ,

जी कंचन जी सेट पर मौजूद हैं।

अरुण उठा, वॉशरूम से फ्रेश होकर निकला तो उसके मेकअप मैन ने चेहरे की री टचिंग की, अब वो ताजगी महसूस कर रहा था और उसने सेट की ओर कदम बढ़ा दिए।

अरुण कुमार, फिल्मी जगत का एक जगमगाता सितारा, जनता में बेहद लोकप्रिय था।

या यूं कहा जाए कि दीवानगी की हद तक लोकप्रिय--, सोच, समझ कर फिल्में साइन करता, बड़े और नमी निर्देशकों की।

ये फ़िल्म भी नामी निर्देशक रोहित कुमार की थी। सफलता निश्चित थी पर करोड़ों दांव पर लगा देने के बाद भी जनता की पसंद की कोई गारंटी नही, फ्लॉप होने की आशंका हमेशा दिमाग मे तैरती रहती।

सेट पर पहुंचते ही, लाइट, कैमरा, एक्शन आदि शुरू हुए, एकाध कट, कट के बाद शॉट ओ के हुआ और शूटिंग सम्पन्न हुई। ये फ़िल्म के आखिरी द्रश्य थे। हांलाकि ये फ़िल्म आठ महीने के रिकॉर्ड समय मे तैयार हुई थी, पर हर कलाकार थका हुआ था, प्रोड्यूसर और डायरेक्टर का भी यही हाल था।

सब छुट्टी के मूड में थे। खुशी का माहौल था।

अरुण सपरिवार स्विट्जरलैंड जाकर छुट्टी बिताने वाले थे। अन्य के भी प्रोग्राम तय थे। इस विश्राम के समय का सबको सदुपयोग करना ही था।

अब सिर्फ एडिटिंग, साउंड रेकॉर्डिंग के ही काम शेष थे जो एक से डेढ़ महीने में पूरे हो जाने वाले थे और उसी आधार पर मूवी के रिलीज़ की तारीख भी तय कर दी गई थी।

प्रचार, प्रसार, होर्डिंग और बैनर के अतिरिक्त ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर भी भरपूर विज्ञापन दिए जा रहे थे।

शो के प्रीमियर पर एक हॉल में अरुण कुमार और अभिनेत्री कंचन भी दर्शकों से रूबरू होने वाले थे।

कहने का तातपर्य ये कि दर्शकों को भी इस फ़िल्म का जोर शोर से इंतजार था।

महीना बीत चला था कि लोगों ने अखबारों में, टीवी समाचारों में, ऑनलाइन सुना,पढ़ा, 'अरुण कुमार' अपने स्विट्जरलैंड के लक्ज़री सुइट में मृत पाए गए।

शोर मच गया, लोग मना रहे थे काश ये खबर झूठी हो। महिलाओं, लड़कियों का रो, रोकर बुरा हाल था।

ये क्या हुआ? प्रोड्यूसर ,डायरेक्टर अलग परेशान हो इंटरव्यू देते घूम रहे थे। आगे की जानकारियां एकत्र की जा रही थी।

इसी गहमागहमी के बीच देश केवलगभग सभी पी.वी. आर में फ़िल्म रिलीज़ की गई। जनता टूट पड़ी थी अपने पसंदीदा कलाकार की अंतिम फ़िल्म देखने के लिए।

जिस फ़िल्म के लिए अनुमान लगाया जा रहा था कि सौ कारोबार द का बिज़नेस करेगी उसका मुनाफा 200 करोड़ का आंकड़ा लांघ चुका था।

ऐसे में ही अवतरित हुए थे अरुण कुमार...

अपनी मौत की झूठी अफवाहों का खंडन करने और दर्शकों से अपने प्रति प्रेम का आभार प्रकट करने।

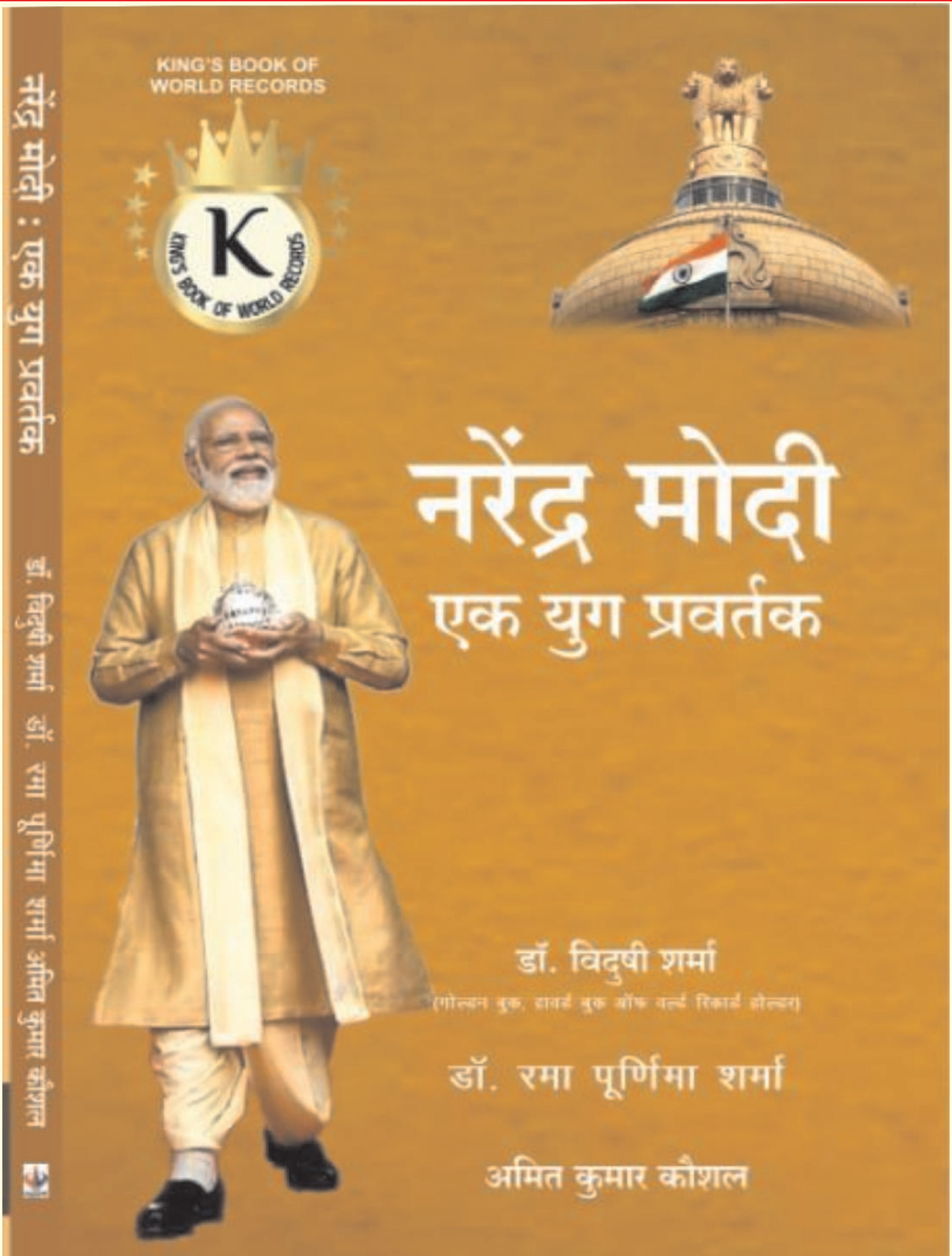
नरेंद्र मोदी : एक युग प्रवर्तक
डॉ. विदुषी शर्मा डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा अमित कुमार कौशल
KING'S BOOK OF WORLD RECORDS
K
KING'S BOOK OF WORLD RECORDS
नरेंद्र मोदी
एक युग प्रवर्तक
डॉ. विदुषी शर्मा
डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा
अमित कुमार कौशल

साक्षी कंवर राठौड़ कक्षा 12
स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल
निम्बाहेड़ा जिला चित्तौड़गढ़ (राज

प्रिशा शर्मा, आयु 8 वर्ष

धानी गुप्ता
आयु - 14 वर्ष. सिंगापुर निवासी
द्वितीय पुरस्कार 250 रूपये और सम्मान पत्र

अनायशा रुस्तगी, आयु-8 वर्ष , कक्षा 3
विद्यालय-कुलांची हंसराज मॉडल स्कूल,
अशोक विहार, दिल्ली

कु. अथर्वा कवीश्वर, आयु - 16 वर्ष,
कक्षा - 10 वीं, कार्मल कान्वेण्ट स्कूल,
नीमच, मध्यप्रदेश

माही सिंह, कक्षा 10
आयु 14 वर्ष

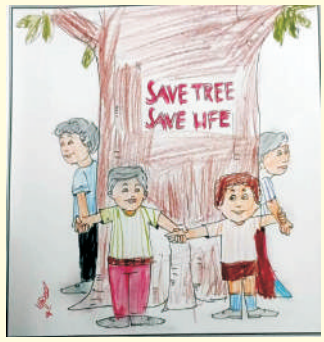

आशिया, आयु 8 वर्ष
होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल,
टैगोर गार्डन, दिल्ली

अरमान कौशिक
कक्षा-11, आयु-16 वर्ष
गोडविन पब्लिक स्कूल
मेरठ

आवरण पृष्ठ- कुमारी मीमांसा सिंह, आयु 16 वर्ष,

नाम - मीमांसा सिंह
जन्म दिनांक - 17/10/2007
पिता - डॉ. खेमराज सिंह
अभिरुचि - कविता लेखन (अंग्रेजी),
रेखाचित्र और ड्राइंग, नृत्य और कुकिंग
शिक्षा - 10वीं बोर्ड एंजाम दिया है (सीबीएसई)